बुलबुल-सीरीज—संख्या १९

गोरिल्ला

—— ०:——

लेखक
श्री सत्यभक्त

फरवरी, १९४६

सस्करण] [एक रुपया

प्रकाशक—
श्री सत्यभक्त,
सतयुग आश्रम,
बहादुरगंज,
इलाहाबाद
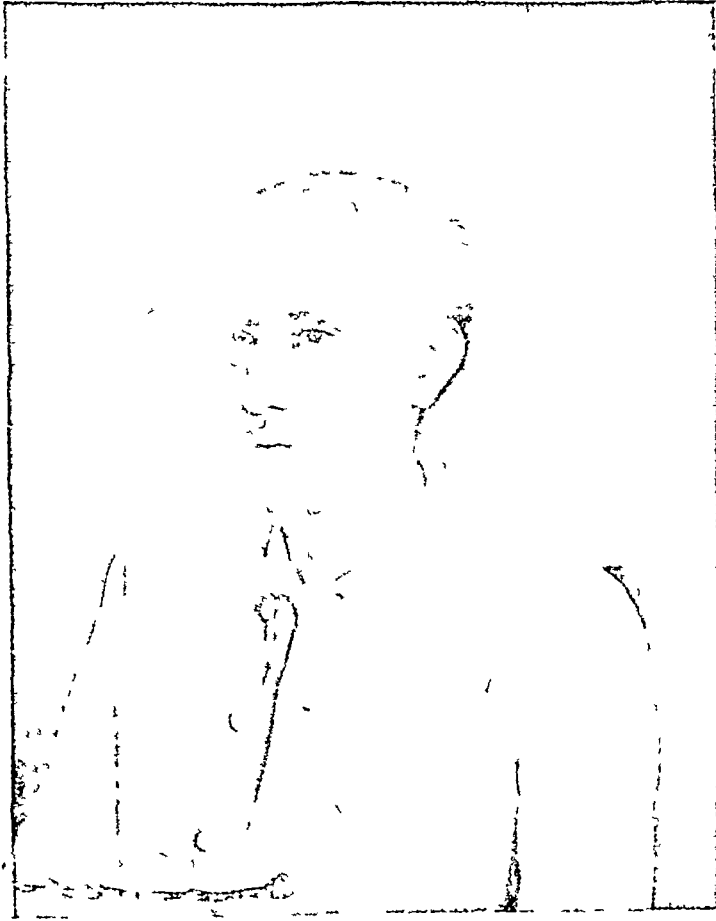
लेखक

दो शब्द

गोरिल्ला-युद्ध की प्रणाली कोई नई चीज नही है। हमारे देश महाराजा महाराज और उनके मराठे सैनिक इस कला मे दक्ष थे और उन्होंने इसी के द्वारा मुगल-सम्राट् औरगजेब के घमण्ड को चूर-चूर किया था। इधर जब से रायफल, तोप, बम, लडाकू वायुयान आदि युद्ध के आधुनिक साधन ढूँढ लिये गये थे, गोरिल्ला प्रणाली का नाम कम सुनने मे आता था। पर इस महायुद्ध में रूस, जापान, ब्रिटिश जैसी बड़ी शक्तियों ने भी गोरिल्ला प्रणाली को अपनाया और उसके द्वारा बड़ी सफलता प्राप्त की। इन्डोनीशिया, जावा आदि में राष्ट्रीय दल वाले इस समय भी इसीका प्रयोग कर रहे हैं। निस्सन्देह जब कि दुश्मन की शक्ति बहुत अधिक हो अथवा उसके हथियार बहुत ऊँचे दर्जे के हों तो उसके विरोधी के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रणाली गुरिल्ला-युद्ध ही है। जगली और पहाड़ी प्रदेशों के लिए तो इससे बढ कर युद्ध-प्रणाली दूसरा है ही नही।

इस उपन्यास मे आयरलैण्ड के स्वाधीनता-प्रेमी वीरो का जो गुरिल्ला-सग्राम चित्रित किया गया है वह हाल ही मे हुआ था और उन लोगों ने आधुनिक हथियारो से सजी विदेशी सरकार की सेनाओं को नाकों चने चबवा कर सफलता प्राप्त की थी। इस संग्राम की कथा जैसी रोचक है वैसी ही रोमाचकारी भी है। इस उपन्यास मे जो घटनाएँ दी गई हैं वे कल्पित नहीं हैं वरन् वैसी और उससे भी बढ कर वीर हृदयो को उल्लसित करने वाली घटनाएँ उस काल में समस्त आयरलैण्ड मे घटी थी। इस उपन्यास मे उन्ही मे से भिन्न-भिन्न स्थानों की कई घटनाओं को एक सूत्र मे पिरो कर पाठकों को भेंट किया गया है। आशा है कि मनोरजन के साथ ही यह उपन्यास पाठको के हृदयों मे देशभक्ति तथा वीरता के भावों का उदय करेगा। इसी उद्देश्य से हमने इसे पुनर्बार नवीन और सशोधित रूप मे प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

१०-२-४६]

—सत्यभक्त

सूची

गारल्ला

पहिली गोली

जिस समय योरोप में प्रथम महासमर की आग भड़की थी उस समय उसके प्रभाव से अनेक देशों में विद्रोह की ज्वालाएँ उठने लगी थीं। आयरलैंड के देशभक्तों ने भी उस समय अपनी मातृभूमि को पराधीनता से छुड़ाने के लिये विदेशी सरकार के विरुद्ध बग़ावत का झंडा खड़ा किया था।

हर रोज़, कहीं न कहीं आयरिश प्रजातंत्र सेना के गोरिल्ला सैनिक सरकारी फौज के किसी छोटे दल पर हल्ला बोल देते, और जब तक कोई बड़ी सेना उनका मुक़ाबला करने आवे, तब तक मारकाट करके और सिपाहियों के हथियार छीन कर, पहाड़ों और जङ्गलों में भाग जाते। रास्ते में रेलगाड़ी को खड़ा करके डाक को लूट लेना, रेल की पटरी और तारों को तोड़ देना, सरकारी अदालतों को जला देना, पुलिस की चौकियों को उड़ा देना आदि उनके लिये साधारण बातें थी।

× × × ×

ऐसे ही समय में एक दिन दोपहर के समय मेलार्न नामक गाँव के स्कूल का मास्टर जेम्स केसी अपने मकान में बैठा हुआ भोजन कर रहा था। भोजन करके ज्योंही उसने अपना सिगरेट का बक्स खोला कि एकाएक थोड़ी दूर पर एक बन्दूक चलने की आवाज़ आई। कुछ ही क्षण के बाद बीसियों बन्दूकों की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी।

केसी ने घबड़ा कर कहा—"हे भगवान्, यह कौन सी नई बला आई!"

वह बन्दूकों के चलने का कारण सोच ही रहा था और चाहता था कि बाहर निकल कर पता लगावे, कि इतने में किसी ने बड़े जोर से धक्का मार कर उसके कमरे का दरवाजा खोला। उसका एक पुराना शागिर्द टामी मुलन हॉफता हुआ भीतर घुस आया। उसके हाथ में एक छर्रेदार बन्दूक थी।

टामी ने घबड़ाई हुई आवाज से कहा—"इस बन्दूक को कहीं छुपा दो।"

"क्या! क्या!" केसी ने भयभीत होकर लड़खड़ाती हुई जबान से पूछा। पर टामी ने उसकी बात का कुछ जवाब न दिया और वह बन्दूक को उसी कमरे मे फेक, बड़े जोर से बाहर की तरफ भाग गया।

केसी गुस्सा होकर बड़बड़ाने लगा :—"बड़ा बदमाश लडका है। मुझे फॅसाने के लिये जबर्दस्ती मेरे घर मे बन्दूक फेक गया।"

वह भौंचक्का होकर बन्दूक की तरफ देखने लगा। इतने में उस घर की मालिकिन मिसेस ब्रैनिन उसके पास आकर चिल्ला कर कहने लगी—"तुम पागल की तरह खड़े क्यों हो? सिपाही लोग आ रहे हैं। अगर वे बन्दूक को इस घर मे देख लेगे तो हम सबको जान से मार डालेगे।"

केसी के चेहरे से निराशा का भाव प्रकट होने लगा। उसने घबडा कर चारों तरफ देखा कि बन्दूक कहॉ छिपाई जाय। वह खिड़की की तरफ गया और देखा कि सिपाही उसके दरवाजे पर आ गये हैं। रक्षा का कोई उपाय न देखकर उसने बन्दूक को मकान के पीछे वाले बगीचे मे फेक दिया। सौभाग्य से वह पेडों के झुरमुट मे गिरी और देखने वालों की निगाहों से बिलकुल छुप गई।

बन्दूक को अच्छी तरह छुपा हुआ देखकर केसी का डर कुछ कम हुआ। जल्दी डिब्बे मे से एक सिगरेट निकाल कर जलाई और आरामकुर्सी लेट कर पीने लगा। इतने मे सिपाही उसके कमरे के भीतर पहुँच गये और चिल्ला कर बोले—"हाथ ऊपर करो।" आश्चर्य और डर का भाव

दिखलाते हुये केसी ने हाथ ऊपर उठा दिये। अब उससे सवाल पर सवाल किये जाने लगे। कुछ सिपाही उसे धमकाने और गालियाँ देने लगे। पर वह शाति के साथ उनके तमाम सवालो के जवाब में 'नहीं' कहता गया। 'मैने किसी को नही मारा है, न किसी मारने वाले को छुपाया है।' 'मैंने किसी को बन्दूक लेकर अपने घर में घुसते नही देखा।' 'मुझे खेद है कि आप मेरी बात पर विश्वास नही करते, पर मैं सत्य कहता हूँ कि मैंने किसी को बन्दूक लिये नही देखा।' 'मेरे घर में कोई बन्दूक नही है। आप बडी खुशी से मेरे मकान की तलाशी ले सकते हैं, मुझे इसमें कोई एतराज नही।' इस तरह के जवाब देने के सिवा वह किसी तरह सिपाहियो की पकड़ मे न आया।

इस बीच में दूसरे सिपाही घर की तमाम चीजों को इधर-उधर फेंक कर खूनी को तलाश कर रहे थे। साथ में वे केसी को बुरी-बुरी गालियाँ देते जाते थे। इतने में उनका कप्तान भीतर आया। उसे देखकर सिपाहियों का बकना कुछ कम हुआ। कप्तान के मुँह से खून निकल रहा था और एक रूमाल घाव के ऊपर बँधा था। उसने भीतर आते ही पूछा—"क्यों, कुछ मिला?"

एक हवलदार ने जवाब दिया—"नही कप्तान साहब, अभी कुछ नही मिला।" यह कहकर वह गुस्से से केसी की तरफ देखने लगा।

कप्तान ने कहा—"सब जगह अच्छी तरह तलाश करो। खास कर पिछवाडे की तरफ गौर के साथ देखना।"

अब कप्तान केसी पर सवालों की बौछार करने लगा। यद्यपि उसे केसी की बातों पर विश्वास नही हुआ तो भी वह ऊपर से भले आदमी की तरह शाति-पूर्वक उसकी बाते सुनता रहा। कुछ देर बाद उसने खुद ही असली बात बतला दी।

कप्तान ने अपने मुँह को दिखला कर कहा—"देखो, उस बदमाश, खूनी लडके ने किस जगह मुझे घायल किया है। मै सबसे आगे की मोटरगाड़ी मे

ड्राइवर के पास बैठा था। हम लोग एक जगह जरा रुके थे कि एक गली में से एक लड़का भागता हुआ आया और एकदम मेरे ऊपर बन्दूक चलाई। भगवान् ने मेरी रक्षा की और एक ही छर्रा मेरे मुँह में लगा। पर बेचारे ड्राइवर के शरीर में जगह-जगह छर्रे घुस गये और वह फौरन मर गया। हमारे सिपाहियों में इस अचानक हमले के कारण जरा हलचल मच गई और इस बीच में वह लड़का इस तरफ भाग आया। पर चाहे जो हो हम ज़रूर उसका पता लगा लेंगे और जब एक बार वह पकड लिया गया तो मैं उसकी बोटी-बोटी काट डालूंगा। यह मामला गाँव की भलाई की निगाह से बड़ा संगीन है। अब तक इस गाँव की किसी तरह की बदनामी नहीं हुई है, पर अगर इस मौके पर यहाँ के रहने वाले उस खूनी लड़के के पकड़ने में मदद न करेंगे तो तमाम गाँव की कमबख्ती आई समझो।"

केसी ने कप्तान की बातें बड़ी सहानुभूति का भाव प्रकट करते हुए सुनीं। कप्तान ने उसे लड़के की हुलिया खूब अच्छी तरह समझाया, पर वह उसे किसी तरह न पहिचान सका! उसने कहा—"इस हुलिये का कोई लड़का इस गाँव मे नहीं रहता। कम से कम मैंने तो उसे कभी नही देखा। वह किसी दूसरी जगह का रहने वाला होगा। चाहे जो हो, उसका यह काम बड़ा खराब है।"

स्कूल मास्टर की बाते कप्तान को बड़ी बुरी लगीं। पर जब घंटा भर तलाश करने पर भी कुछ न मिला तब वह अपने सिपाहियों के साथ चला गया। चलते समय उसने केसी को खूब धमकाया। इसके बाद उन्होंने गाँव के दूसरे कई घरों की तलाशी ली और पाँच-छै नौजवान लड़कों को पकड़ कर ले गये। पर असली मारने वाला टामी मुलन उनके हाथ न आया। वह उस समय पास की पहाड़ी मे छुपा बैठा था।

× × × ×

जब सरकारी सिपाही गाँव से चले गये, तब जेम्स केसी अपने घर में बैठा हुआ टामी मुलन के विषय में विचार करने लगा। अब उसको उस लड़के

पर ज़रा भी गुस्सा न था और उसकी बहादुरी देखकर उसके दिल में आदर का भाव पैदा हो रहा था। इसलिये जब उस मकान की मालिकिन मिसेस बैनिन इस तरह की आफत बुलाने के लिये टामी मुलन को कोसने काटने लगी तो केसी ने चिल्ला कर कहा—"उस लड़के के लिये कोई शब्द मुह से मत निकालो। यह काम उसने अपने देश की भलाई के लिये किया है।"

अब धीरे-धीरे केसी को पुरानी बाते याद आने लगीं, उसका बाबा विदेशी सरकार का कट्टर दुश्मन था, और आयरलैंड के स्वाधीनता के लिये लड़कर उसने अपने प्राण दिये थे। केसी को भी आयरलैंड की स्वाधीनता बहुत प्यारी लगती थी और विदेशियों के अत्याचार देख कर उस का खून उबलता था। सन् १९१६ मे जब आयरलैंड के देशभक्तों ने ग़दर का झंडा उठाया तब केसी ने भी अपना नाम राष्ट्रीय वालंटियरों में लिखाया था। उस समय उसे कवायद-परेड सिखाई गई थी और मोटर गाड़ी चलाना, बम फेकना, बन्दूक चलाना, आदि बातों का भी कुछ अभ्यास कराया गया था। पर जब विदेशी सरकार ने आयरलैण्ड को होमरूल देने का वायदा किया और गदर दब गया तो वह वालटियर-सेना धीरे-धीरे बिखर गई। अब जब कि आयरलैंड वालो ने दूसरी बार शासन के विरुद्ध गदर आरम्भ किया तो केसी का खयाल भी उस तरफ गया। पर अभी तक विद्रोहियों का जोर राजधानी और दक्षिणी आयरलैंड के ज़िलों में ही था। मेलार्न गाँव के निवासी गदर मे शामिल नही थे और उन की राय में यह कार्य व्यर्थ की खून खराबी थी। पर आज टामी मुलन की एक गोली ने गाँव की इस उदासीनता को भग कर दिया और मेलार्न का नाम बागियों के दल मे लिखा दिया। केसी ने देखा कि गाँव के सब लोग टामी मुलन के बंदूक चलाने की बात जानते हैं, पर किसी ने सिपाहियों के सामने उस का नाम नही लिया। इन सब बातों से उसका ध्यान गदर की तरफ

बहुत आकर्षित हुआ और वह अपने पुराने शागिंद मुलन के इस काम को श्रद्धा की निगाह से देखने लगा।

जब शाम हो गई और गाँव के सब लोग अपने घरों को चले गये तब केसी अकेले में बैठकर सोचने लगा कि उस बन्दूक का क्या इन्तजाम करना चाहिये। उसे यह बात किसी तरह पसद नहीं आई कि बन्दूक नष्ट कर दी जाय या तालाब में फेंक दी जाय। यदि वह रात के समय उसे जमीन में गाडने की कोशिश करता तो इस बात का डर था कि कोई पडोसी देख न ले। अन्त में उसने निश्चय किया कि सवेरे तक बन्दूक उन्ही पेड़ों के बीच में पड़ी रहने दी जाय । ठीक मालूम हो वैसा किया जाय।

त के समय केसी की नींद भयकर कोलाहल के कारण भंग हो गई। अपनी पतलून पहिन कर खिड़की के पास आया। वहाँ उसने जो उससे उसके होश-हवास गायब हो गये। उसने देखा कि उसके घर ारी सिपाहियों ने घेर लिया है और वे हाथों मे बिजली के लेम्प लेकर तरफ ढूँढ रहे हैं। कुछ लोग इधर-उधर गोलियाँ चला रहे थे और कुछ के दरवाजे को तोड़ रहे थे। केसी समझ गया कि वे सरकार की खूनी सेना 'ब्लैक एण्ड टैंस' (कृष्ण घातक दल) के आदमी हैं, जिनका काम सर्व-साधारण पर बिना कारण अत्याचार करके विद्रोहियों को डराना है। उसे विश्वास हो गया कि इस समय ये लोग आज की दुर्घटना का बदला लेने आये हैं और मुझे जरूर मार डालेगे। भय के कारण उसकी सोचने-विचारने की ताकत चली गई और अपने बचने का कोई उपाय न कर वह पत्थर की मूर्ति की तरह खिड़की के पास ही खड़ा रहा। जब उसने देखा कि सिपाहियों ने पेड़ के झुरमुट में से बन्दूक को निकाल लिया और उसे लेकर चिल्लाते हुये ऊपर चढ़े आ रहे हैं, तब भी वह उस जगह से नही हिला। सिपाहियो ने उसे सैकड़ो गालियाँ दीं और लड़के का पता पूछा। पर उसकी समझ में एक भी बात अच्छी तरह न आई। सिपाहियों ने उसे लातों और घूंसों से मारते-मारते

अधमरा कर दिया, पर उसके मुह से एक आवाज भी न निकली। अन्त मे एक राक्षस की सी शकल वाले शख्स ने उसकी तरफ पिस्तौल तान कर कहा, 'जवाब दे।' पर तब भी वह गूंगे की तरह देखता रहा। सिपाही ने पिस्तौल चलाई और केसी बेहोश हो कर गिर गया।

× × × ×

केसी को नहीं मालूम कि वह कितनी देर बेहोश रहा और उसकी बेहोशी के बाद क्या हुआ। पर जब वह होश में आया तो उसने देखा कि वह मोटर-लारी के एक कोने मे पड़ा है। उसके तमाम शरीर में बड़ा दर्द हो रहा था और सिर से खून निकल रहा था। पर उसका दिमाग इस समय बड़ा साफ था। उसने देखा कि उसके घर में आग लगा दी गई है और सब चीजे जल रही हैं। सिपाही अब भी बदूके चलाते हुए इधर-उधर घूम रहे थे। एक सिपाही ने दूर से चिल्ला कर कहा—"वह मरा नही है। मेरी गोली उसके सर को छू कर निकली है। रास्ते में हम उससे लड़के का पता पूछने की कोशिश करेंगे और अगर तब भी न बतलायेगा तो फिर उसे ठिकाने लगा देंगे।"

केसी समझ गया कि ये बाते उसी के लिये कही जा रही हैं। पर अब उसे किसी बात का डर नहीं रहा था, और उसके दिल में सिर्फ एक खयाल जोर मार रहा था, कि मरने से पहले इन बदमाश सिपाहियों को एक अच्छा सबक सिखाया जाय। वह अपना उद्देश्य पूरा करने की कोई तरकीब सोचने लगा। ढूढ़ते ढूढते उसका हाथ गाड़ी के दूसरे कोने में पड़े हुए बमों के ढेर पर पडा। अब उसने एक तरकीब सोची जिससे न केवल सिपाहियों को दण्ड ही दिया जाय, बल्कि अगर मुमकिन हो तो भाग कर अपनी जान भी बचा ली जाय।

इस समय सिपाही चलने की तैयारी कर रहे थे। मोटर-लारी का इंजिन जोर से फटफटा रहा था। ड्राइवर आलस्य मे बैठा हुआ सिगरेट पी रहा था। दो सिपाही गाड़ी के नजदीक बाहर बैठे हुए बातचीत कर रहे थे। केसी ने

चुपके से एक बम उठाया और उसकी मूँठ को मजबूती के साथ पकड़ लिया। इसके बाद उसने अचानक बड़े जोर से बम की मूठ का एक ठोसा ड्राइवर के मुँह पर मारा और बिजली की तरह कूद कर मोटर चलाने की जगह पर बैठ गया। पास मे बैठे हुए दोनों सिपाही चौक कर उठे, पर केसी ने फौरन वह बम उनकी तरफ फेंक दिया और जब तक उसका धड़ाका हुआ तब तक उसने मोटर को पूरी तेजी से दौड़ा दिया।

अपने शिकार को इस तरह भागते देखकर दूसरे सिपाही उसकी तरफ गोलियों की वर्षा करने लगे। पर मोटर की तेज चाल के कारण कोई भी गोली निशाने पर नहीं लगी। करीब दो मील चले जाने के बाद केसी को कराहने की आवाज सुनाई दी। उसने देखा कि मोटर का ड्राइवर होश में आ रहा है। वह उसे मारने के लिये कोई चीज तलाश करने लगा। पास ही एक बड़ी पिस्तौल रखी हुई थी। केसी पहिले तो ड्राइवर को मार देना चाहा, पर जब उसने उसके टूटे हुये जबड़े को देखा तो उसे दया आ गई और पिस्तौल अपने जेब में रख ली।

पर अभी तक केसी विपत्ति से मुक्त नहीं हुआ था। दूसरी मोटर गाडियों में बैठकर अँगरेजी सिपाही उसका पीछा कर रहे थे। उनकी मोटरों की रोशनी दूर से दिखलाई देने लगी। अन्त मे उसने एक ढालू जगह की चोटी पर पहुँच कर मोटर को ठहरा दिया। उसकी इच्छा थी कि भागने से पहिले थोड़े बम ले लिये जायँ, पर उनको रखने के लिये वहाँ कोई चीज़ न थी। तब उसने खतरे की परवा न करके दो बम अपनी पतलून की जेबों मैं रख लिये। इसके बाद उसने मोटर-लारी को नीचे की तरफ ढकेल दिया और वह लड़खड़ाती हुई नीचे गिर कर चूर-चूर हो गई।

अब केसी जोर से खेतों में होकर भागने लगा। बीच-बीच मे वह किसी जगह छुप जाता था। इस प्रकार भागते-भागते उसने सडक को कई मील पीछे छोड़ दिया और वह मेलार्न की दक्खिन दिशा वाली पहाडियो मे पहुँच गया।

अब सिपाहियों का डर जाता रहा। वह सिपाहियों की मार-पीट और भागने के कारण बेहद थक गया था, और जमीन पर पड़ते ही उसे गहरी नींद आ गई। जब उसकी आँखें खुलीं तो तीन-चार घटे दिन चढ़ चुका था और चारों तरफ तेज धूप फैली हुई थी। सबसे पहिले उसकी निगाह टामी मुलन पर पड़ी जो पास ही खड़ा हुआ डरी निगाह से उसे देख रहा था। केसी को जगा हुआ देखकर टामी ने रोती हुई आवाज से पूछा—"केसी साहब, आपकी यह कैसी हालत है?"

पर अब केसी साहब बिल्कुल बदल गये थे। उसने हँसते हुए मुलन से कहा—"नहीं, मैं बिलकुल अच्छी तरह हूँ। तुम कहाँ से आ गये!"

मुलन ने जवाब दिया—"आज सुबह जब मै अपने छुपने की जगह से बाहर निकला तो दूर ही से मैंने आपको पड़े देखा, पर बहुत देर तक डर के मारे आपके पास नही आया। आह, केसी साहब, आप तो सर से पैर तक खून मे सने हुये हैं।"

केसी ने जवाब दिया—"हाँ, सर में कुछ चोट लग गई थी।" इसके बाद उसने हँसते हुए कहा—"मुलन, अब मैं तुम्हारा गुरु नही रहा। अब तुम मुझसे साहब न कह कर केवल जेम्स या केसी के नाम से बात किया करो। मै आयरलैंड की गोरिल्ला सेना में शामिल होना चाहता हूँ। इस समय यहाँ पर तुम्हारे सिवा उसका ऐसा कोई पदाधिकारी नही है जो शत्रु का मुक़ाबिला कर रहा हो। इसलिये मेहरबानी करके मेरा नाम अपने सिपाहियों में लिख लो।"

गोरिल्ला-दल का संगठन
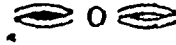
मेलार्न गाँव में इन दिनों बड़ी हलचल मची रहती थी। यद्यपि आयरलैण्ड का स्वाधीनता-संग्राम कई महीनों से जारी था, पर मेलार्न वालों ने उसमें कोई हिस्सा नहीं लिया था। वे केवल एक तमाशाई की तरह इस संग्राम की आश्चर्यजनक घटनाओं को सुनते और पढते रहते थे। गाँव के छोटे-से पुस्तकालय में जो दो-चार अखबार आते थे, उनसे पता चलता था कि इस समय आयरलैंड में सचमुच एक युद्ध हो रहा है, जिसमें एक तरफ आयरलैंड का राष्ट्रीय दल है और दूसरी तरफ विदेशी सरकार। समय-समय पर सरकारी सेना-विभाग की तरफ से जो सूचनायें निकलती थीं उनसे भी इस बात की सचाई साबित होती थी। लोग सुना करते थे कि डबलिन, कार्क और दूसरे स्थानों में अक्सर छोटी-मोटी लडाइयाँ होती रहती हैं जिनमें आयरलैंड वाले ही नहीं मरते वरन् सरकारी सिपाही भी मारे जाते हैं।

लडाई की इन खबरों पर गाँव मे बड़ी बहस हुआ करती थी। कुछ लोग राष्ट्रीय सेना वालो के काम की इसलिये निन्दा करते थे कि इससे सरकारी सिपाहियों को सर्वसाधारण पर अत्याचार करने का बहाना मिल जाता है और व्यर्थ में बेकसूर लोगों की जाने जाती हैं। पर दूसरे लोग फौरन जवाब देते कि इस समय देश की इज्जत मरने और मारने की नीति से ही कायम रह सकती है और इसलिये राष्ट्रीय सेना वाले ही सच्चे देशभक्त हैं। इस बात को प्रायः सभी मानते थे कि राष्ट्रीय सेना वाले बड़े बहादुर हैं। कभी-कभी मेलार्न के निवासी इस बात पर रंज जाहिर करते थे कि उनका गाँव देश की स्वाधीनता

के युद्ध में कुछ भाग नही ले सकना। पर अगर वे कुछ करना भी चाहें तो उनके पास बदूक और गोली बारूद कहाँ है? इस तरह मेलार्न वालों का युद्ध में भाग ले सकना एक नामुमकिन बात जान पड़ती थी और सरकारी सिपाही बिना किसी डर के उस गाँव में होकर आते-जाते रहते थे।

पर एक ऐसे लड़के ने, जिसको गाँव के बहस करने वाले 'राजनीतिज्ञ' जानते भी न थे, अचानक मेलार्न का नाम युद्ध करने वालो की फेहरिस्त में लिखा दिया। दस घटे के भीतर ही ऐसी भयकर घटनायें हो गई जिनका किसी को खयाल भी न था। खासकर जब रात के समय सरकारी सेना ने गाँव में घुस कर टामी मुलन की विधवा माता और स्कूल मास्टर के मकान जला दिये और उनके पूजनीय गुरु केसी साहब को मार-पीट कर घायल कर दिया, तो मेलार्न वालों के दिल में बड़ा धक्का लगा।

इस घटना के बाद कई दिन तक फौज के सिपाही गाँव वालों पर जुल्म करते रहे। वे हर एक घर की तलाशी लेते थे। आस-पास के गाँव वालों को पकड़-पकड़ कर बुलाते थे, लोगों से तरह-तरह के सवाल करते, धमकाते और मार-पीट करते थे। फौज वाले मेलार्न के तमाम सदेहजनक लोगों को पकड़ कर ले गये, जिनमें ज्यादातर बातूनी राजनीतिज्ञ थे। सरकारी सेना ने मेलार्न को बुरी तरह से कुचल डाला।

इस अत्याचार ने मेलार्न की रगत ही बदल दी। शुरू मे तो वहाँ के लोग मौत के डर से भेड़ की तरह गरीब बन गये। पर जब मौत बिल्कुल सर के ऊपर आ पहुँची तो निराशा ने उनको जगली जानवर की तरह खूंखार बना दिया। कितने ही नौजवान पहाड़ियों में भाग गये और गोरिल्ला-दल में शामिल हो गये।

जब मुख्य सरकारी सेना गाँव छोड़ कर चली गई और सिर्फ पुलिस-चौकी में थोड़े से सिपाही बाकी रह गये, तब गाँव वालों का डर कुछ दूर हुआ और वे आजादी के साथ घरों से निकलने लगे। पर अब कोई खुलकर राज-

नीतिक बातों की चरचा नही करता था और आपस मे बात करते समय भी लोग चौकन्ने रहते थे। पर उनके दिलों मे विदेशियो के प्रति घृणा का भाव बड़ा मजबूत हो गया था, और वे राष्ट्रीय सेना वालों से हार्दिक सहानुभूति रखने लगे थे। अगले इतवार के दिन गिरजे मे जब उस जिले के बडे पादरी ने फौज पर हमला करने वालो की निन्दा की और गालियाँ दी, तो सबके चेहरों पर नाराज़ी का भाव जाहिर हो रहा था। उसके बाद जब गाँव का छोटा पादरी फादर एमन अतिम प्रार्थना सुनाने को हुआ तो सब उसकी बात बडे ग़ौर से सुनने लगे। गाँव वालों को मालूम था कि फादर एमन भीतर ही भीतर राष्ट्रीय सेना वालो से मिला हुआ है।

× × ×

पहाड़ियों में भागने वाले नौजवानों की सख्या अब बीस तक पहुँच चुकी थी। सरकारी सेना के सिपाही वहाँ भी उनको ढूँढ़ते फिरते थे। पर वहाँ के रास्तो और छुपने के मुकामो का पता न होने के कारण वे पाँच-सात दिन मे नाउम्मेद होकर बैठ रहे। इस बीच मे इन नौजवानो ने अपना बाकायदा सगठन कर एक गोरिल्ला दल बना लिया और नेड फोयले नाम के एक किसान पहलवान को अपना नेता बनाया। फोयले की उम्र करीब ३० साल थी और वह शात, समझदार तथा लड़ने में ख़ूब बहादुर था। अपनी रक्षा का इन लोगों ने बड़ा पक्का इन्तजाम कर रखा था और हर समय दो-तीन आदमी बारी-बारी से पहरा देते रहते थे। खाने की चीजों और कपड़ों के लिये एक छुपा हुआ भडार बनाया गया और दूर से बातचीत करने के लिये कुछ इशारे भी बना लिये गये।

पहाडियों मे रहने वाले किसान इन नौजवानों की सब तरह से सहायता करते थे। शुरू मे वे ही लोग ज्यादा सहायता करते थे जो सबसे गरीब थे। उसके बाद धीरे-धीरे मालदार किसान भी मदद देने लगे। स्त्रियाँ इस काम

में विशेष उत्साह दिखलाती थी और उन्ही के जोर देने से मर्द भी मदद करते थे।

इन नौजवानो का सबसे पहिला काम राष्ट्रीय सेना के हेडक्वार्टर से अपना सम्बन्ध जोड़ना था। उन्होने अपना एक प्रतिनिधि उस जिले के सेनापति के पास भेजा। सेनापति ने मेलार्न के दल को अपनी सेना मे शामिल करना मंजूर कर लिया और उनको शिक्षा देने के लिये एक नौजवान अफसर भेजा। यह अफसर राष्ट्रीय सेना के प्रधान हेडक्वार्टर डबलिन से इस जिले की सेना का सगठन करने के लिये भेजा गया था। उसका नाम कप्तान मुनरो था।

कप्तान मुनरो ने बड़ी खुशी से इन अनजान लोगो को सिखलाने का काम अपने हाथ मे लिया। मुनरो का पहला हाल किसी को मालूम न था, पर यह सबको दिखलाई पडता था कि उसकी नस-नस मे जोश और वीरता भरी हुई है। उसके साथ मे रहकर थोडे ही दिनो मे मेलार्न वालो को विश्वास हो गया कि उसका जन्म देश-सेवा के लिये ही हुआ है, और सिवा मौत के और कोई ताकत उसको इस काम से नही हटा सकती।

कप्तान मुनरो ने इन नौजवानो को समझाया कि "डबलिन मे रहने वाले 'बडे नेता' इस जिले के संगठन से सतुष्ट नही हैं। वे चाहते हैं कि दूसरे जिलो की तरह यहाँ वाले भी कोई 'बड़ा काम' करके दिखलाये। आप लोगो ने काम को अच्छे ढङ्ग से उठाया है, पर जब तक आप का सङ्गठन मजबूत न होगा और आपके पास काफी बन्दूके न होगी तब तक आप ज्यादा आगे नही बढ सकते। इस उम्मेद को छोड़ दो कि हेडक्वाटर से तुमको अभी बन्दूके मिल जायँगी। वहाँ से अभी उन्ही जिलो की माँग पूरी नही हो सकती जहाँ युद्ध खूब जोरों से चल रहा है। इसलिये तुमको खुद ही बन्दूके इकट्ठी करने की कोशिश करनी चाहिये। आस-पास के गाँवो मे तलाश करो और जिस किसी के घर मे बन्दूक हो, जाकर उठा लाओ। यह भी याद रखो कि हमारे दुश्मन के

पास ढेरो बन्दूके हैं, तुमको चाहिये कि जिस तरह हो सके उससे बन्दूकें छीन लो।"

अब सङ्गठन-का काम शुरू हुआ। इसमें सामाजिक श्रेष्ठता और विद्या का ख्याल बिल्कुल छोड दिया गया और जो आदमी जिस काम के लायक ठीक जान पडा उसे वही काम दिया गया। गाँवों में भी कुछ ऐसे विश्वासपात्र मनुष्य नियत किये गये जो तमाम बातों की खबर पहाड़ियों मे पहुँचाते रहें और वालटियरो की हर तरह से सहायता करे।

पर एक सवाल बार-बार सामने आता था कि बन्दूकें कहाँ से आवे। एक दिन कप्तान मुनरो ने बातें करते हुये कहा—"बन्दूकों की मुशिकल हर जगह है। जब मैं लाफ' नाम के गाँव में सङ्गठन करने गया तो देखा कि उन लोगों के पास एक भी बन्दूक नहीं है। वे लोग पहाड़ी थे और ऐसे लम्बे-चौड़े और जबर्दस्त थे कि उनका एक मामूली आदमी मुझे अपने हाथो से पीस सकता था। उनका नेता उस जिले का एक मशहूर और प्रभावशाली शख्स था, जो सच्चा देशभक्त था। पर मैंने देखा कि उसमें उत्साह की कमी है और वह इस काम को आगे नही बढ़ा सकता। उस जिले के सेनापति की निगाह मे एक-दूसरा आदमी था जो इस काम को अच्छी तरह से कर सकता था। पर उसे डर था कि वर्तमान नेता के हटा देने से शायद लोग नाराज हो जायँ। इसलिये इस काम का जिम्मा मैने अपने ऊपर लिया और उन लोगों से कहा कि मै एक ऐसे आदमी को जानता हूँ जो तुमको बन्दूकें दिला सकता है। इस पर वे राजी हो गये और पुराना नेता खुशी से, कम से कम ऊपर से दिखाने के लिये, अपनी जगह से हट गया। नया आदमी हर तरह से योग्य साबित हुआ और इस समय 'लाफ' का गोरिल्ला दल देश भर में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध और हथियारबन्द है।"

इस तरह के किस्सों से ऐसा उत्साह पैदा होता था कि जैसा बड़े-बडे जोशीले व्याख्यानों से भी नही हो सकता। मेलार्न वाले सोचते थे कि हमारी

हालत भी उन पहाड़ी लोगों से मिलती हुई है। अब वे अपनी लापरवाही पर बहुत पछताते थे कि हमको पहिले से खयाल न आया और मैंने अपने यहाँ की बन्दूकों के लेने की कोशिश न की, जिनको बाद मे सरकारी सेना वाले ले गये। तो भी ये लोग बिलकुल नाउम्मेद नहीं हुये थे और हर एक गोरिल्ला का विश्वास था कि अगर मौका लगे तो जो काम उन पहाड़ी आदमियो ने किया वह हम भी करके दिखला सकते हैं।

जब कप्तान मुनरो मेलार्न के गोरिल्ला दल का सङ्गठन करके दूसरी जगह को रवाना हुआ तो उसके दिल मे इस बात का विश्वास था कि यहाँ वाले अपनी पूरी ताकत से काम करेंगे और कुछ न कुछ कर दिखलावेंगे। खासकर कप्तान फोयले के ऊपर उसे बडा भरोसा था और वह जानता था कि जब इन जवानों का नया जोश ठडा पड जायगा और भयकर कठिनाइयों तथा भय का सामना करना पडेगा तो फोयले ही उनके साहस को कायम रख सकेगा।

× × × ×

मेलार्न में एक नया ज़माना शुरू हुआ। अब लोग बहस-मुबाहिसे मे वक्त खराब नही करते थे। जो लोग लडने भिड़ने के नाकाबिल थे वे घरो मे रह कर ही हर तरह से गोरिल्ला-दल की सहायता करते थे। उधर गोरिल्लाओं ने भी अपना काम शुरू कर किया। रास्ते के बीच में खाई खोद कर सरकारी फौजों को रोक देना, सड़कों पर पेड़ काट कर गिरा देना, तारों को काट डालना और तार के खम्भो को तोड़ देना वगैरह उनके रोज के काम थे। इन कामो के सिवा थोड़े से मामूली औजारो के और किसी चीज़ की जरूरत न थी।

वे लोग डाक को लूट लेते थे और हथियारो के लिए राजभक्त लोगो के मकानों पर हमला करते थे। एक दिन उन्होंने मेलार्न की पुलिस-चौकी पर अचानक हमला किया और एक बम भीतर फेक कर चले आये। यद्यपि इस बम से ज्यादा नुकसान नहीं हुआ, पर लोगो में इससे बडा जोश फैल गया।

और इस जिले के अखबार में यह खबर बड़े-बड़े हैडिंग दे कर प्रकाशित की गई।

फोयले का इरादा था कि गश्त लगाने वाले सरकारी सिपाहियों पर छापा मार कर उनकी बन्दूकें छीनी जायँ। क्योंकि बिना फौजी बन्दूकों के वे दुश्मन का मुकाबला नहीं कर सकते थे। इस काम के लिये चुने हुये गोरिल्लाओं का एक दल तैयार किया गया। केसी का नाम भी इन लोगों में था और उसने इस काम को बड़ी ख़ुशी से मन्जूर किया। उसको डर था कि शायद ज्यादा उम्र होने के कारण या पढ़ा-लिखा आदमी समझ कर उसको इस दल में न रखा जायगा। अगर ऐसा होता तो केसी को बड़ा रंज होता। क्योंकि उस दल में कितने ही लोग ऐसे थे जिनको उसने पढ़ाया था और उनके सामने वह हरगिज पीछे नही रहना चाहता था।

गश्त लगाने वाले सिपाहियों की तलाश में इन लोगों को घंटों तक छुपे बैठे रहना पड़ता था। एक दल के बाद दूसरा दल उसकी जगह पर बैठता। इस तरह खाली बैठे-बैठे लोग बहुत थक जाते थे, तो भी कोई और उपाय न था। कभी-कभी वे लोग पीछे से सरकारी सेना वालों पर गोलियाँ चला देते थे, पर उसके बाद फौरन ही पहाड़ियो में भाग जाते थे। उसके पास न तो इतना सामान था और न वे इतने होशियार थे कि सरकारी फौज वालों के सामने ठहर कर लड़ सकें। तो भी जब सरकारी सिपाहियों की तादाद कम होती थी तो वे उनको दबा लेते थे। एक दिन उन्होंने पुलिस वालों से दो बदूकें छीन लीं। पर लौटते समय उनको बड़ी कठिनाई पड़ी और उनके दो आदमी सखत घायल हो गये। इनमें से एक गोरिल्ला जिसका नाम टाम गैनन था, दो-तीन घटे बाद मर गया! तमाम लोगो को अपने एक साथी के मरने से बड़ा रंज हुआ क्योंकि इस तरह का यह पहिला ही मौका था। रात के समय उन्होने टाम गैनन के शव को कब्र खोद कर गाड़ दिया। सब लोग शांत तथा गम्भीर भाव से कब्र के चारों तरफ खड़े थे। ऊपर से

थोड़ी-थोड़ी बूंदे भी गिर रही थी। उस समय फादर ऐमन ने अंतिम प्रार्थना पढ़ी। उसकी आवाज से स्वाभिमान और दुःख दोनों तरह के भाव प्रकट हो रहे थे।

नेड गैनन, मरने वाले गोरिल्ला का भाई था। उसने कब्र के ऊपर एक शब्द भी मुह से नहीं निकाला। पर जब वे लौट कर अपने पड़ाव में पहुँचे और नेड गैगन ने देखा कि सब लोग सहानुभूति के साथ उसकी तरफ देख रहे हैं तो उसने कहा—भाइयो, हमें ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि अभी हम इतने आदमी दुश्मन का मुकाबला करने को मौजूद हैं। टाम देश के लिये मरा है और उसके कारण हमको बंदूकें भी मिली हैं इसलिये रज करने की कोई ज़रूरत नहीं।"

कप्तान फोयले ने गम्भीरता से सिर हिला कर कहा—"हाँ, बदूके तो मिलने लगी हैं।"

सरकारी सेना पर छापा

अब धीरे-धीरे मेलार्न गाँव का महत्व बढने लगा। डबलिन के दैनिक पत्रों में भी कभी-कभी मेलार्न का नाम छप जाता था। इस बीच में वहाँ पर सरकारी चार सिपाही मारे जा चुके थे; बहुत से घायल हुये थे; फौज और पुलिस वालों के हथियार छीने गये थे; सड़के तथा तार बार-बार काट डाले जाते थे। यद्यपि समस्त देश की निगाह से ये बाते साधारण थीं; पर जिले के लोगों और वहाँ के सेनापति को इन पर काफ़ी गर्व था। उस जिले के सरकारी सेनापति को अपनी रिपोर्ट मे मेलार्न का जिक्र हमेशा करना

पड़ता था और छोटे अफसर भी इस मामले को बेचैनी और जिम्मेदारी की निगाह से देखते थे।

अब पहाड़ियो मे फोयले के गोरिल्लाओ की तादाद ४२ तक पहुँच गई थी। इस लिये उनका सगठन फिर से किया जाना जरूरी था। कई नये अफसर नियत किये गये और चौकीदारी का इन्तजाम पहिले से ज्यादा मजबूत किया गया। पाँच आदमी घायल और बीमार हो गये थे, उनका इन्तजाम करने मे बड़ी कठिनाई पड़ती थी। यह देख कर फादर एमन और दूसरे गाँव वालो ने उनका प्रबन्ध अपने ऊपर लेकर लडने वालो का बोझ हलका कर दिया।

टाम गैनन की मृत्यु से वालटियरो का गुस्सा बहुत बढ गया था और सब की राय थी कि मेलार्न की पुलिस-चौकी को बर्बाद करके इसका बदला लेना चाहिये। इस समय उनके पास छः फौजी बन्दूकें और पाँच पिस्तौले थीं। उनका खयाल था कि इतने हथियारो से हम दुश्मन को अच्छी तरह नीचा दिखा सकते हैं। कप्तान फोयले भी हमला करने के विरुद्ध नही था, पर उसकी राय मे अभी हथियारो की कमी थी। उसका कहना था कि जब तक हमारे पास काफी सामान न हो तब तक फिजूल मे अपनी गोली बारूद को खर्च करना मुनासिब नही पर उसके बहुत से साथियो का आग्रह इतना बढ़ा हुआ था कि बजाय उनको दबा कर रखने के, उसने यही अच्छा समझा कि उनकी बात को थोडा बहुत मान लिया जाय। इसलिये उसने लोगो को इस बात पर राज़ी किया कि चौकी पर पास जाकर हमला न किया जाय, बल्कि दूर से गोलियाँ चला कर सरकारी सेना वालों को धोखे में डाला जाय।

× × × ×

वह रात मेलार्न के रहने वालों के लिये बड़े भय की थी। रात भर कोई आदमी न सो सका। ज्योही राष्ट्रीय सेना वालों की तीन-चार टोलियों ने छुपे

मुकामों से कुछ गोलियाँ चलाई कि तमाम सरकारी सेना मे खलबली मच गई। घंटे भर के भीतर ही पुलनमोर और बैलून की छावनियों से सरकारी फौज से सिपाही आ पहुँचे। सिपाहियों के दल के दल तमाम रात सड़कों पर घूमते रहे और जहाँ ज़रा भी शक होता था वे बन्दूकों और मशीनगनों से गोलियों की वर्षा करने लगते थे। एक जगह सिपाहियों की गड़बड के सबब से एक सोता हुआ बकरा भडक गया। बकरा बडा भारी था, उसने गुस्से में भरकर एक मोटे सारजट की तोंद में ऐसे जोर से टक्कर मारी कि सारजट साहब वहीं अंटाचित होगये। सिपाहियों ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी को रोका और बकरे को संगीनों से मार डाला। उस रात को सिवा उस 'देशभक्त बकरे' के और कोई मरा-गिरा नही, पर सुबह के वक्त पुलिस की चौकी और उसके आस-पास के मकानों पर गोलियों के निशानों और टूटी हुई खिडकियों को देखने से ऐसा मालूम होता था कि यहाँ पर कोई बड़ी भारी लडाई हुई है।

राष्ट्रीय सेना वाले अपने उद्देश्य को सफल होता देखकर बहुत खुश हुये। उन्होंने दुश्मन की एक बड़ी सेना को रात भर परेशान रखा और उसका सेकडों मन गोली बरूद खर्च करा दिया। सरकारी सेना विभाग ने इस घटना का वर्णन बहुत बढ़ा-चढा कर अखबारों में प्रकाशित कराया। उसके ऊपर मोटे मोटे अक्षरों मे लिखा था 'मेलार्न की पुलिस चौकी पर भयकर आक्रमण।' उस सूचना मे यह भी लिखा था कि—"हमारी (सरकारी सिपाहियों की) गोलियों से कितने ही बागी गिरते दिखलाई दिये। हमारा कुछ नुकसान नही हुआ।" इन बातों को पढ़ कर सब वालटियर खूब हँसते रहे।

× × × ×

उधर फोयले गोली बारूद की कमी के कारण बडे सोच में पड़ा हुआ था। बहुत कुछ विचार करने के बाद उसने तय किया कि सरकारी सेना पर एक बार

ऐसा हमला करना चाहिये कि जिससे दुश्मन को गहरी चोट लगे और साथ ही हमको कुछ मसाला भी मिले। उसने अच्छी तरह देख लिया था कि गोरिल्लाओं का रहन-सहन सब तरह से ठीक है और वे कवायद परेड बडे शौक से करते हैं। जैसे जैसे मुसीबतें झेलनी पड़ती थी, उनकी मजबूती बढ रही थी। यह बात ठीक थी कि उन लोगो को लड़ाई का अभ्यास न था, पर उनमें जोश इतना ज्यादा था और वे लड़ने के लिये ऐसे उतावले हो रहे थे कि अभ्यास की कमी कोई बडी बात न थी।

धीरे-धीरे हमले की तैयारी की जाने लगी। कुछ ऐसे मुकाम तलाश किये गये जहाँ से दुश्मन पर छापा मारकर फौरन पहाड़ियों के भीतर छुपा जा सके। तैयारी का काम बड़ी छुपी तौर पर किया जाता था और किसी बाहरी आदमी को उसकी जरा भी खबर न थी। जो लोग घरों मे रहकर गोरिल्लाओ की मदद करते थे और जिनसे समय पडने पर लड़ने के काम मे मदद ली जाती थी उनको भी बहुत थोडा हाल बतलाया गया। क्योंकि इस बात का डर था कि अगर तैयारी की बात बहुत लोगो को मालूम हो जायगी तो कोई न कोई बातूनी आदमी उसे चारो तरफ फैला देगा।

यह समझना गलत है कि इस गोरिल्ला दल के सगठन मे कोई दोप न था। यह बात भी न थी कि तमाम आदमियों में लड़ने का एक सा जोश था। एक आदमी से दूसरे आदमी के स्वभाव मे बड़ा अन्तर था और आज्ञा-पालन का भाव भी अभी बहुत मजबूत नही हुआ था। कभी-कभी आपस में चढा ऊपरी का भाव भी देखने आता था। सब लोग बहस मुबाहिसे में खुल कर भाग लेते थे और आपस में कोई बात छुपाई नहीं जाती थी। हर एक आदमी के गुण और दोपो की खरी आलोचना की जाती थी। कमान फोयले सब लोगो की सलाह सुनता था पर आखिरी फैसला करने का अख्तियार उसने अपने ही हाथ मे रखा था। उसे भरोसा था कि समय पड़ने पर सब लोग उसके हुक्म को बिना उज्र के मान लेंगे।

हमला करने के लिये राष्ट्रीय सेनावालों की तरकीब यह थी कि बारह या चौदह आदमियो का एक दल एक छुपे हुये मुकाम पर हमेशा बैठा रहता था। बाकी लोग थोड़ी दूर पर पहाड़ियो के बीच मे छुपे रहते थे। कुछ घटे के बाद एक नया दल भेजा जाता था, जो पहले दल को आराम के लिये भेज कर उसी मुकाम पर छुप कर बैठ जाता था। हर एक आदमी के जिम्मे अलग-अलग काम बटा हुआ था। एक ऊँची और छुपी हुई जगह पर एक आदमी बैठा हुआ दूरबीन से चारो तरफ शत्रुओ की सेना के आने-जाने को देखता रहता था। यह दूरबीन भी सरकारी सिपाहियो से छीनी गई थी।

पर अब सरकारी सेना पहाड़ियो की तरफ आने की हिम्मत बहुत कम करती थी। उसका जोर मैदान मे बसे हुये गाँवों मे ही था और वही पर सरकारी सिपाही लोगों को पकड़ते-धकड़ते रहते थे इसके सिवा वे गाँव वालो को बेगार में पकड़ कर टूटी हुई सड़कों और तारों की मरम्मद भी कराते थे। आज कल वे लोग अक्सर बड़ी तादाद में ही बाहर निकलते थे, कभी-कभी कुछ लोग मोटर गाड़ी मे बैठकर भी चले जाते थे।

फोयले का इरादा था कि इस तरह की किसी अकेली मोटर पर हमला किया जाय। पर ऐसा मौका कितने ही दिनों तक हाथ न लगा। गोरिल्ला लोग घटो तक छुपे पडे रहते थे और उनके कपडे ओस से तर हो जाते थे। उनके सामने से दुश्मन की सेना के दल के दल निकल जाते थे, पर उनमे से ऐसा कोई न होता था जिसे वे लोग हमला करके जीत सकते। फोयले चाहता था कि हमारा पहला हमला व्यर्थ न जाय। अगर इस हमले मे कामयाबी होती और कुछ सामान हाथ लगता तो इससे वालटियरो की हिम्मत बढ़ जाती और वे दूसरी बार उससे बड़ा हमला कर सकते।

जैसे-जैसे दिन गुजर रहे थे नाउम्मेदी बढती जाती थी। गोरिल्ला भी कुछ नाराज होने लगे थे। नेड गेनन जो एक पारटी का मुखिया था, बार-बार गुस्से के साथ कहा करता कि "कप्तान, इस तरह पडे रहना तो अच्छा नही

लगता । कभी-कभी इन बदमाश सिपाहियों पर दोचार गोली चलादी जाया करे तो जरा खून तो गर्म रहे ।"

पर कप्तान अपने इरादे पर जमा हुआ था । अन्त में एक दिन उसके मन के माफिक मौका आया । मेलार्न से आने वाली सड़क पहाड़ी के पास आकर दो हिस्सों में बॅट जाती थी । ।एक रास्ता पुलनमोर के कस्बे को जाता था और दूसरा बैलून के कस्बे को । जहॉ पर ये दोनों सड़के फटती थी वही पर पहाडी के ऊपर एक पुराने किले का खण्डहर था । इस जगह से पास ही एक घना जगल था जिसमे छुपने का बड़ा सुभीता था ।

उस दिन करीब चार बजे शाम को राष्ट्रीय सेना के पहरेवाले ने दूरबीन से देखा कि एक मोटर लारी मेलार्न की तरफ चली आ रही है । उस समय वहॉ पर सिर्फ दस वालटियर मौजूद थे । फौरन सब लोगो को अलग-अलग हिस्सों मे बाट दिया गया । एक आदमी लौटने के रास्ते की रखवाली करने को नियत किया गया, तीन आदमी किले के ऊपर चढ गये और बाकी आदमी एक लम्बी कतार बनाकर पेड़ो के पीछे छुप गये । कप्तान फोयले के हाथ में एक बम का गोला था और वह उसे चला कर लड़ाई का इशारा देने वाला था ।

इतने में मोटर लारी पास आ पहुॅची । वह फौजी ढग की गाड़ी थी और उसमें एक मशीनगन लगी हुई थी । जब गाड़ी बिलकुल सामने आगई तो फोयले ने उसमे बम फेक कर मारा, और उसी समय तमाम वालटियर गोलियों की वर्षा करने लगे । सरकारी सिपाही फौरन मोटर की दीवार की आड़ मे छुप कर मशीनगन चलाने लगे और मोटर की चाल खूब तेज होगई । फोयले ने समझा कि यह मौका हाथ से गया और उसे इतना दुःख हुआ कि वह जहा का तहा पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा रह गया । इतने मे उसने देखा कि मोटर सडक को छोड़ कर एक किनारे की तरफ जा रही है । दूसरे ही क्षण वह बड़े जोर से एक पेड़ के साथ टकराई और एक तरफ गिर पड़ी । गोरिल्ला कुछ

देर तक ठहरे रहे, पर जब उन्होने देखा कि मोटर लारी मे से कोई बाहर नही आता तो वे उसके पास पहुँचे।

वहा जाकर उन्होने बडा भयकर दृश्य देखा। मोटर हॉकने वाला बिलकुल मुर्दा था और उसके सिर मे गोली लगने से खून बह रहा था। चार आदमी मरे हुये जान पड़ते थे और तीन कराह रहे थे। यद्यपि कई महीने से लडते-भिडते रहने के कारण गोरिल्लाओ के दिल कुछ सख्त होगये थे, पर इन घायलों को देखकर उनको बडी दया आई। इतने मे फोयले ने चिल्लाकर हुक्म दिया :—

"जल्दी से बन्दूकों और दूसरी चीजो को ले जाओ। गैनन, तुम्हारे जिम्मे मशीनगन को लेजाने का काम है। जरा भी देर मत लगाओ, आध घन्टे के भीतर सरकारी सेना आ पहुँचेगी।"

दस मिनट के भीतर वे लोग तमाम चीजों को उठा कर जगल के भीतर ले गये। बीस मिनट के बाद सरकारी सेना की दूसरी मोटरे घटनास्थल पर आगई। सिपाहियों से उस मुकाम को चारो तरफ से घेर लिया और वे जगल के भीतर घुसकर गोरिल्लाओ को पकड़ने की कोशिश करने लगे। थोडी देर में अँधेरा हो गया और राष्ट्रीय सेना वाले अपने दूसरे साथियों से जो मिले। फोयले और उसके साथियों को उस मुकाम की एक-एक इन्च जमीन का पता था और वे ऐसी जगह छुपकर बैठ गये जहॉ उनको कोई नही देख सकता था। उन्होने लूटी हुई बन्दूकों और मशीनगन को वही पर छुपा दिया। सरकारी सेना बन्दूके और मशीनगन चलाती हुई आ रही थी पर वे चुपचाप बैठे रहे। थोड़ी देर बाद जब सिपाही बिलकुल पास आ गये तो गोरिल्ला कई हिस्सो मे बॅट कर दूर दूर चले गये और बारी-बारी से गोलियॉ चला कर और सिपाहियों को धोखा देकर इधर उधर दौड़ाने लगे। अंत मे उन्होने पीछे की तरफ से सरकारी सेना पर हमला किया और साफ बच कर निकल गये।

रात के दो बजे के बाद जब सरकारी सेना वालों ने देखा कि तमाम पक्षी जाल में से उड़ गये तो सब लोग रंजीदा होकर लौट गये। उनके बहुत से आदमी घायल हुये थे और कुछ मरे भी थे। राष्ट्रीय सेना का केवल एक आदमी गिरने से पैर में चोट लग कर घायल हुआ था।

मशीनगन को पाकर राष्ट्रीय सेना वालों को बड़ी खुशी हुई। उस जिले के सेनापति ने दो-तीन दिन में ही एक खास अफसर उसकी जॉच करने और उसे काम के लायक बनाने को भेजा वह अफसर भी इस काम को पाकर बडा खुश हुआ। क्योंकि अब तक उस जिले की राष्ट्रीय सेना के पास एक भी मशीनगन नही थी और उस अफसर को इस बात की खुशी थी कि अत मे उसको भी एक काम मिला।

गोरिल्ला-दल का घेरा
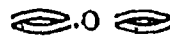
सरकारी सेना पर छापा मारने की घटना सरकारी सेंसर के फंदे से निकल कर आयरलैंड के तमाम अखबारों में प्रकाशित हो गई। फौजी अफसरों ने अपनी रिपोर्ट मे दो सिपाहियों का मरना और दो का घायल होना मंजूर किया था। पर मेलार्न के आस-पास रहने वाले इस रिपोर्ट को बिलकुल गलत बतलाते थे और कहते थे कि उन्होंने अपनी आँखो से तीन मोटर लारिया मुर्दों से भरी देखी थी। पर असल मे सरकारी रिपोर्ट और लोगों में फैली हुई खबर दोनों असली बात से बहुत घटी-बढ़ीं हुई थीं।

सब लोगों मे इस बात का डर फैला हुआ था कि इस घटना के बदले मे सरकारी सेना वाले मेलार्न निवासियों को बहुत तग करेंगे। मजा यह था

कि यह डर घर मे ठहरे हुये लोगो को उतना ज्यादा न था जितना कि पहाड़ियों में छुपे हुये लोगो को था। जब किसी किसान का घर आग लगा कर जला दिया जाता तो वह चुपचाप खड़ा हुआ तमाशा देखता रहता था, और विदेशियो के लिये उसका गुस्सा और घृणा दुगुनी हो जाती थी। सरकारी सिपाहियों ने हमले के मुकाम के पास रहने वाली कैफरी नामक बुढ़िया का झोपडा जला दिया। उस बहादुर स्त्री ने इसकी कुछ परवा न की और फौजी अफसरों को उनके मु ह पर ही ऐसी खरी-खोटी सुनाई जो उनको सदा याद रहा होगा। फौज वाले मेलार्न के डिनी मोरेन नामक दर्जी को पकड ले गये और फौजी अदालत मे मुकदमे का तमाशा करके उसे गोली से मारने की सजा दे दी। यद्यपि मोरेन का राष्ट्रीय सेना वालो से कुछ ताल्लुक न था, तो भी सरकारी कर्मचारियो की निन्दा करने मे उसकी जबान सदा कैंची की तरह चलती रहती थी। मौत की सजा सुन कर वह घृणा और बेपरवाही के साथ हँसने लगा। गोली मारने वाले जब उसकी आँखो पर पट्टी बांधने लगे तो उसने इससे इनकार कर दिया और वह इस तरह हसते हुये मरा जैसे कोई बड़ा मजाक हो रहा हो। पहाड़ियों में रहने वाले गोरिल्लाओं की जीत की खुशी इन जुल्मों की खबरो से कुछ कम पड़ गई। उनको सरकारी सिपाहियो के ऊपर बड़ा गुस्सा आता था और जब कभी मौका लगता था वे उन पर गोलियाँ चला कर बदला लेते थे।

जो मशीनगन उन लोगों के हाथ लगी थी उसको कुछ गोरिल्ला के साथ जिले के हैडक्वार्टर में भेजा गया। थोड़े ही दिन में वे लोग उसको काम में लाना सीख आये और उन्ही दिनों मे एक सरकारी सेना से भरी हुई रेलगाडी पर उससे खूब गोला बारी की गई।

× × × ×

इस समय कप्तान फोयले को मालूम हुआ कि सरकारी अफसर किसी बड़े हमले की तैयारी कर रहे हैं। यह खबर उसको अपने ही आदमियों से नही मिली

थी, वरन् उस जिले के राष्ट्रीय सेनापति ने भी समाचार भेजा कि आस-पास
मुकामो मे सरकारी सेना बहुत बड़ी तादाद में इकट्ठी हो रही है। शुरू मे
यह एक मामूली बात जान पड़ी, पर धीरे-धीरे खतरा बढ़ता गया। मालू
हुआ कि सरकारी सेना पहाड़ियो के उस तमाम सिलसिले को चारों तरफ
घेरती चली आती है। वह घेरा तीस मील से भी ज्यादा फैला हुआ था, औ
इसके भीतर मेलार्न वालों के सिवा गोरिल्ला सेना के कई दल थे। इस ती
मील के बीच मे जितने कस्बे और गॉव थे उन सब मे सरकारी सेना के जबर्दस्
अड्डे कायम किये गये। कुछ भीतर की तरफ़ चलकर फौजी चौकियों का ए
घेरा बनाया गया, जिससे पहाड़ियों में से बाहर निकलने के तमाम रास्ते ब
हो गये। इन चौकियों से आगे बढ़कर दूसरी नई चौकियाँ कायम की जाती थीं
इस तरह धीरे-धीरे सेना का एक ऐसा जाल बनाया गया जिसके बीच से को
बचकर न निकल सके।

शुरू में ही गॉव और कस्बों के रहने वाले तमाम मर्द पकड़ लिये गये
उनमें से कुछ तो तलाशी और जॉच करने के बाद छोड दिये गये और बहुत
से सरकारी सेना की छावनी मे भेज दिये गये, जहॉ उनका फैसला बाद मे
किया जाने वाला था।

घेरे की खबर मिलते ही गोरिल्ला सेना वालों ने अपने उन तमाम साथियो
को, जो बीमारी या कमजोरी के कारण ज्यादा तकलीफ नहीं उठा सकते थे, रात
के समय गावो मे भेज दिया। घायल आदमियो को ऐसे मुकामों में भेजा गय
जहॉ वे हर तरह से सुरक्षित रह सके। अब पहाडियों में सिर्फ चुने हुए और
पक्के आदमी रह गये, जो दुश्मन का मुकाबला करने को हर तरह से
तैयार थे।

इसके बाद जब घेरा आगे बढ़ने लगा, पर अधूरी हालत में और छितरा
हुआ था, उस समय गोरिल्ला सेना के कई दल उसको तोडकर बाहर निकल
गये। सरकारी सेना ने उनका पीछा किया, पर उसका मुकाबला करने को

गोरिल्लाओं का एक दल रास्ते मे छुपा बैठा था और उसने ऐसे जोर से हमला किया कि सरकारी सिपाहियों को भागना ही पड़ा।

पर मेलार्न वालों की हालत कुछ दूसरी तरह की थी। उनके दक्खिन और उत्तर दोनों तरफ के रास्ते इस तरह रोक दिये गये थे कि बाहर निकल सकना बिलकुल नामुमकिन था। चारों तरफ सरकारी फौज की चौकियाँ कायम थीं और हर रोज नई-नई चौकियाँ बनाई जाती थी। हर जगह मशीनगनें लगी हुई थी और जरा भी शक होने पर गोलियाँ चलने लगती थी। रात के समय चारों तरफ सर्चलाइट की रोशनी फिरती रहती थी जिसे देखकर मजबूत से मजबूत आदमी का कलेजा भी दहल जाता था।

दिन पर दिन सरकारी सेना का घेरा छोटा होता जाता था और पास आ रहा था। गोरिल्ला दल वालों ने अपने आदमियों को कई जगहों में बाँट दिया और उनको बार-बार अपना मुकाम बदलना पड़ता था। जगह जगह पर दुश्मन के घेरे की जाँच की जाती थी कि कहाँ पर उसे तोड़ा जा सकता है। हर रोज गोरिल्ला दल की कमेटी होती थी, जिसमें घेरे से बाहर जाने की तरकीब सोची जाती थी। इसी बीच में जिले के सेनापति का भेजा हुआ एक साहसी गोरिल्ला सरकारी सेना के घेरे में होकर भीतर घुस आया। सेनापति ने मेलार्न वालों को घेरा तोड़ने की एक तरकीब बतलाई थी और आग्रहपूर्वक कहलाया था कि जहाँ तक हो सके जल्दी सब लोग आकर उसकी सेना मे शामिल हों।

सेनापति का सदेशा पाने से मेलार्न वालों को बहुत सतोष हुआ। वे खुद भी इस बात का इरादा कर चुके थे कि अब इस हालत में पड़े रहना ठीक नही। एक बार घेरे को तोड़ कर बाहर निकलने की कोशिश की जाय, फिर चाहे उसका नतीजा अच्छा हो या बुरा। उन्होंने देखा कि जैसे-जैसे दुश्मन का भीतरी घेरा मजबूत हो रहा है और नजदीक आता जाता है, बाहरी घेरा कमजोर पड़ता जाता है और उसकी चौकियाँ एक दूसरे से दूर होती जाती हैं। वालंटियरों का विश्वास था कि अगर एक बार हम भीतरी घेरे को तोड़ कर

निकल गये तो बाहरी घेरे से बचाना ज्यादा मुशकिल नहीं है। इस समय सरकारी सिपाही पहाड़ियों पर चलते-चलते थक भी गये थे और उनमें वह लापरवाही का भाव भी पैदा हो गया था जो एक बड़ी सेना को किसी छोटे दल-के लिये हुआ करता है। इन सब बातों पर विचार करके उन्होंने अगली रात को बाहर निकलने का पक्का इरादा किया और अपना तमाम ढंग और इतजाम सेनापति के गोरिल्ला को समझा कर उसे वापस भेज दिया।

राष्ट्रीय सेना वालो ने बाहर निकलने का जो रास्ता सोचा था वह एक जगली दलदल के बीच में होकर जाता था। शुरू मे सरकारी सेना ने इस दल दल की तरफ काफी इंतजाम किया था। पर जब सिपाही लोग घुटने-घुटने तक कीचड़ में फँस गये और कई मुकामों पर पानी से भरे गड्ढों मे गिर गये, तो उन्होंने समझ लिया कि कुछ मुकामों को छोड कर इस दलदल मे होकर बाहर जा सकना नामुमकिन है। इन मुकामों पर मजबूत चौकियाँ कायम कर दी गई थी। पर असल मे वह दलदल वैसा भयंकर नहीं था जैसा सरकारी सिपा-हियो ने उसे समझ लिया था। खास कर एक ऐसे आदमी के वास्ते जो अपनी जान बचाने के लिये सब कुछ करने को तैयार हो और जिसकी तमाम उम्र उसी जङ्गल में फिरते-फिरते बीती हो, उसका पार कर सकना कुछ भी मुशकिल न था। कप्तान फोयले और उसके साथी उस जङ्गली दलदल की इच-इच भर ज़मीन को अच्छी तरह से जानते थे।

दूसरे दिन रात के समय जब काफी अँधेरा हो गया मैलार्न के चालीस वीर धीरे-धीरे सरकारी सेना के घेरे की तरफ चले। जब वे सरकारी सिपाहियो से दो-तीन सौ गज दूर रह गये तो उन्होने अपने जूते और मोजे उतार डाले और वे दो हिस्सों में बँट गये। पच्चीस आदमियो का एक हिस्सा कप्तान फोयले के अधीन था और बाकी पंद्रह आदमी जेम्स केसी के साथ थे। टामी मुलन इन दोनो हिस्सो के बीच मे दौड़ता हुआ एक की खबर दूसरे को पहुँचा रहा था। घंटों तक ये लोग बहुत धीरे-धीरे एक कतार मे खिसकते रहे। जैसे ही सर्च-

लाइट की रोशनी उनकी तरफ आती तमाम लोग साँस रोक कर मुर्दे की तरह जमीन पर पड जाते। उनका दम घुटने लगता था और कलेजा मुँह को आता था, तो भी चुपचाप पडे रहने के सिवा और कोई उपाय न था। कुछ देर बाद जब रोशनी हट जाती तो फिर उनको आगे बढने का इशारा किया जाता।

उस रात को गोरिल्लाओ ने जो तकलीफ उठाई उसका वर्णन लिख कर नही किया जा सकता। सबके कपड़े पानी से तर हो गये थे और ठड के मारे शरीर पत्थर हुआ जाता था। चारों तरफ भयकर सन्नाटा छाया हुआ था और बीच-बीच में मशीनगन की तडतडाहट सुनाई देती थी। कितनी ही बार गोलियाँ उनके सरो के ऊपर होकर गुजर गई, और उन्होने समझ लिया कि अब हमारी मौत आ पहुँची।

तो भी उनकी तकदीर अच्छी थी। कई घटे चलते-चलते बीत गये और वे बिना किसी की निगाह में पडे भीतरी घेरे मे से बच कर निकल गये। अब बाहरी घेरे की केवल थोडी सी चौकियाँ बाकी थी। धीरे-धीरे गोरिल्लाओं का पहिला दल उस घेरे के भी बाहर निकल आया और एक पहाडी टीले की ओट में जा पहुँचा। इस समय कही दुश्मन का पता न था। इतने मे टामी मुलन पीछे से दौडता हुआ आया और उसके पीछे दूसरा दल था। दुश्मन के घेरे से बाहर आ जाने की खुशी मे मुलन होशियारी से चलना भूल गया और सरकारी सिपाहियों ने सर्चलाइट की रोशनी से उसे देख लिया। उसी समय मशीनगन की भयकर तडतडाहट सुनाई दी और टामी मुलन बिना मुँह से आवाज निकाले गिर कर मर गया।

अब दूसरे दल को रास्ते मे ही रुकना पडा। वे पहिले तो कुछ घबडाये, पर दूसरे ही क्षण छिपने के लिये आसपास की चट्टानो की तरफ दौड़े। अगर उनको छिपने में जरा भी देर हो जाती तो शायद एक भी आदमी जिन्दा न बचता। क्योकि उसी समय दुश्मन की सेना उस मुकाम पर बदूको और

मशीनगनो से गोलियो की वर्षा करने लगी। इन लोगों ने दुश्मन को जवाब देना चाहा, पर उनके छुपने की जगह ऐसी खराब थी कि वहाँ से उनकी गोलियो का सिपाहियो तक पहुच सकना मुश्किल था। अब खतरा बहुत बढ़ गया और बचने की एक उम्मेद सिर्फ यही थी कि कप्तान फोयले लौट कर उनकी मदद करेगा। इसी उम्मेद पर उन्होंने आखीर तक जम कर लड़ने का पक्का इरादा कर लिया।

सरकारी सेना की गोलियाँ बहुत देर तक चलती रही। एकाएक एक चट्टान के पीछे से किसी अजनबी शख्स की आवाज आई:—

"भाइयो, मै तुम्हारा एक दोस्त हूँ—कैरट। इन दो मिनटों के भीतर मैं तुम पर दस बार निशाना लगा सकता था। अब तुम अपनी मशीनगन का निशाना उस सफेद टीले पर लगाओ और जोरों से गोलियों की वर्षा करो। मै तुम्हारे पास आना चाहता हूँ, पर उस सफेद टीले के पास खड़े सिपाही मुझ पर निशाना लगा रहे हैं, इसलिये तुम फौरन उन पर मशीनगन चलाओ।"

ज़रा देर के लिये केसी जेम्स भौंचक्का सा रह गया। पर उसकी यह हालत ज्यादा वक्त तक न रही और उसने समझ लिया कि इन शब्दों का कहने वाला शख्स कोई भी हो, वह हमारा दोस्त है। क्योकि सचमुच वह उस तरफ से, जिधर से आवाज आई थी, कुछ दिखलाई पड़ता था। उसी समय सरकारी सेना की वर्दी पहिने हुये एक शख्स उसकी तरफ आता दिखलाई दिया। उसके एक कन्धे पर मशीनगन रखी थी और दूसरे कन्धे मे बन्दूक लटक रही थी। वह जल्दी-जल्दी एक जगह से दूसरी जगह कूदता और छिपता हुआ उनके पास आ रहा था। केसी सोचने लगा कि आखिर यह शख्स कौन है और इसका मतलब क्या है? तो भी उसने अपने सन्देह को दबा कर सफेद टीले की तरफ मशीनगन चलाई। पर उसका दिल धड़क रहा था कि कही यह धोखा न देता हो।

उस अजनबी ने फिर कहा—"अब तुम लोग दौड कर उस बडे टीले की तरफ जाओ। मैं सिपाहियो पर गोली चला कर तुम्हारा बचाव करूँगा। जब तुम किसी हिफाजत की जगह में पहुँच जाओ तो सरकारी सेना पर गोली चला कर मेरा बचाव करना। याद रखना कि मै भी तुम्हारे साथ चलूँगा।"

इसी समय सफेद टीले की तरफ से सरकारी सेना की मशीनगन चलने की आवाज आई। अब केसी को उस अजनबी की बात पर कुछ शक बाकी न रहा और उसने अपने आदमियों को बडे पहाड़ी टीले की तरफ दौड़ कर जाने का हुक्म दिया। कुछ ही मिनट मे वे लोग सकुशल उस टीले के पीछे जा पहुँचे। वहाँ पर कप्तान फोयले उनकी राह देख रहा था। केसी ने जल्दी से उसको दो एक बाते समझाई और वे सब मिल कर सरकारी सेना की तरफ गोली चलाने लगे। दो-तीन मिनट के बाद ही वह अजनबी दौडता हुआ उनके पास चला आया।

इस वक्त किसी को इतनी फ़ुरसत न थी कि उस अजनबी से कुछ पूछताछ की जाती। क्योंकि सरकारी सेना गोलियाँ चलाती हुई बराबर पीछा कर रही थी। इसलिये सभी गोरिल्ला तेजी के साथ आगे बढे। इस रास्ते का पता अपने गोरिल्ला के जरिये बडे सेनापति को लग चुका था और उसने जगह-जगह मेलार्न वालों की मदद के लिये अपने आदमी छुपा रखे थे। जैसे ही सरकारी सेना पीछा करती कुछ दूर निकल आई इन छुपे हुये लोगों ने हर तरफ के उस पर गोली चलाना शुरू किया। करीब आध घटे तक लड़ाई होती रही जिसमे सरकारी फौज के कितने ही सिपाही मरे और घायल हुये। तब वे लोग भाग खड़े हुये।

इधर कप्तान फोयले और उसके साथी पहाड़ियों और जगलों में होकर आगे बढते गये। कुछ घन्टे बाद वे कारिङ्ग नामक मुकाम पर, जहाँ इस समय जिले के सेनापति का हैडक्वार्टर उठकर चला आया था, जा पहुँचे। यहाँ पर

उनका स्वागत करने को सेनापति ख़ुद मौजूद था और खाने-पीने का बहुत अच्छा इन्तजाम किया गया था। वह अजनबी भी मेदान वालों के साथ था और सब लोग उसे बड़े ताज्जुब की निगाह से देख रहे थे। बातचीत करने पर मालूम हुआ कि उस दिन उसकी मदद से ही उन पंद्रह वालंटियरो के प्राण बच सके थे। इसके सिवा और भी कुछ बातें ऐसी मालूम हुई जिनसे सबको एतबार हो गया कि वह एक विचित्र आदमी है। दूसरे दिन जब सेनापति वहाँ आया तो वह उसके सामने फौजी कायदे से खड़ा हो गया और सलाम करके बोला:—

"मै समझता हूँ कि आप इस फौज के कर्नल हैं। मैं भी इस झुण्ड मे शामिल होना चाहता हूँ। आप मेहरबानी करके क्वार्टरमास्टर से कह दे कि वह मेरे लिये एक वर्दी तैयार करदे। मेरी वर्दी यहाँ के लायक नहीं है।" कुछ ठहर कर उसने फिर कहा—"आप रजिस्टर में मेरा नाम ओहारा लिख सकते हैं मै कार्क जिले का रहने वाला हूँ।"

उधर सरकारी सेना पहाड़ियों का घेरा डाले पड़ी थी। दूसरे दिन जब सिपाही तलाश करने लगे तो देखा कि वहाँ एक बच्चा भी नहीं है। केवल चालीस जोड़े जूते, कुछ कपड़े और भोजन का थोडा सा सामान उनके हाथ लगा।

———

एक पैदायशी गोरिल्ला

ओहारा के बारे में राष्ट्रीय सेना के वालटियरो में बड़ी चर्चा होती रहती थी। किसी को उसका असली हाल मालूम न था। वे सिर्फ इतना जानते थे कि वह सरकारी फौज से भाग कर आया है। कुछ लोग यह भी कहते थे कि फौज से आते समय एक गोलदाज को मार कर उससे मशीनगन छीन ली थी। पर ओहारा अपने बारे मे बहुत कम बात करता था और उसने अपना पूरा हाल सिर्फ सेनापति को ही बतलाया था। सेनापति ने सब बाते लिख कर डबलिन के हैडक्वार्टर में भेज दी। डबलिन के नेताओं ने उसको राष्ट्रीय गोरिल्ला दल में शामिल करने की मंजूरी दे दी और वह कप्तान फोयले की अधीनता में एक गोरिल्ला बना दिया गया।

इसी बीच में ओहारा दूसरे गोरिल्लाओं मे सर्वप्रिय हो गया। खास कर फादर एमन के साथ धर्म के विषय मे उसकी बहुत बहस हुआ करती थी। फादर एमन उसकी बातो को बहुत गौर के साथ सुना करता और उसके अजीब-अजीब सवालों का यथाशक्ति पूरा उत्तर देने की कोशिश करता था। उसने अनुभव किया कि अगर्चे ओहारा अनपढ है और उम्र भर लडने-भिडने के कारण उसके कोमलता और दया के भाव बिलकुल नष्ट हो गये हैं, तो भी उसमें सचाई कूट कूट कर भरी है। वह एक बालक की तरह निष्पाप है और बराबर इसाफ के रास्ते पर चलने की कोशिश करता रहता है।

गोरिल्ला दल के सभी व्यक्ति उसको बड़ी इज्जत की निगाह से देखते थे। वह सदा हर एक काम करने को तैयार रहता था, कभी लगी-लिपटी बात नही करता था और उसमें डर का नाम भी न था। सब कोई उसे आयरलैंड का

रहने वाला ही समझते थे, अगर्चे बातचीत करते समय वह कितने ही देशों के मुहाविरे बोलता जाता था। एक बार उसने अपनी जिन्दगी का कुछ हाल इस तरह बतलायाः—

"मैं करीब नौ बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में हिस्सा ले चुका हूँ। मेरा बाप आयरलैंड के कार्क जिले का रहने वाला था। वह छै बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में लड़ कर मैक्सिको में मारा गया। मेरे तीन भाई जर्मनी की लड़ाई में अंगरेजों की तरफ से लडते हुये काम आये। मै भी जर्मनी की लडाई मे कितने ही महीनों तक सफेद और काले आदमियों से लड़ा था। मैं चीन मे भी अगरेजों की तरफ से लड़ा था। उसके बाद मैने रूस वालों के साथ मिल कर जापानियो से युद्ध किया। उत्तरी अफरीका की लड़ाई में भी मै शामिल था और कुछ दिनो तक अमरीका की फौज में काम कर चुका हूँ। मेरी तमाम उम्र युद्ध करने मे ही खत्म हुई है और बिना लड़े मुझे चैन नही पड़ता। पर इतना खयाल मुझे जरूर रहता है कि मैं न्याय और सचाई का पक्ष लूँ। मैं जुआ नही खेलता, न शराब पीता हूँ और न कभी औरतों के झगड़े मे पड़ता हूँ। मैं आयरलैण्ड मे सरकार की तरफ से लड़ने को क्यों आया इसमें भी एक भेद है। १९१६ में मैने अमरीका की फौज से नाम कटा लिया और आयरलैण्ड आकर यहाँ की राष्ट्रीय गोरिल्ला सेना में भरती होने की कोशिश करने लगा। पर इस काम में मुझे कामयाबी न हो सकी। राष्ट्रीय सेना वालो ने मुझे सन्देह की निगाह से देखा। मुझे उनकी यह बात बहुत बुरी लगी और मैं रंजीदा होकर इगलैण्ड लौट गया। वहाँ मुझे कुछ पुराने साथी मिले और उनके कहने से मै सरकारी सेना मे भरती हो गया। कुछ समय बाद हमारी पलटन आयरलैण्ड को भेजी गई। हमारा हैडक्वार्टर पुलनमोर मे था। शुरू में मुझे राष्ट्रीय सेना वालो पर बड़ा गुस्सा था और मैंने उनको अच्छी तरह से मारने का इरादा कर लिया था। पर जब मैने इन लोगों के कामों और हिम्मत को देखा तो मेरा खयाल बदलने लगा। खासकर जब हमारी पलटन ने मेलार्न पर हमला किया

और वहाँ का स्कूल-मास्टर, जिसका चेहरा कागज की तरह सफेद था, फौजी सिपाहियों को मार कर भाग गया, तब मेरे ऊपर बड़ा असर पड़ा। उस वक्त मैं पास ही खड़ा था और चाहता तो भागते समय उसको मार सकता था। पर उस दिन अपनी तमाम उम्र मे पहिली बार मैने एक सिपाही की हैसियत से अपना फर्ज अदा नहीं किया। मैंने जान-बूझ कर आठ-दस फैर गलत किये। इसके बाद जैसे जैसे सरकारी सेना वालों की काली करतूतें मेरे सामने आती गई और आम लोगों पर मैने उनको हद दरजे का जुलम करते देखा तो उनसे मुझे बड़ी नफरत हो गई। तब मैंने समझा कि मै अन्याय का पक्ष लेकर लड़ रहा हूँ। अन्त में जिस दिन मैंने दर्जी मोरेन को हँसते हुए गोली से मरते देखा उस दिन मैने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो मुझे राष्ट्रीय सेना में शामिल होना चाहिये। यद्यपि मैं आयरलैण्ड में पैदा नही हुआ, पर मेरा बाप यहीं पर पैदा हुआ था और मैं आयरलैण्ड को ही अपना देश मानता हूँ। अब मेरी इच्छा पूरी हो गई और मैं तुम लोगों के पास मौजूद हूँ।"

सचमुच इस समय वह बहुत सन्तुष्ट और खुश था। वह रात-दिन कड़े कड़ा काम करने को तैयार रहता था और साथ ही चुटकियाँ लेकर और मजाक करके सब को हँसाता भी रहता था। वह हमेशा शात रहता था और कैसा भी खतरा क्यों न आ जाय, कभी घबराता न था।

× × × ×

अब फोयले का दर्जा बढ़ा दिया गया और उसका दल भी पहिले से बड़ा और हथियारो से लैस हो गया। कुछ दिनों बाद वे अपने जिले मे लौट आये और फिर अपना पुराना काम करने लगे। ये लोग सड़को को बराबर काटते रहते थे या इस तरह रोक देते थे कि उन पर सफर कर सकना नामुमकिन हो जाता था। तार-बार-बार काट डाले जाते थे, डाक लूट ली जाती थी और जरा सा मौका लगते ही सरकारी फौज के इधर-उधर जाते हुये सिपाहियों पर

गोलियाँ चलाई जाती थी। सरकारी चौकियों पर हमला करना भी एक मामूली बात थी। राष्ट्रीय सेना वालो का जोर यहाँ तक बढा कि अन्त मे सरकारी सेना वाले धीरे-धीरे उस जिले को छोडने लगे। इन गोरिल्लाओ का मुख्य सिद्धान्त यह था कि हर तरह से सरकारी फौज को तग करना और उसे नुकसान पहुँचाना, पर सामने जमकर कभी न लड़ना। क्योकि बाकायदा सामने लड़कर सरकारी फौज से जीत सकना इन लोगो के लिये नामुमकिन था।

इस समय राष्ट्रीय सेना के गोरिल्लाओ को बहुत ज्यादा मिहनत करनी पड़ती थी और उनमे से कितने हा अधिक परिश्रम के कारण बीमार पड़ गये। घायलो और बीमारों की देख-रेख करना और मरने वालो को गाडना भी एक बडा काम था, और कभी-कभी कठिनाइयाँ इतनी बढ जाती थीं कि पक्के से पक्का आदमी भी घबरा जाता था।

पर दुश्मन की हालत इससे भी खराब थी। धीरे-धीरे सरकारी सिपाहियो की हिम्मत टूटती जाती थी। इधर बराबर तकलीफे सहने के कारण उस जिले के तमाम निवासी पक्के हो गये और अब वे सिपाहियो के हमलों और जुल्मों से जरा भी न डरते थे। इस समय उस जिले की तमाम रैयत एक दिल से छुपे तौर पर राष्ट्रीय सेना वालो की मदद करती थी।

कुछ ही दिनों मे सरकारी फौज का एक बडा हिस्सा मेलार्न और आस-पास के गाँवों को छोड कर दूसरे जिलों मे चला गया जहाँ उनको कामयाबी की ज्यादा उम्मेद थी। अब सिर्फ पुलनमोर की छावनी में सरकारी सिपाहियो का जोर था जहाँ से जरूरत पड़ने पर वे मेलार्न भेजे जा सकते थे। मेलार्न की पुलिस चौकी मे भी थोड़े से अगरेज और आयरिश सिपाही रहा करते थे। पर अब वे राष्ट्रीय सेना वालों से ऐसा डरते थे कि दिन के वक्त भी बहुत कम बाहर निकलते थे। पुलिस की चौकी को चारो ओर से काटेदार तारो से घेर दिया गया था और उसका लोहे का मजबूत फाटक रात-दिन बन्द रहता था।

अब राष्ट्रीय सेना के वालटियरो को कुछ चैन मिला। वे कभी-कभी अपने घर वालों से मिलने को भी जाने लगे। उनका जाहिरा उद्देश्य तो महीनो के बिछुडे हुए घर वालों से मुलाकात करना ही होता, था, पर भीतर ही भीतर वे दुश्मन की हालत का पता भी लगाते थे और जिन मुकामो मे अभी सरकारी सेना की चौकियाँ कायम थी उन पर हमला करने की तरकीब सोचते थे।

× × × ×

उसी जमाने की बात है कि एक दिन जेम्स केसी कुछ वालटियरो के साथ मेलार्न की तरफ जा रहा था। ओहारा भी उनके साथ था। वे लोग गाँव से कुछ दूर थे कि किसी के चीखने की आवाज उनको सुनाई दी। यह आवाज राष्ट्रीय सेना की चौकी की तरफ से आई हुई जान पड़ती थी। केसी ने अपनी दूरबीन निकाल कर देखा, पर कुछ दिखलाई न दिया। उसने कहा:—"हमको पीछे लौट कर देखना चाहिये कि मामला क्या है। यह आवाज जान होरन की चौकी की तरफ से आई हुई जान पडती है।"

ओहारा ने कहा—"मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि जान होरन को किसी ने मार दिया है।"

वे सब तेजी के साथ चौकी की तरफ जाने लगे। वे चारों तरफ निगाह डालते जाते थे कि कही पर दुश्मन छिपे न हों। एकाएक ओहारा ने कहा—"अरे! जल्दी से छुपो।" यह कह कर वह झटपट एक चट्टान के पीछे छिप गया। दूसरे लोग भी उसकी देखादेखी पत्थरों की आड़ में बैठ गये।

"मामला क्या है?" केसी ने पूछा।

ओहारा की आँखे पुलनमोर की सड़क की तरफ लगी हुई थी। उसने हाथ बढाकर केसी से कहा—"जरा अपनी दूरबीन मुझे दीजिये। मैं जानता हूँ कि यह लगडा कर चलने वाला आदमी सिवा 'ब्लैक जैक' के और कोई नही है। तो भी मै शक दूर कर लेना चाहता हूँ।"

केसी ने ताज्जुब से कहा—"ब्लैक जैक! अच्छा मैं देखता हूं।" उसने दूर-बीन से देखा कि एक आदमी काला लबादा ओढ़े हुये झाड़ियों में होकर सड़क की तरफ जा रहा है। उसने कहा—"ओहारा, तुम गलती करते हो। ध्यान देकर देखो वह कोई पादरी है।" यह कहकर उसने दूरबीन ओहारा के हाथ में दे दी।

ओहारा ने कुछ सैकिण्ड तक दूरबीन मे होकर देखा और फिर उसे केसी को लौटाते हुये कहा—"पादरी है! खाक धूल।"

जब तक केसी उसकी इस बेक़ायदे बात का जवाब दे तब तक ओहारा ने अपनी बन्दूक उठाकर बड़ी सावधानी के साथ एक के बाद एक तीन फैर किये। फिर उसने कहा—"निशाना ठीक लगा है। वह यहाँ से ढाई सौ गज की दूरी पर गिरा है। पर तुम लोग अभी बाहर मत निकलना।"

केसी उठकर खड़ा होने लगा और ओहारा को झिड़क कर कहने लगा "देखो ओहारा ....।" उसकी बात पूरी भी न हुई थी कि उसके कान के पास से एक गोली सनसनाती हुई निकल गई। केसी डर के मारे तुरन्त जमीन पर लेट गया। इसी समय ओहारा ने फिर गोली चलाई। तब उसने कहा—"वह मेरी पहली गोली मे नहीं मर सका था। पर मैंने आप से छुपे रहने को कह दिया था। यह शख्स आवाज के ऊपर निशाना मारने वाला था और घायल होने पर भी उसने ऐसा सच्चा निशाना लगाया यह कम तारीफ की बात नही है। पर मेरी अखीर की गोली ने उसका काम तमाम कर दिया और अब हम खुशी से बाहर निकल सकते हैं।"

जब तक ओहारा उठकर कुछ गज तक नही चला गया तब तक दूसरे गोरिल्लाओं को शक बना ही रहा। अगर्चे अब तक के तजुरवे से मालूम हो गया था कि ओहारा का निशाना अचूक होता है और वह यह भी जान जाता है कि उसकी गोली का क्या असर हुआ।

जब ये लोग जान-होरन की चौकी पर पहुँचे तो उसे बिलकुल मुर्दा पाया। किसी ने उसकी खोपड़ी उसी की बन्दूक से तोड़ दी थी। देखने से साफ मालूम

ड़ता था कि उसके जेबो की अच्छी तरह तलाशी ली गई है। बहुत कोशिश रने पर भी यह मालूम न हो सका कि उस पादरी के से कपड़े पहिने हुये ाख्स ने उसको किस तरह बेकाबू कर दिया। उसी रात को उन लोगों ने जाम ारन को दफ़ना दिया।

थोड़ी दूर पर 'ब्लैक जैक' भी मरा पड़ा था। उसका असली नाम कप्तान डब्रिज था और सरकार ने जिन बदमाशों को आयरलैंड के गरीब ोगों पर जुल्म करने और सताने के लिये छोड़ रखा था उनमें यह शख्स ब से ज्यादा भयकर था। ओहारा ने बतलाया कि वह मैक्सिको का रहने वाला ा, और उसने आपस के झगड़ों मे बीसियो लोगों को जान से मार दिया था रकारी सेना में वह एक खास आदमी समझा जाता था। वह कुछ लगड़ा र चलता था और उसकी चाल के सबब से ही ओहारा ने उसको दूर से पहि-ान लिया था। अपने ऐसे भयकर दुश्मन के अचानक मारे जाने से राष्ट्रीय ाना वालों को बड़ी खुशी हुई और वे जान होरन के मरने का दुख बहुत कुछ ूल गये।

× × × ×

अब गोरिल्ला दल का इरादा मेलार्न की पुलिस चौकी पर कब्जा करने का था। पर यह काम सहज न था। यह चौकी गॉव से डेढ सौ गज दूर थी। उसका मकान काले पत्थर का बहुत मज़बूत बना हुआ था। उसमे लडाई और बचाव का बहुत बढिया इतजाम किया गया था। उसके चारों तरफ ॉटेदार तारों का जाल लगा हुआ था। हर एक खिड़की के सामने लोहे की ादरें लगा दी गई थी, जिनमें बन्दूक चलाने के लिये छेद बने हुये थे। यह ात भी अच्छी तरह मालूम थी कि चौकी मे कम से कम बीस आदमी हैं जनके पास काफी गोली-बारूद और दो मशीनगनें हैं।

चौकी को उड़ाने के लिये राष्ट्रीय सेना के हैडक्वार्टर ने एक सुरग भेजने का वायदा किया था। पर किसी सबब से वह न आ सकी और उसके बजाय

बहुत से बम भेज दिये गये। यह साफ़ जाहिर था कि चौकी पर हमला धोखा देकर ही किया जा सकता है। पर सवाल यह था कि धोखा किस तरह दिया जाय। अखीर मे ओहरा ने एक तरकीब बतलाई और बहुत सोच विचार कर सब ने उसको मजूर कर लिया। क्योंकि अब सब लोगों को इस पु ाने गोरिल्ला पर पूरा एतबार हो गया था।

जिस दिन हमला किया जाने वाला था उससे पहिली रात को मेलार्न आने वाली तमाम सड़के पत्थर और कटे हुये पेड़ डाल कर रोक दी गई और उन पर रात भर पैरगाड़ियों पर चढे हुये वालटियर गश्त लगाते रहे। मेलार्न से छै मील की दूरी पर बारबरो नाम का एक फौजी अड्डा था उसके पास वालंटियरों का एक दल छुपा कर बैठा दिया गया। गॉव के एव बाग के भीतर एक मोटरगाड़ी छुपा दी गई और उसका ड्राइवर भी पास हं किसी घर में जा सोया। सुबह के पहिले ही कुछ गोरिल्ला धीरे-धीरे चल क चौकी के पीछे छुप गये। सामने और बगल में जगह-जगह बन्दूक चला वाले छुपा कर बैठा दिये गये। चौकी के दरवाजे के ठीक सामने करीब दो मै गज की दूरी पर एक गढे में मशीनगन रख दी गई।

सुबह होते ही ओहारा अपनी पुरानी सरकारी फौज की वर्दी पहिन क और भरी हुई बन्दूक हाथ मे लेकर पुलिस चौकी के दरवाजे पर पहुँचा। उस थोडी दूर पर दो देहाती लड़कियाँ शाल ओढे और हाथों में दूध का बत लिये हुये आपस मे बाते करती हुई आ रही थीं।

ओहारा ने चौकी के दरवाजे को जोर से खटखटाया। भीतर से को बोला—"आज सुबह ही सुबह कौन कमबख्त आ मरा।" उसके बोलने मालूम होता था कि उसने खूब शराब पी रखी है।

ओहारा ने जवाब दिया—"मैं एक दोस्त हूँ। मै बारबरो की छावनी का सिपाही हूँ। मुझे भीतर आने दो।"

भीतर से आवाज आई—"दोस्त ! झूठा कही का ? इस तरफ हमारा कोई दोस्त नही है।"

कुछ देर तक ओहारा चकराया हुआ वहीं पर चुपचाप खडा रहा। थोडी देर बाद कुछ खड़खड़ाहट की आवाज आई और दरवाजे का एक छोटा सा छेद खुला। ओहारा ने देखा कि दो लाल-लाल आँखे उस छेद मे होकर देख रही हैं। उस लाल आँखों वाले ने पूछा—"इतने सवेरे तू इस तरफ क्यो फिर रहा है ?"

ओहारा ने जवाब दिया—"भाई, पहिले मुझे भीतर आ जाने दो जिससे राष्ट्रीय सेना वालों का डर जाता रहे। पीछे मै तुमको सब हाल बतलाऊँगा।"

वह आदमी बोला—"जरा देर सब्र करो।" यह कह कर उसने सामने की सडक पर इधर-उधर अच्छी तरह देखा। उसे सिवा उन दो देहाती लडकियो के, जो धीरे-धीरे आ रही थी और कुछ दिखलाई न दिया।

उसने ओहारा से कहा—"तू बड़ा गधा आदमी जान पड़ता है, जो इस वक्त अपने मुकाम को छोड कर इधर-उधर मारा-मारा फिर रहा है। मालूम पडता है औरतो के चक्कर मे पडा है।"

अब उसने किवाड़ो को खोलने के लिये पीछे की तरफ धक्का दिया और जोर से जजीर खोल दी। उसने दरवाजे को जरा सा खोला था कि उसको ओहारा का तर्ज देख कर कुछ शक हुआ और उसने चाहा कि दरवाजा फिर से बन्द कर दूँ। पर ओहारा ने शेर की तरह झपट कर उसकी गर्दन मे संगीन मारी जिससे वह बिना आवाज निकाले, जमीन पर गिर गया। उसी वक्त कप्तान कायते और जान हागन जो लडकियाँ बने हुये थे अपनी शाले फेक कर दौडते हुये वहाँ आ पहुँचे। पीछे की तरफ छुपे हुये वालंटियर भी बाहर निकल आये और चौकी के भीतर घुस गये। जरा देर में चारो तरफ से चौकी के ऊपर गोलियो की वर्षा होने लगी।

बम और पिस्तौलो की आवाज सुन कर फौजी सिपाही घबडा कर उठे।

वे सब शराब के नशे म चूर थे। अपने को चारो तरफ से घिरा देख उन्होने बिना लडे-भिडे हार मान ली और अपने हथियार राष्ट्रीय सेना वाल के सुपुर्द कर दिये। पर एक दूसरे कमरे में छै आयरिश पुलिस के सिपाही थे, उन्होंने भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया और लडने लगे। उनके पास एक मशीनगन भी थी।

कुछ ही देर मे मोटरगाडी चौकी के सामने आकर खडी हो गई। वालटियरो ने गोली चलाना बद कर दिया और सिर्फ कुछ आदमी एक खिडकी की तरफ से पुलिस वालों से लडते रहे। जिन लोगों ने हार मान ली थी उनको केसी की निगरानी मे दूर ले जाकर खडा कर दिया गया। फोयले बदूकों, मशीनगन और गोली-बारूद को मोटर पर लदाने लगा। गैमन को चौकी में आग लगा कर उन पुलिस वालो को उसी मे जला देने का काम सुपुर्द हुआ पद्रह मिनट के भीतर चौकी अच्छी तरह जलने लगी और कुछ ही मिनट बा वे छै पुलिस वाले बाहर निकल आये और हाथ ऊँचे उठा कर कहने लगे— "हम हार मानते हैं।"

इस समय आग बहुत बढ गई थी और चौकी के भीतर बराबर धड़ाके हो रहे थे। इसलिये फोयले ने हुक्म दिया कि कोई आदमी बचे हुये सामान को निकालने के लिये भीतर न जाय। इस तरह एक मशीनगन का नुकसान होने से गैनन और ओहारा बड़े नाराज हुये और उन्होंने चाहा कि उन छै सिपाहियों को गोलियों से उडा दे। पर दूसरे लोगों ने बड़ी मुशकिल से उनको रोका। फोयले ने उन पुलिस वालों की हिम्मत की बडी तारीफ की और कहा कि आगे चल कर वे लोग राष्ट्रीय सेना मे मिल कर अपने देश के लिये लडे। कुछ देर बाद गुस्सा ठडा हो जाने पर गैनन भी अपने बर्ताव पर शर्मिंदा हुआ। पर ओहारा बहुत देर तक इसी बात पर अडा रहा कि उन पुलिस वालों के साथ जरा भी मेहरबानी नही करनी चाहिये थी।

बम और बदूको की आवाज से दूसरे मुकामों की सरकारी फौज को मेला-

चौकी पर हमला होने का पता लग गया और वे फौरन मोटरलारियों मे
तरफ रवाना हुये । पर तमाम रास्ते बद थे और जगह-जगह राष्ट्रीय गोरिल्ला
न पर हमला करने को छुपे बैठे थे । इसलिये उनको मेलार्न तक पहुँचने मे
घटे लग गये । अखीर में जब वे वहाँ पहुँचे तो उनको सिवा एक टूटे-फूटे
कान के कुछ न मिला । उसी मकान में वे बीस सिपाही परेशान हालत मे
धे नगे और डरे हुये बैठे थे । उनके पास एक लाश भी पड़ी थी ।

सरकारी फौज दिन भर गोरिल्लाओं को ढूँढती हुई फिरती रही । आसपास
गाँवो के कितने ही लोग सदेह में पकड़े गये । पर इसकी परवा न करके उस
त को मेलार्न के कितने ही घरो मे खुशी मनाई गई और सब लोगों ने फादर
मन के साथ प्रार्थना पढ कर ईश्वर को धन्यवाद दिया । लोगो के दिल आत्म-
रव से भरे हुये थे और गोरिल्लाओ के लिये, जो उनके ही भाई, बेटे थे, सब
आँखो से प्रेम के आँसू बह रहे थे ।

———

एक ख़तरनाक यात्रा

मेलार्न की पुलिस-चौकी के जलाये जाने और कप्तान एडविज के मारे जाने की खबरों से सरकारी अफसरों में बड़ी खलबली मच गई। उस जिले का सेनापति तो गुस्से के मारे पागल हो रहा था। खासकर कप्तान एडविज का मारा जाना बड़ी भारी बात समझी जाती थी। कप्तान एडविज सरकारी फौज के जासूसी महकमे का एक खास आदमी था और उसने कई जिलों मे घूम फिर कर बड़ी चालाकी से वहाँ के गोरिल्ला दलों का पूरा-पूरा भेद मालूम कर लिया था। इस सबब से डबलिन में रहने वाले बडे हाकिम भी उसकी इज्जत करते थे। सब लोग समझते थे कि जब वह लौट कर आवेगा तो उसके अखत्यार बहुत बढ़ा दिये जायँगे और सेना को उसी की राय से काम करना पड़ेगा। ज़्यादातर फौजी अफसर दिल से उसके खिलाफ थे। क्योंकि ओहदे में छोटा होने पर भी उसका ताल्लुक सीधे डबलिन के हाकिमो से रहता था। इसके सिवा वे लोग उसके स्वभाव से भी डरते थे और जब तक वह पास रहता था किसी की हिम्मत खुल कर बात करने की नहीं होती थी।

पर इन बातों के साथ ही स्थानीय अफसरों और डबलिन के हाकिमो को उसकी लियाकत पर पूरा भरोसा था और वे जानते थे कि वह हर एक भले और बुरे उपाय से राष्ट्रीय सेना वालो को बर्बाद करने को तैयार रहता है। इसलिये जब उन्होंने उसकी लाश को देखा जिसकी छाती और सर में गोलियों के घाव थे तो उनको बड़ा रज हुआ और गुस्सा भी आया। फिर जब मेलार्न के थाने के जलाये जाने की खबर आई तब तो उनके गुस्से का पारा बहुत ऊपर चढ गया। सरकारी सिपाही इन घटनाओ का बदला लेने को उतावले

ने लगे। पर अफसरों ने उनको कड़ा हुक्म देकर जल्दबाजी करने से रोका। र 'ब्लैक एण्ड टैंस' (कृष्ण घातकों) के दल को रोक सकना नामुमकिन ा। दिन के वक्त तो वे जैसे-तैसे चुपचाप रहे, पर रात होते ही उन्होने मेलाने र हमला किया और कितने ही खलिहानो, मकानों और दुकानो में आग गा दी। राष्ट्रीय सेना वालों ने पहिले से ही सब लोगों को होशियार कर दिया ा और सिवा एक बुढिया और एक अपाहिज आदमी के सब लोग पहाडियों ं भाग गये थे। सिपाहियों ने उस बेकसूर अपाहिज को सगीनों से मार डाला।

सिपाहियों ने घरों मे से लूटी हुई शराब दिल खोल कर उडाई। वे ऐसे मदहवास हो गये थे कि अगर उनकी तादाद बहुत ज्यादा न होती तो एक भी आदमी भी राष्ट्रीय गोरिल्लाओं के हाथ से बच कर जा सकना मुशकिल था। जब वे लोग लौट कर अपनी छावनी को जाने लगे तो उन्होने एक जगह देखा कि गोरिल्ला दल वालों ने बड़े-बडे पत्थर डाल कर सडक को रोक दिया है। जैसे ही वे पत्थरों को हटाने के लिये मोटरलारियों से बाहर आये कि राष्ट्रीय सेना वालो ने पहाडी पर से उन पर गोलियाँ चलानी शुरू की। नेड गैनन ने चट्टान के पीछे से एक बम ऐसा फेका कि एक गाड़ी बिलकुल चूर-चूर हो गई और दूसरी टूट फूट गई। इस टूटी हुई गाडी के सिपाहियों पर फोयले और उसके साथियों ने बन्दूकों और मशीनगन से खूब गोलियाँ चलाई। उधर ओहारा अकेला एक ऊँची जगह पर बैठा हुआ चुन-चुन कर निशाना लगा रहा था। फौजी सिपाहियों ने गोरिल्लाओं का जम कर मुकाबला करने की हिम्मत न की और ज्योंही सड़क साफ हुई वे लोग टूटी हुई मोटर लारी को छोड़ कर बडी तेजी के साथ भाग गये। मालूम नही कि जब सरकारी अफसरो को अपने घायल और मारे गये लोगों की तादाद मालूम हुई होगी तो वे उस रात की कार्रवाई पर कैसे खुश हुये होंगे? डबलिन के हाकिमों के पास यह खबर खूब घटा कर और बदल कर भेजी गई थी।

गोरिल्ला दल के भी कुछ आदमी मरे और घायल हुये थे। पर इसके लिये किसी को ज्यादा रज न था, क्योंकि सब को मालूम था कि सरकारी फौज के हम से बहुत ज्यादा आदमी मरे हैं। बाद में उन्होंने अपने दोनों मुर्दों को दफना दिया। पर इस बार उनको चोरी से रात में नहीं दफनाया गया, बल्कि दिन में खुल कर यह काम किया गया। उस मौके पर राष्ट्रीय सेना के वालन्टियरों ने फौजी कायदे के मुताबिक उनकी इज्जत करने के लिये बन्दूकों की बाढ़े दागी।

× × × ×

कुछ दिनों बाद राष्ट्रीय सेना के हेडक्वार्टर की तरफ से उस जिले के सेनापति के पास खबर आई कि वह एक ऐसे जिम्मेवार शख्स को डबलिन भेजे जो मेलार्न के गोरिल्ला दल की कार्रवाइयों का पूरा हाल बतला सके। सेनापति ने इस काम के लिये जेम्स केसी को सब से अच्छा आदमी समझा। क्योंकि उसने तमाम लड़ाइयों में हिस्सा लिया था और वह काफी पढ़ा-लिखा और समझदार आदमी था। सेनापति ने डबलिन जाने का तमाम इन्तजाम उसको समझा दिया। उसने केसी से कहा—"तुम एक सौदागर के एजन्ट के रूप में डबलिन जाओ। ये तुम्हारे बेचने की चीजों के नमूने और कागज-पत्र हैं। तुम इन सब को अच्छी तरह पढ कर समझ लेना। तुम अपना नाम राबर्ट हेयर बतलाना।

उस रात को वह चुपके से मोटरगाडी में बैठ कर एक दूसरे कस्बे में चला गया और वहाँ एक होटल में जाकर ठहरा। दूसरे दिन उसे डबलिन जाने की रेल मिली। अचानक उसने देखा कि उसके डिब्बे में एक बुड्ढा सौदागर बैठा है जिससे एक साल पहिले वह पुलनमोर में मिला था। उसका नाम एडवर्ड चिङ्गली था और वह एक बड़े कारखाने की तरफ से एजन्ट का काम करता था। राजनैतिक विचारों की निगाह से उसे सब लोग नर्म दल वाला समझते थे। केसी नहीं चाहता था कि चिङ्गली उसे पहिचाने या उससे

बातचीत करे। पर वह खुद उठ कर उसके पास आ बैठा और हँस कर बोला --"कहिये जनाब, क्या हाल है ? बहुत दिनों बाद आपसे मुलाकात हुई।"

दोनों में बहुत देर तक मामूली बातचीत होती रही। आखीर मे देश की मौजूदा हालत का जिक्र छिड़ा। चिङ्गली ने कहा—"बडी खराब हालत है। न मालूम इस देश की क्या दशा होने वाली है। व्यापार रोजगार तो चौपट हो गया। चारों तरफ तबाही ही तबाही नजर आती है।"

केसी ने भी चिङ्गली की बात का समर्थन किया, पर उसके दिल मे बड़ी धुकड़ पुकड़ हो रही थी। जब मिस्टर चिङ्गली राष्ट्रीय सेना वालों के कामों की बुराई करने लगे तो केसी को बड़ा डर लगा। पर थोड़ी देर बाद बातचीत का रुख दूसरी तरफ फिरा और केसी का डर जाता रहा।

आगे चलकर जब एक जंकशन पर गाड़ी बदली जा रही थी तो केसी ने देखा कि फौजी सिपाही सब लोगो की तलाशी ले रहे हैं और उनसे सवाल-जवाब कर रहे हैं। उसको डर लगा कि कही मेरा भेद न खुल जाय। अभी सिपाही कुछ दूर ही थे कि मि० चिङ्गली ने जल्दी से पूछा—'तुम्हारा नाम मि० केसी है या और कुछ ? अगर कोई झगडा पैदा होगा तो मै सब ठीक कर दूँगा। नाम क्या है ?"

केसी के ताज्जुब का ठिकाना न रहा। वह जैसे-तैसे अपने को सम्हाल कर बोला-"मेरा नाम राबर्ट हेयर है और मैं मैकफैरिस कम्पनी का एजण्ट हूँ।"

"ठीक है" चिगली ने शातिपूर्वक कहा। इसी समय एक फौजी अफसर वहाँ आ पहुँचा। चिङ्गली ने बड़े तपाक के साथ उससे हाथ मिलाया और कहने लगा—"कहिये मेजर साहब, आपकी लड़ाई का क्या हाल है ?

मुझे पूरा यकीन है कि आप कुछ ही दिनो मे इन बागियों को पूरा तरह से दबा देंगे।"

वह अपना हैण्डबेग हाथ मे लेकर बड़े दोस्ताना तरीके से मेजर के साथ बातचीत करने लगा। उधर दूसरा अफसर केसी के कागज-पत्रों और सामान की जॉच कर रहा था। उस अफसर को केसी के जवाबो पर एतबार न हुआ और उसने साफ तौर पर अपना शक जाहिर किया। घबराहट के कारण केसी के मुँह से कोई बोल न निकली। इतने में बात करते-करते मि० चिङ्गली ने पीछे की तरफ मुड कर कहा "मेजर साहब, मै अपने दोस्त मि० राबर्ट से आपकी पहिचान कराना चाहता हूँ। राबर्ट, उठ कर मेजर टिसडन से हाथ मिलाओ। ये बगावत के दबाने में बड़ा काम कर रहे हैं।"

मि० चिङ्गली के कहने मे कुछ ऐसा असर था कि जॉच करने वाले अफसर ने बिना ज्यादा बातचीत किये केसी के कागज-पत्र मेजर के हाथ में दे दिये। मेजर ने उन पर एक निगाह डाली और फिर उन्हे केसी को लौटा कर उससे बड़ी खुशी से हाथ मिलाया।

कुछ देर ठहर कर मि० चिङ्गली ने कहा—"अच्छा मेजर साहब, अब हम गाडी पर सवार हों? अच्छी तरह रहना।"

वे दोनो एक खाली डिब्बे मे जाकर बैठ गये। थोड़ी देर बाद जब गाडी चलने लगी तब मि० चिङ्गली ने कहा—"अच्छा मि० राबर्ट, अब मेरे बारे मे तुम्हारी क्या राय है?"

केसी ने एहसान का भाव दिखलाते हुये कहा—"अब मुझे कुछ नहीं कहना है।"

चिङ्गली कहने लगे—"क्या तुम समझते हो कि मै तुमको नही पहिचानता? मुझे सब बातें मालूम है। तुम पहिले मेलार्न गॉव मे स्कूल-मास्टर थे और अब राष्ट्रीय सेना में एक अफसर हो। मैं भी तुमको अपने बारे में एक छुपी

हुई बात बतलाना चाहता हूँ। मे राष्ट्रीय सेना में शामिल हूँ। अगर्चे मैं लड़ने-भिडने के काम मैं हिस्सा नही लेता, पर मै ऐसे-ऐसे गुप्त कागज-पत्र एक जगह से दूसरी जगह ले जाता हूँ जिनके बदले में सरकार लाखों रुपये दे सकती है। इसके सिवा मै और भी कई तरह के काम करता हूँ। मैं चालीस साल तक तमाम देश मे सफर करता रहा हूँ और जहाँ कहीं जाता हूँ वहाँ सरकारी अफसरों से दोस्ती कर लेता हूँ। मेरी यह दोस्ती इन दो सालों में बड़े काम की चीज साबित हुई है। तुमको ताज्जुब होगा कि मैं ये सब बातें तुमको क्यों बतला रहा हूँ। पर मुझे तुम्हारा भेद अच्छी तरह मालूम है और मैं जानता हूँ कि तुमसे बातचीत करने मे किसी बात का खटका नही है। फिर मेरे जैसे बूढे बातूनी आदमी के लिये कभी-कभी मन की बात खोल कर कह देना जरूरी है, नहीं तो बहुत भेद इकट्ठा हो जाने से पेट फट जाने का डर रहता है!"

उसकी बातों से यह भी मालूम हुआ कि उसने केसी को कई बार पुलनमोर में राष्ट्रीय सेना के अफसरों के साथ देखा था। वह उसे पहिले से जानता था, इसलिये उसे इस बारे में पूछ ताछ करने की इच्छा हुई और एक दोस्त से सब बातें मालूम हो गई।

जब गाड़ी समुद्र के किनारे पहुँची तो मि० चिंगली ने केसी के साथ होटल में खाना खाया। उसकी बातचीत से केसी को जान पड़ा कि उनका आयरलैण्ड के प्रति अपार प्रेम है। पिछले पचास सालों से वहाँ के देशभक्त अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र करने के लिये जो बलिदान कर रहे हैं उसका जिक्र करते-करते चिंगली की आँखों में आँसू भर आये। वे एक दार्शनिक विचारों के पुरुष थे और हमेशा ठंडे मिजाज से बातचीत करते थे। पर जब वे गरीब आयरलैण्ड वासियों पर हर रोज किये जाने वाले जुल्मों की याद करते थे तो कभी-कभी उनके दिल मे बड़ा गुस्सा पैदा होता था। उस वक्त वे क्रोध में भर कर कहते थे कि—"जब कभी मैं इन बदमाश 'ब्लैक एण्ड टैंस दल

वालों की करतूतों को सुनता हूँ तो मेरे मन में ऐसा आता है कि उनको गला दबा कर मार डालूँ और उनकी बोटी बोटी काट कर फेंक दूँ। हरामजादे, बिना कसूर ग़रीब भाइयों पर जुल्म कर रहे हैं।" फिर वे रज भरी हँसी के साथ कहते—"पर मैं हमेशा अपनी इस इच्छा को दबा देता हूँ।"

जब वे दूसरे जकशन पर पहुँचे तो फिर उनकी तलाशी ली गई। पर यह तलाशी नाममात्र की थी, क्योकि तमाम फौजी अफ़सर मि० चिंगली को पहिचानते थे और उनके रोबदार तथा गम्भीर चेहरे को देख कर किसी को उन पर शक नही होता था। मि० चिंगली जाहिर में बड़ी राजभक्ति दिखलाते थे और जब फौजी बैण्ड बाजा इङ्गलैण्ड का जातीय गीत बजाता तो बड़ी खुशी जाहिर करते थे। उनकी इन बातों को देख कर किसी को स्वप्न में भी यह खयाल नही आता था कि यह शख्स बागियों से मिला होगा।

जब ये लोग डबलिन के स्टेशन पर पहुँचे और अलग होने लगे तो मि० चिंगली ने केसी को अपना प्राइवेट कार्ड दिया और हाथ मिलाते हुये कहा—"मि० राबर्ट, जब तक तुम इस शहर में हो, अगर फ़ुरसत मिले तो कभी-कभी मुझसे मिलते रहना। तब तक के लिये सलाम।"

थोड़ी देर बाद केसी एक होटल में जाकर ठहर गया। इसी होटल मे ठहरने की उसको हिदायत की गई थी। अगर्चे जाहिर मे उसने किसी से कुछ नही कहा, पर वहाँ के रंग-ढग से वह समझ गया कि मै दोस्तों के बीच मे हूँ। शाम के वक्त उसे एक आफिस मे जाने के लिये बतलाया गया था, पर जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे बन्द पाया। मालूम हुआ कि उसके खुलने में भी अभी दो घंटे की देर है। केसी सोचने लगा कि इस बीच में क्या काम किया जाय। उसे याद आया कि पास ही मे एक थियेटर है, वहाँ आज एक बहुत अच्छा देशभक्ति पूर्ण नाटक होने का नोटिस उसने देखा था। जब वह थियेटर में पहुँचा तो खेल शुरू हो चुका था। नाटक दरअसल बहुत ऊँचे दर्जे का था और खेलने वाले भी बड़े होशियार थे। पर केसी को जान पड़ा कि उसके आस-

पास के लोग नाटक को न देख कर किसी दूसरी चीज़ को देख रहे हैं और बड़े जोश में मालूम पड़ते हैं। पहिले तो वह कुछ न समझ सका, पर कुछ देर बाद उसने दो नौजवानों को चुपके-चुपके बात चीत करते सुना। एक ने दूसरे से धीरे से कहा—"वह काले बालों वाला आदमी, जो खम्भे के दाहिनी तरफ़ बैठा हुआ है।" दूसरे ने हँसते हुये जवाब दिया—"वह बड़ा आदमी है।" इसी वक्त दूसरा सीन शुरू हुआ और रोशनी बुझा दी गई। इससे केसी उस आदमी को अच्छी तरह न देख सका। जब इंटरवल हुआ तब वह आदमी को अच्छी तरह देख पाया। वह एक हट्टा-कट्टा, कटी हुई मूँछों वाला हँसमुख नौजवान था। उसके बदन में फुरती कूट-कूट कर भरी हुई थी। वह अगर्चे लापरवाही के साथ बैठा था, पर उसके बैठने का ढङ्ग ऐसा था जैसे कि एक बैठा हुआ शेर मौक़ा पाते ही झपटने को तैयार रहता है।

केसी ने अपने पास बैठे हुए नौजवान से पूछा—"वह शख्स कौन है?"

नौजवान ने रूखेपन से कहा—"माफ कीजिये, मैं नहीं जानता।"

रङ्ग ढङ्ग से केसी समझ गया कि उसका सवाल आस-पास के लोगों को बहुत बुरा लगा है। इससे उसकी उत्सुकता और ज्यादा बढ़ गई। उसे भी मालूम हो गया कि ज्यादातर तमाशबीन आदमी को पहिचानते हैं, पर अब किसी से इस बारे में पूछताछ करना बेवकूफी थी।

पर उस नौजवान शख्स का खयाल केसी के दिल से किसी तरह दूर न हो सका। इसलिये जब थियेटर खत्म हो गया तो उसने उसके पास जाने की कोशिश की। पर लोगों की धक्कमधक्का में आगे बढ़ सकना बिलकुल नामुमकिन था। जब वह थियेटर के बाहर आया तो फिर तेजी से उस शख्स की तरफ बढ़ा। इतने में किसी ने उसके मुंह पर ऐसे जोर से घूँसा मारा कि वह चक्कर खाकर वहीं खड़ा रह गया। थोड़ी देर बाद जब वह सम्हला तो उसकी उत्सुकेता को बढाने वाला नौजवान निगाह से ओझल हो गया था। उस भीड़ में मारने

वाले का पता लगा सकना भी नामुमकिन बात थी। इसलिये वह चुपचाप अपने होटल की तरफ़ चला आया। आज की घटना से उसे दुनिया के ढङ्गों का एक नया तजुर्बा हुआ।

वह रात भर आराम से सोता रहा। बीच मे कभी-कभी बदूकों के चलने की आवाज सुनाई दे जाती थी। सुबह नाश्ता करने के बाद वह फिर उस आफिस की तरफ चला। इस बार भी उसे बहुत देर तक बाहर ठहरना पड़ा। अखीर मे उसे एक वृद्ध सज्जन के सामने पेश किया गया जिसके चेहरे से दया और मिलनसारी का भाव साफ़ झलक रहा था। उसने बड़े गौर से केसी के प्रमाणपत्रों की जॉच की। ये काग़जात अभी तक केसी की कमर मे छुपे हुये थे। इसके बाद उसने एक नौजवान शख्स को बुलाया और केसी से कहा—"आप इनके साथ जाइये, ये आपका इतजाम कर देंगे।"

कई दिन तक केसी तरह-तरह के कामो मे लगा रहा। इस बीच मे उसने हर एक महकमे के अफसरों से बातचीत की, खास-खास नेताओं के साथ उसकी मुलाकात कराई गई और कई लैकचरों को उसने सुना। इन लैकचरो में बतलाया गया था कि हम किन तरकीबो से दुश्मन का मुकाबला अच्छी तरह कर सकते हैं। इन्ही दिनों में एक बार नई चाल की थाम्पसन मशीनगन की जॉच करके दिखलाई गई और बतलाया गया कि किस तरह उसको अलग-अलग हिस्सों मे कर लिया जाता है और फिर किस तरह तमाम हिस्सो को जोड़ा जाता है। यह मशीनगन अब तक की दूसरी मशीनगनो से बहुत भयंकर थी।

इन नेताओं में केसी उस नौजवान शख्स से भी मिला जिसे थियेटर में देख कर वह इतना उत्सुक हो गया था। जब उसने केसी के मुँह से उस दिन का हाल सुना तो वह खिलखिल कर हॅसने लगा। उसने केसी को बतलाया कि मुझे इस बारे मे किसी बात का पता नही है।

केसी को सबसे ज्यादा ख़ुशी यह देखकर हुई कि राष्ट्रीय सेना के हैडक्वार्टर

का काम बडे कायदे के साथ होता है। एक तरफ तो सरकारी फौज हैडक्वार्टर के काम करने वालों को पकड़ने के लिये छोटी छोटी गलियो और शहर के बाहर बसी हुई बस्तियो पर हमला करती फिरती थी और दूसरी तरफ राष्ट्रीय सेना के नेता बीच बाजार मे बने हुये किसी बड़े मकान मे अपना काम करते रहते थे। सरकारी अफसरों को इस बात का खयाल भी न था कि राष्ट्रीय सेना वाले ऐसी आम जगहों मे अपनी कमेटी और दूसरे काम करते होगे। इन मुकामो मे वे लोग हमेशा नियमपूर्वक अपना काम करते थे जिनके नाम अब इतिहास मे लिखे जा चुके हैं और जिनकी गिरफ्तारी या मौत के लिये सरकार मुँह माँगा इनाम देने को तैयार थी। ये लोग शाम के वक्त खुले तौर पर बाजार में निकलते थे जहाँ हजारों आदमी उनको पहिचानते थे, पर कभी किसी ने इस को जाहिर नहीं किया।

× × × ×

जिन दिनों केसी डबलिन मे था उस समय मेलार्न में उसके साथी बराबर अपना काम कर रहे थे। उस जिले के राष्ट्रीय सेनापति ने एक बार मेलार्न से पुलनमोर तक की तमाम छोटी-छोटी पुलिस की चौकियो पर हमला किया। अगर्चे इन हमलों मे ज्यादा कामयाबी नही मिली, पर सरकारी अफसर समझ गये कि मेलार्न के गाँव मे अब उनके कदम जम नही सकते। इसलिये उन्होने वहाँ से अपने सिपाही बिलकुल हटा लिये और इस तरह यह गाँव बहुत बरसों के बाद विदेशी हुकूमत के बन्धन से छूट कर आज़ादी की हवा में साँस लेने लगा।

केसी ख़ुशी-ख़ुशी अपना काम खतम करके मेलार्न में वापस आ गया। लौटते समय रास्ते में कोई खास घटना नहीं हुई। दो जगह सरसरी तौर पर उसकी तलाशी ली गई। एक बार सरकारी सिपाहियों द्वारा और दूसरी बार राष्ट्रीय सेना की हद मे घुसने पर।

युद्ध और प्रेम

---:o:---

जब मेलार्न से सरकारी सेना की चौकी उठा ली गई तो वहाँ पर सरकारी कानून का जोर भी नही रहा। सिवा उन मौको के जब कि फौज का कोई बड़ा दल आकर लोगो को तग करता था, कोई सरकारी हुकूमत को नही मानता था।

इस समय सब लोगों के दिलों में एक नये उत्साह और प्रसन्नता का भाव पैदा हो रहा था। अब तक राष्ट्रीय दल की अदालत अपना काम छुप कर करती थी। अब सरकारी फौज के हट जाने से उसमें खुल्लमखुल्ला हर तरह के मुकदमों का फैसला किया जाने लगा। लोग समझते थे कि इस वक्त इन्साफ का काम पहिले से अच्छी तरह चलाना हमारा फर्ज है। इसलिये हर खयाल के आदमी इस काम में राष्ट्रीय दल वालो की मदद करते थे। राष्ट्रीय दल वाले भी इस बात की बड़ी कोशिश करते थे कि किसी के साथ वेइसाफी न हो और लोग ग़ैर कानूनी तरीके से न चलने लगें।

जो लोग इस बड़ी जिम्मेवारी के काम को करने के लिये चुने गये थे, वे बड़े लायक और ईमानदार आदमी थे। इनमें फादर एमन भी शामिल था, जिसे सरकार ने कुछ दिनों तक कैद रख कर छोड़ दिया था। उसकी मिहनत से राष्ट्रीय अदालत का इन्तजाम बड़ा अच्छा रहता था।

जिस दिन वह राष्ट्रीय अदालत मेलार्न में खोली गई उस दिन बड़ा जलसा किया गया। सब लोग उम्मेद करने लगे कि अब एक नया युग आने वाला है जब कि परदेशी लोग किसी तरह की वेइसाफी या जुल्म नहीं कर सकेंगे। कुछ घरों मे लड़ाई में अपने रिश्तेदारों के मारे जाने या सम्पत्ति के नष्ट हो

जाने के लिये रंज भी किया जाता था। पर साथ ही इस खयाल से कि हमारे तकलीफ उठाने से देश की आजादी मे मदद मिली है, वे लोग एक तरह का गर्व अनुभव करते थे।

उस दिन शाम को जब राष्ट्रीय सेना के तमाम गोरिल्ला फौजी कायदे के साथ कंधो पर बंदूकें रख कर निकले, तो जोश का तूफान आ गया। छोटे-छोटे लड़के गला फाड़ कर चिल्ला रहे थे। बड़ी उम्र के आदमियों की आँखे हर्ष और अभिमान से चमक रही थी और बहुत दिनों के बाद आज वे खुल कर मन की बातें कर रहे थे। गोरिल्लाओ में किसी का लड़का, किसी का भाई, किसी का रिश्तेदार और किसी का दोस्त था। सब लोग उनको देख-देखकर प्रेम के आँसू बहा रहे थे और उनकी मंगल-कामना कर रहे थे।

रात के वक्त उस दिन की खुशी मैं नाच का जलसा किया गया, जिसमे युवकगण सुबह तक अपनी प्रेमिकाओं के साथ नाचते रहे। उस दिन जलसे मे कितनों ही का व्याह-शादी पक्का हुआ और कितनों ही की मामूली जान-पहिचान प्रेम के रूप मे बदली। आखीर मे जब गाँव के पुराने मास्टर जेम्स केसी ने 'सिपाहियों का गाना' गाया और सब गोरिल्ला भी उसके सुर मे सुर मिला कर गाने लगे तो वहाँ एक भी आदमी ऐसा न था जिसके दिल में आयरलैण्ड और राष्ट्रीय सेना वालों के लिये श्रद्धा का भाव न पैदा हुआ हो। अगर कोई आदमी ऐसा होगा भी तो उस समय उसने अपने मन का भाव जाहिर नहीं किया।

फोयले और केसी भी उस जलसे में शामिल हुये थे और बड़े खुश दिखलाई पड़ते थे। पर उनकी खुशी मे कुछ रंज का भाव छुपा हुआ था जो दूसरे लोगो को मालूम नहीं पड़ता था। इस रंज का एक खास सबब था। जब से ये लोग राष्ट्रीय सेना के काम से बार-बार पुलनमोर जाने लगे थे, उनका दो नवयुवतियों से प्रेम हो गया था। इनमें से एक का नाम था कैथलीन और दूसरी का एली। ये दोनों मिसेज हेनली नामक विधवा की लड़कियाँ थीं।

मिसेज हेनली की एक कपड़े की दूकान थी जो खूब चलती थी। आज उन दोनों ने वायदा किया था कि हम अपने भाई टाम के साथ जलसे में आयेगी। पर किसी सबब से वे न आ सकी और यही केसी और फोयले के रंज का सबब था।

फोयले ने केसी से कहा—"मालूम होता है कि उनके न आ सकने का सबब टाम ही है। वह शराब के नशे मे चूर हो गया होगा और इसीलिये उनको न ला सका।"

यहाँ पर टाम हेनली के बारे मे भी कुछ बतलाना जरूरी है। करीब एक साल पहिले तक वह पुलनमोर का सबसे मशहूर फुटबाल खेलनेवाला और ताकतवर नौजवान था। राष्ट्रीय सेना से भी उसका ताल्लुक था और वह इस काम मे काफी मदद दिया करता था। उसका स्वभाव बड़ा हँसमुख था और सब लोग उसे प्यार करते थे! उस समय तक उसके चालचलन मे किसी तरह का ऐब न था। इसके बाद वह एकाएक शराब की तरफ झुका और उसमें पड़ कर सब कामो को भूल गया। कुछ लोग कहते थे कि उसके इस बदलाव का सबब यह था कि उसका अपनी प्रेमिका नेली बरनन से झगड़ा हो गया था। पर इस बात में बहुत कम सचाई थी। आजकल वह हद से ज्यादा शराब पी कर अपनी तन्दुरुस्ती और घर के पैसे को बर्बाद कर रहा था। उसके सबब से उसकी माँ का कारबार भी चौपट हो रहा था। फोयले और केसी जब कभी अपनी प्रेमिकाओ से मिलने जाते, तो उनको ऐसा मालूम होता था कि टाम के सबब से उसका तमाम घर बडी तकलीफ मे है। उसकी मा और बहिने इस बारे मे बाहरी लोगों से बातचीत करना पसंद नही करती थी और जब टाम को समझाया जाता तो वह चिल्ला कर कहने लगता था—"तुम लोग अपना काम देखो।"

× × × ×

दूसरे दिन फोयले और केसी अपने गोरिल्लाओं को पहाड़ी के भीतर

छावनी में भेज कर पैरगाड़ी पर पुलनमोर की तरफ रवाना हुये। उनको सेनापति से कुछ जरूरी बातें करनी थीं और साथ ही मिसेज हेनली के घर जाने का भी इरादा था। कस्बे में पहुँच कर उन को पता लगा कि सेनापति से शाम के वक्त मुलाकात हो सकेगी। इसलिये दोपहर के वक्त वे मिसेज हेनली के यहाँ पहुँचे। उस वक्त दुकान खरीदारों से भरी हुई थी और कैथलीन दूसरे नौकरों के साथ सौदा बेचने का काम कर रही थी। उससे बातचीत कर सकना नामुमकिन देख कर वे एली से मिलने के लिये रसोई घर मे गये। पर वहाँ भी सिवा एक बुड्ढी नौकरानी के और कोई न था। उस नौकरानी ने बतलाया कि–"आज मा की तबियत कुछ खराब है और एली ऊपर के कमरे में उसकी सेवा में लगी हुई है।"

थोड़ी देर बाद एली नीचे आई और कुछ सकोच के साथ बात करने लगी। जब फोयले ने उस से पूछा कि वह रात को नाच के जलसे में क्यो आई, तो वह कुछ जवाब न दे सकी और उसके चेहरे से बड़े दुःख का भाव जाहिर होने लगा। यह देख कर फोयले ने केसी से कहा–"केसी, तुम इस वक्त जाओ। मैं तुम से कुछ देर बाद मैथ्यू के मकान पर मिलूँगा। मैं एली से अकेले में कुछ बात करना चाहता हूँ।"

दुकान से जाते समय केसी, कैथलीन से मिला और कहा–"जब फुरसत होगी तो मैं फिर तुमसे मिलने आऊँगा।"

घन्टे भर बाद फोयले भी आ पहुँचा। वह बड़े गुस्से में था। केसी के पूछने पर उसने कहा–"मैंने एली को तमाम बाते साफ साफ कहने के लिये बहुत दबाया। उससे मुझे मालूम हुआ कि यह तमाम खराबी उस बदमाश टाम के सबब से है। पिछले महीने से उसका शराब पीना बहुत बढ़ गया है और वह हर रोज रात को शराब पीकर घर में बड़ा दंगा फसाद मचाता है। वह रुपये के लिये घर वालों को बहुत तग करता है और उसके कामों से तीनो मा बेटी बड़ी दुखी हो रही हैं। कल वह दुकान की सन्दूक में से तमाम रुपया

निकाल ले गया। जब मा उसको समझाने लगी तो टाम ने उसे एक सन्दूक पर ढकेल दिया। अगर्चे एली ने शर्म के मारे मुझसे नही कहा, पर मेरा अन्दाज है कि उसने मा को मारा भी है। उसको चोट ज्यादा नही लगी है, पर वह शर्म और बदनामी के सबब से बिस्तर पर पड़ी है। यही हालत एली और कैथलीन की है। टाम अभी तक शराब की खुमारी में ऊपर पड़ा सो रहा था। मैं चाहता था कि उसके कमरे मे जाकर दस-बीस लाते लगाऊँ। पर एली ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया।"

वे दोनों बड़ी देर तक इस मामले पर गौर करते रहे। ऐसी मुसीबत के समय अपनी भावी पत्नियो के कुटुम्ब की मदद करना उनका फर्ज था। पर बहुत कुछ गौर करने पर भी कोई ऐसी तरकीब न सूझी जिससे उनका मतलब पूरा हो सकता। साथ ही एली और कैथलीन की राय लेना भी जरूरी था, क्योकि वे बड़ी स्वाभिमानिनी और अपने घर की इज्जत का खयाल रखने वाली लड़कियाँ थी। इसलिये वे फिर मिसेज हेनली के मकान पर गये और उन दोनों बहनों से इस बारे में बातचीत की। पर उस वक्त भी कोई तरकीब न निकल सकी। उनको यह भी जान पड़ा कि इस मामले मे ज्यादा बातें करने से एली और कैथलीन को दुःख होता है। टाम में सब कुछ ऐब होने पर भी वे अपने भाई को दिल से प्यार करती थी और कोई ऐसी बात उनको मंजूर न थी जिससे टाम को तकलीफ हो। वे सिर्फ यह चाहती थी कि वह किसी तरह शराब पीना छोड़ दे और पहिले की तरह रहने लगे।

शाम के वक्त फोयले और केसी सेनापति से मिलने गये। वहाँ से लौटते वक्त केसी के दिमाग में एक नई तरकीब आई जिसे फोयले ने भी पसद किया। उनका इरादा था कि टाम को नशे की हालत मे पकड कर पहाडी के भीतर ले जायँ और वहाँ ढंग के साथ उसकी शराब छुड़ाई जाय। वे बड़ी देर तक इस बारे में बाते करते रहे। फिर उन्होंने एली और केथलीन को भी

अपना इरादा कुछ घटा बढ़ा कर सुनाया और समझा-बुझा कर उनको राजी कर लिया।

उस दिन रात के वक्त जब टाम मेगर शराबखाने से झूमता-झामता आ रहा था तो रास्ते में उसकी मुलाकात केसी और फोयले से हुई। वे भी शराबी की तरह लड़खड़ा कर चल रहे थे। उनकी यह हालत देख कर टाम खूब हँसने लगा, क्योंकि उसके सामने वे लोग बडे परहेजदार बना करते थे। वह खुशी से उनके साथ एक छोटी सी गली मे चला गया। वहाँ पर फोयले ने खूब तेज शराब की एक बोतल निकाली। उन दोनों ने धोखा देने के लिये बोतल मुँह से लगाई, पर एक बूँद भी शराब नहीं पी। इसके बाद उन्होंने बोतल टाम को दे दी और वह पूरी बोतल गटक गया। वह केसी और फोयले को यह 'उदारता' देख कर बड़ा खुश हुआ और उनके साथ एक मोटर गाड़ी में बैठ गया। मोटर तेजी के साथ मेलार्न की तरफ चली। हवा लगने से टाम गहरी नींद में सो गया। मेलार्न पहुँच कर उसको मोटर से उतारा गया और एक चारपाई पर लिटा कर कुछ गोरिल्लाओं की मदद से पहाड़ी के भीतर पहुँचा दिया गया। वहाँ उसे एक खलिहान के भीतर, जहाँ गोरिल्लाओं का पड़ाव था, रखा गया।

सुबह दस बजे टाम को होश आया। उसने देखा कि पास ही फोयले खड़ा हुआ मुस्करा रहा है। वह बड़ी देर से उसके जगने की राह देख रहा था। टाम को जगा हुआ देख कर वह बोला—"टाम, तबीयत कैसी है?"

टाम ने खुमारी की हालत में जवाब दिया—"बहुत खराब है।" फिर वह चारों तरफ देख कर बोला—"अरे, मैं यहाँ कहाँ से आ गया?"

फोयले ने हँसते हुये कहा—"अपनी कसम जो मुझे कुछ भी मालूम हो। हम सब लोग नशे में थे और तुमने हमारे साथ आने की ज़िद की थी। खैर तुम्हारे लिये शराब हाजिर है।"

टाम ने ताज्जुब से कहा–"सचमुच।" इतने मे फोयले ने उसके सर के पीछे रखी हुई आलमारी मे से एक बोतल निकाल कर उसका डाट खोला। जब टाम ने बोतल को मुँह से लगा लिया तब उसको एतबार हुआ कि फोयले उसके साथ मजाक नही कर रहा है। जब उसने देखा कि फोयले ने दूसरी बोतल निकाल कर उसका भी डाट खोल डाला तब तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

फोयले ने दूसरी बोतल को टाम के पास रख कर कहा—"मुझे एक काम से बाहर जाना है। यहाँ पर अभी शराब की कई बोतले रखी हैं, तुम खुशी से जितना चाहो, पी सकते हो।"

फोयले के बर्ताव से टाम को बड़ा ताज्जुब हुआ। वह गुनगुना कर कहने लगा "फो-फो-फोयले बड़ा अच्छा आदमी है।" वह दूसरी बोतल भी पी गया और तीसरी के लिये हाथ बढ़ाया। चार बोतले खतम कर चुका तब वह बहुत खुश होकर खड़ा हो गया। इस समय उसे कुछ भूख भी मालूम हुई। बाहर जाकर पूछने पर पता लगा कि सब लोग सुबह का खाना खा चुके हैं और अब कुछ नही बचा है। इन वालटियरो में से कितने ही उसके पहिचान वाले भी थे। उसने फोयले के लिये पूछा तो कहा गया कि वह बाहर गया है। इधर-उधर की कुछ बाते करके वह अपने कमरे मे वापस आ गया और धीरे-धीरे शराब की कई बोतले खाली कर दी। इतने में बाहर से खाना पकने की सुगध आई। पहले तो उसका खयाल था कि जब भोजन तैयार हो जायेगा तब मुझे बुला लिया जायेगा। पर जब उसने देखा कि सब लोग घास पर बैठ कर खाना खाने लगे तो वह दौडता हुआ उनके पास पहुँचा और बोला–"क्या खाना शुरू कर दिया?"

केसी ने जवाब दिया–"हाँ, हम लोग भोजन कर रहे हैं।"

टाम ने फोयले की तरफ देख कर कहा—"मुझे बड़ी भूख लगी है, बैठने को थोडी जगह दो।"

फोयले ने बडा रंज जाहिर करते हुये कहा—"टाम, हम लोगो के पास खाने का सामान बहुत कम है।" इसी समय उसने कोई आध सेर का एक मास का टुकड़ा खाने के लिये उठाया।

अब फोयले के बारे मे टाम की राय कुछ बदल गई। उसको कुछ गुस्सा भी आया और उसने नाराज होकर पुल्नमोर का रास्ता पूछा। कई लोगो ने हाथ उठा कर उसे रास्ता दिखला दिया। वह बिना किसी से बातचीत किये उस रास्ते पर चल पड़ा। दो फर्लांग जाने के बाद एक पहरेदार मिला जिसने उससे परवाना मागा। टाम ने गुस्से से जवाब दिया—"परवाना किस बात का? फोयले और केसी कल रात को मुझे यहाँ ले आये थे और अब मै अपने घर वापस जा रहा हूँ।"

पहरे वाले वालटियर ने कहा—"मुझे हुक्म दिया गया है कि कोई आदमी कप्तान फोयले के परवाने के बिना बाहर नही जा सकता। अगर तुम मेरी बात न मान कर आगे बढने की कोशिश करोगे तो मै गोली मार दूँगा।"

पहरेदार के गम्भीर चेहरे और रूखी बातो से टाम को एतबार हो गया कि वह मजाक नही कर रहा है। इसलिये वह लाचार होकर बड़बडाता हुआ फिर वापस आ गया। इस समय वालटियर खाना खतम कर चुके थे और बहुत सा सामान बचा रखा था। उसने पहरेवाले की बाते फोयले को सुनाई। फोयले ने जवाब दिया—"मै लाचार हूँ। आज सुबह ही सेनापति ने मेरे पास खबर भेजी है कि जब तक वह यहाँ का मुआयना न कर जाय तब तक कोई आदमी यहाँ से बाहर नही जा सकता। उसके आने मे दस-पद्रह दिन की देर है, तब तक मै किसी को बाहर जाने का परवाना नही दे सकता।"

अब टाम कुछ घबडाया और कहने लगा—"तो अब मै घर कैसे पहुँचूँगा। अगर घर वालों को खबर न हुई कि मैं यहाँ हूँ तो उनको बड़ी फिक्र होगी।"

फोयले ने जवाब दिया—"इतना काम मै कर सकता हूँ। तुम घर वालो के लिये जो चिट्ठी लिखोगे वह उनको पहुँचा दी जायगी। इससे ज्यादा मै कुछ नही कर सकता।"

टाम को बड़ा गुस्सा आ रहा था। पर कुछ जोर चलता न देख कर वह अपने कमरे मे लौट गया और शराब की दो बोतलें खतम कर डाली। इस समय बाहर सन्नाटा था। तमाम वालटियर कही चले गये थे और सिर्फ एक आदमी सफाई करने के लिये वहाँ रह गया था। टाम के पेट में भूख के मारे चूहे दौड़ रहे थे। अखीर में उससे न रहा गया और बाहर जाकर मास का एक टुकड़ा उठा लिया। फौरन ही किसी ने पीछे से आकर उसके गाल पर एक चपत मारी और डाट कर कहा—"इसको रखो। इस छावनी के भीतर लूट-मार नही हो सकती।"

चपत लगने से टाम बड़े ताव मे आया। उसने सर फिरा कर देखा कि एक बदसूरत शकल का बुड्ढा सिपाही खड़ा हुआ है। टाम ने उससे कहा—"तुम्हारी उम्र मुझसे लड़ने लायक नहीं है। पर अगर तुमने मुझको फिर हाथ लगाया तो तुम्हारे हाथ-पैर तोड़ कर रख दूँगा। मुझे बड़ी भूख लगी है और मैं यह मास का टुकड़ा जरूर लूँगा।"

बुड्ढे सिपाही ने मुँह बना कर कहा—"अरे बेटा, तुम मरना तो नहीं चाहते। तेरे जैसा शराबी आदमी पाच मिनट भी मेरे सामने नही ठहर सकता। अपना कोट उतार डालो, और अगर तुम पाँच मिनट तक मेरे मुकाबिले में डटे रहे तो जितना चाहो खा लेना। जानते हो, मेरा नाम ओहारा है।"

एक वक्त ऐसा था जब कि पुलनमोर के पहलवानों मे टाम सब से अच्छा घूँसेबाज़ समझा जाता था। उसे अब भी अपनी ताक़त का वैसा ही घमण्ड था। ओहारा की जली-कटी बातें सुन कर वह उस पर टूट पड़ा। दो मिनट तक दोनों कुत्ते-बिल्ली की तरह लड़ते रहे। इस दरम्यान ओहारा ने बीस-

पच्चीस ऐसे जोर के घूंसे मारे कि टाम होश भूल गया और जमीन पर गिर पड़ा।

यह देख कर ओहारा बोला-"क्यों बड़ी बातें बना रहा था। तू एक छोटे लड़के से भी नहीं जीत सकता।"

टाम चुपचाप ओहारा की फटकार सुनता रहा। अपनी कमजोरी पर उसे बड़ी शरम मालूम हो रही थी। वह उठ कर बिना कुछ कहे अपने कमरे में चला गया और काँपते हुये हाथों से शराब की बोतल खोल कर एक गिलास भरा। पर उसके पीने की हिम्मत उसे नहीं हुई। वह गिलास को हाथ में लेकर कुछ देर तक देखता रहा और फिर एकाएक भरे गिलास को जमीन पर फेंक दिया। वह कहने लगा—"इस कमबख्त शराब ने ही मेरे शरीर को मिट्टी कर दिया। एक साल पहले मैं दो-चार घूंसों में ही उसका कचूमर निकाल सकता था। एक बुड्ढे आदमी ने मुझे गिरा दिया—कितने शरम की बात है।"

वह दो घंटे तक वहीं पड़ा रहा। उसका मन घृणा, निराशा और क्रोध के समुद्र में गोते खा रहा था। उसके बाद फिर उसका हाथ अपने आप शराब की बोतल की तरफ बढ़ा। आधी रात के वक्त उसने वहाँ से निकल भागने की कोशिश की, पर पहरेदार की ललकार सुनकर चुपचाप लौट कर पड रहा। वह रात टाम को उम्र भर याद रही होगी। भूख के सबब से उसे जरा भी नींद नहीं आई और तमाम वक्त सोच-विचार और बेचैनी में कटा। सवेरे सात बजे उसकी आँख जरा लगी।

जब वह उठा तो देखा आलमारी में शराब की दूसरी बोतलें रखी हुई हैं। पर आरजू, मिन्नत, खुशामद सब कुछ करने और गालियाँ देने पर भी कोई खाने की चीज उसे न मिल सकी। अखीर में उसने फोयले को पकड लिया।

फोयले ने कहा—"टाम, हम अपने खाने का सामान किसी बाहरी और

बेकार आदमी को नही दे सकते। इसके सिवा जो तुम्हारा सब से जरूरी भोजन है, उस शराब को हम तुम्हें काफी दे देते हैं। अगर तुम उसके अलावा कुछ और चाहते हो तो उसके लिये छावनी के भंडारी के पास जाओ। पर यह याद रखो कि भोजन के बदले मे वह तुमसे काम करायेगा।"

पर भडारी के पास जाने की टाम को इच्छा न हुई। क्योंकि यह वही शख्स था जिसने कल उसे पीटा था अखीर मे शाम के वक्त जब भूख के सबब से उसकी बुरी हालत हो गई और जान बचाने का कोई उपाय दिखलाई न दिया तो वह भंडारा के पास पहुँचा। ओहारा ने उसको पाखाने के लिये एक लम्बी नाली खोदने का काम दिया। रात के दस बजे तक टाम नाली को खोदता रहा और तब उसे खाने का मामान दिया गया। इसके बाद वह इतना थक गया कि शराब की तरफ उसका ख्याल भी नही गया और पड़ते ही खुर्राटे भरने लगा।

उस दिन से टाम कड़ी मिहनत करके अपनी रोटी कमाने लगा। ओहारा उससे ग़ुलामों की तरह रात दिन काम कराता था। एक हफ्ते के भीतर टाम की हालत बिलकुल बदल गई। अब वह ओहारा की सख्ती से बहुत तङ्ग आ गया था और उससे लड़ने को तैयार हो गया। दोनों में फिर घूँसेबाजी शुरू हुई और पद्रह मिनिट तक बड़े जोर की लड़ाई होती रही। अखीर में ओहारा न टाम को गिरा दिया, पर वह खुद भी हाँफने लगा और उसकी एक आँख मे भी कुछ चोट लगी।

जब टाम का होश ठिकाने आया तो ओहारा ने कहा—"अब की बार तुमने कुछ बहादुरी दिखलाई। मै इतना बुड्ढा हो गया, पर आज तक कोई आदमी मुझसे घूँसेबाजी मे नही जीता। पिछली बार तो मैने तुमको खड़े होते ही गिरा दिया था। पर अब की बार मै खुद मुशकिल से बच सका। मालूम पड़ता है कि अब तुम आदमी बनते जाते हो।"

ओहारा की जबान से अपनी तारीफ सुन कर टाम को बड़ा सतोष हुआ।

फिर कभी उसने ओहारा के हुक्म को मानने से इनकार नही किया और काम को बड़ी मिहनत और शौक से करने लगा। तीन चार दिन बाद वह फोयले से मिला और बोला—"कप्तान, तुम कब तक मुझे यहाँ रखना चाहते हो?"

फोयले ने नरमी के साथ कहा—"जब तुम यह दिखला दोगे कि तुम एक मर्द की तरह बर्ताव करते हो और खराब लोगों की संगत मे पड़ कर अपने शरीर और घर को बर्बाद नही करोगे, उसी समय तुम यहाँ से जा सकते हो।"

टाम ने कुछ शरम के साथ जवाब दिया—"फोयले, मैं तुम्हारा बड़ा अहसानमन्द हूँ। मैं सचमुच बर्बादी की तरफ जा रहा था। पर अब मै कभी इस रास्ते पर कदम नहीं रखूँगा। तुम जिस तरह चाहो मेरी जाँच कर सकते हो।"

दो-तीन दिन बाद फोयले और केसी के साथ टाम हेनली अपने घर पहुँचा। अब वह बिलकुल नया आदमी बन गया था और उसकी मा और बहिनों ने बड़े प्रेम से उसका स्वागत किया। कुछ ही समय मे राष्ट्रीय सेना और खेलने के क्लब के साथ फिर उसका ताल्लुक हो गया। सब से ज्यादा अचम्भे की बात यह हुई कि नेलो बरनन फिर उसकी प्रेमिका बन गई।

टाम हमेशा ओहारा की बड़ी इज्जत करता रहा। वह बातचीत करते समय कितनी ही बार अपने दोस्तों से कहा करता था—"तुम ओहारा को जानते हो? वह एक असली आदमी है!"

———

काल के मुंह से निकल आये

मेलार्न और उसके पास की फौजी चौकियों के हटाने के कई सबब थे। एक सबब यह था कि पुलनमोर के पास मस्टर जिले मे राष्ट्रीय सेना का जोर बहुत बढ गया था और वहाँ की सरकारी सेना के लिये उनका दबा सकना नामुमकिन हो गया था। इसलिये सरकारी अफसरो ने तय किया कि मेलार्न से सेना हटा कर मस्टर वालो की मदद के लिये भेजा जाय। इस पर राष्ट्रीय सेना वालो ने निश्चय किया कि अब पुलनमोर की छावनी पर ही छोटे-मोटे हमले किये जाय और उनके कामों मे हर तरह से रुकावट डाली जाय जिससे वे मस्टर की सेना की मदद न कर सके।

इस सबब से फोयले और उसके गोरिल्लाओ को मेलार्न छोडना पडा। उनके जिम्मे यह काम रखा गया कि वे पुलनमोर और बालून नामक कस्बो के बीच मे रेल, तार और सडकों को खराब करते रहे और इस तरह फौज के आने-जाने मे रुकावट डाले।

फोयले ने अपने वालटियरो को छोटे-बड़े कई हिस्सो में बॉट दिया। इस वक्त भी उनका हैडक्वार्टर पहाड़ी के भीतर था, पर उनका कार्य-क्षेत्र इतना फैला हुआ था कि कई कई दिन तक उनको बाहर ही रहना पडता था। इन दिनों वे या तो मैदान मे किसी छुपी हुई जगह मे रहते थे या इक्के-दुक्के किसानों की झोपडियो का सहारा लेते थे। इन किसानो को गोरिल्लाओ से बड़ा प्रेम था और उनको इस बात का अभिमान था कि वे उनकी खातिर करने को चौबीसो घन्टे तैयार रहते है। बहुत इनकार करने पर भी ये किसान उनको अपने बिस्तरो पर सुलाते थे और आप जमीन पर पड़े रहते थे। अक्सर यह

देखा जाता था कि सफेद बालों वाली बुढियाएँ गोरिल्लाओ को आराम पहुँचाने के लिये अपना खाना, सोना भूल जाती थी और उनकी निगरानी के लिये रात-रात भर जागती रहती थी।

एक दिन केसी के मातहत दल ने बालून के पास एक रेल के पुल को उड़ा दिया। इस पुल पर से फौजी सिपाहियों की एक गाडी निकलने वाली थी। अपना काम पूरा करने के बाद ये लोग तेजी के साथ एक पास वाले जगल मे लौट गये। इस जगल मे एक छोटा सा मकान बना हुआ था जिसमे पहिले एक अगरेज साधु रहता था। पर जब से राष्ट्रीय दल और सरकार मे लडाई होने लगी थी तब से वह उस बंगले को छोड़ कर अपने देश को चला गया था। इस वक्त राष्ट्रीय सेना वालों ने उसका अपना अड्डा बना रखा था और वे अक्सर उसमे ठहरा करते थे। यह मकान बहुत एकान्त मे था और इसलिये गोरिल्ला इसे बहुत हिफाजत की जगह समझते थे। यह मकान सड़क से तीन मील दूर था और एक टेढ़ी-मेढी पगडडी वहाँ तक जाती थी जो इस समय बडी खराब हालत में थी। इस जगह को आस पास के देहाती लोग 'डेविल्स बैण्ड' (शैतानी चक्कर) के नाम से पुकारते थे।

केसी के साथ नौ पिस्तौल वाले और दो बन्दूक वाले, सब मिला क ग्यारह गोरिल्ला थे। ये लोग रात को दस बजे उस मकान मे पहुँचे। इनके पिछली दो राते जागते हुये बीती थी। इसलिये झटपट कुछ खा-पीकर सब लोग कम्बल ओढ कर जमीन पर सो रहे। सिर्फ दो आदमी मकान के साम और पीछे की तरफ पहरा देने को जागते रहे। ये पहरे वाले घन्टे घन्टे बदले जाते थे।

× × × ×

अब थोड़ी देर के लिये इन गोरिल्लाओ को इस मकान मे सोता हुअ छोड़ कर हमको बाहर निकलना चाहिये। जब राष्ट्रीय सेना वाले इस मकान क तरफ आ रहे थे तो उनके पीछे-पीछे क्लर्कों की सी पोशाक पहिने एक नौजवा

शख्स भी चल रहा था। वह इन लोगो से इतने फासले पर था कि कोई उसे देख नही सकता था। जब वे लोग उस घने जङ्गल मे जाकर निगाह से ओझल हो गये और यह मालूम हो गया कि वे उस मकान मे ठहरने के लिये जा रहे हैं तो वह नौजवान आदमी पीछे लौट आया।

सड़क पहुँच कर वह झाड़ियो के भीतर छुपाई हुई अपनी पैरगाडी को ढूँढने लगा। पर बहुत देर तक मिहनत करने पर भी उसका पता न लगा। तब वह बकता-झकता हुआ पैदल ही बालून की तरफ रवाना हुआ और करीब साढ़े ग्यारह बजे सरकारी फौज की छावनी में पहुँचा। वह तुरत फौज के बड़े अफसर मेजर स्मिथ के सामने हाजिर हुआ।

मेजर स्मिथ उसे देखते ही बोला—"कहो कप्तान ओकूले, तुम यहाँ कहाँ आ पहुँचे? क्या तुम भी पुल के उड़ने की आवाज सुन कर बालून आये हो? मालूम होता है कि हम लोगो के इतनी कोशिश करने पर भी वे कंगले फिर से निकल भागे।"

ओकूले ने जवाब दिया—"मेजर साहब, मै किसी दूसरे ही काम के लिये आप से मिलने आ रहा था। पुल के उडने का धड़ाका होने के थोडी देर बाद मैने देखा कि दस ग्यारह बागी मुझसे थोडी दूर पर खेतो के बीच से दौड़े हुये जा रहे है। उनमे से दो-एक आदमियो ने मुझे देख लिया और इससे मैं बहुत डरा। पर इनको मेरे ऊपर शक न हुआ और वे अपने रास्ते चले गये। मैने सोचा कि ज़रा इनके पीछे चल कर देखूँ कि ये कहाँ जाते हैं। अपनी पैरगाडी झाड़ियो में छुपा कर मै चुपके-चुपके उनके पीछे चला। मैने देखा कि ये 'डेविल्स बैण्ड' वाले मकान की तरफ जा रहे हैं। हमने इस मकान पर कभी शक नही किया था। मुझे पूरा भरोसा है कि आज रात को वे उसी मकान में ठहरेंगे और अगर हम उनको सोते हुये घेर ले तो बड़ा काम बन जाय। मै उस जगह को अच्छी तरह जानता हूँ, क्योकि जर्मनी की लड़ाई के पहिले मै छुट्टियो मे अक्सर वहाँ पर झील मे मछलियो का शिकार करने

जाया करता था। अगर होशियारी से काम किया जाय तो उस मकान से तीस गज के फासले तक मजे से छुप कर पहुँचा जा सकता है। अगर जरूरत हो तो मै भी आप लोगों के साथ चलने को तैयार हूँ।"

कप्तान ओकूले की बात सुन कर मेजर साहब खुशी के मारे उछल पडे। वे बोले—"शाबास! शाबास!! मि० ओकूले, तुम सचमुच बडे चतुर आदमी हो। तुम को जरूर हमारे साथ चलना होगा। हम उन लोगो के इस तरह साफ बचकर निकल जाने से बड़े रज मे थे और सोच रहे थे कि देखे बडे सेनापति साहब कैसी खरीखोटी सुनाते हैं। इस पुल के उडने की आवाज पुलनमोर तक पहुँची थी और वहाँ से बहुत सी सेना हमारी मदद के लिये आई थी। पर बागियो का कुछ पता न लगा और हमारे ज्यादातर सिपाही नाउम्मेद होकर लौट आये। बचे हुये लोग भी अब आते ही होगे। तब तक हम एक जगह बैठ कर हमला करने का कोई ढग सोच ले। अगर हम उन सूअरों को पकड़ सके तो बहुत कुछ सतोष हो सकेगा!"

मेजर स्मिथ ने एक घटी बजाई और थोडी देर मे ही तमाम फौजी और जासूसी महकमे के अफसर एक बडी मेज के चारो तरफ बैठ कर उस मुकाम का नकशा सामने रख कर आपस मे सलाह करने लगे। कप्तान ओकूले उसी जिले का निवासी था और आजकल सरकारी फौज के जासूसी महकमे मे काम करता था। मेजर को उस पर सब से ज्यादा भरोसा था। आखीर मे उन लोगों ने हमला करने का ढङ्ग पूरी तरह से तय कर लिया।

करीब एक बजे रात को सरकारी सेना के तीन बड़े बड़े दल मशीनगनो और बन्दूकों से सज कर 'डेविल्स बैण्ड' की तरफ रवाना हुये। इनमे से एक दल पैरगाड़ी वालों का था जिनका मुखिया कप्तान ओकूले बनाया गया था। यह दल बहुत सा चक्कर काट कर धीरे-धीरे उस मकान के पीछे की तरफ चला। बाकी दो दल मोटर लारियों मे सवार थे। पगडडी के पास पहुँच कर उन्होंने अपनी गाड़ियों को मजबूत पहरे मे छोड़ दिया और पैदल सिपाही होशियारी

के साथ उस मकान की तरफ रवाना हुये। चाँदनी रात के सबब से रोशनी बहुत काफी थी, पर वे लोग आवाज होने के डर से बहुत धीरे-धीरे चल रहे थे।

सब से पहिले कप्तान ओकूले का दल उस मुकाम पर पहुँचा। उस वक्त करीब ढाई बज चुके थे। वे लोग मकान से तीस गज की दूरी पर एक नाली में छुप कर बैठ गये। वे बिलकुल चुपचाप थे और जोर से सास भी नहीं लेते थे। उस नाली मे कीचड़ बहुत था और उससे उनको बडी तकलीफ हो रही थी। पर जब तक दूसरे लोग न आ जायँ तब तक वे कुछ कर भी नही सकते थे। उनको पूरी उम्मेद थी कि आज हमारी कामयाबी होगी और इस खुशी में वे तमाम तकलीफो को धीरज के साथ सह रहे थे। उनको इस हालत मे करीब आधे घटे तक बैठना पडा, जब कि दूसरे दोनो दल वहाँ आ पहुँचे। कुछ देर बाद उस मकान से धीरे धीरे बात करने की आवाज आई। यह देख कर सरकारी फौज वाले कुछ घबडाये, और अगर अचानक कोई नई बात हो जाय तो उसके लिये तैयार होकर बैठ गये। पर कुछ देर बाद आवाज आना बन्द हो गया और फिर सन्नाटा छा गया।

× × × ×

करीब तीन बजे राष्ट्रीय सेना वालो का पहरा बदला। टाम नोलन और ओहारा आँखे मलते हुये पहरे की जगह पर खडे हुये और पहिले दोनो वालटियर सोने लगे। इन्ही की बातचीत बाहर खडे हुये सिपाहियो ने सुनी थी। उस मकान मे दो बैठने के कमरे, एक सोने का कमरा और एक रसोई घर था। मकान के ऊपर छत की जगह फूस का छप्पर था। मकान के आगे और पीछे के दरवाजे मजबूत लकडी के बने थे। पीछे के कमरे में एक खिडकी थी और सामने वाले मे दो। टाम नोलन पीछे के कमरे मे जाकर पहरा देने लगा, पर अभी नीद के सबब से उसकी आँखे पूरी तरह न खुली थी। ओहारा सामने वाले कमरे मे था और वह अपनी आदत के माफिक चारो तरफ निगाह गड़ा-गड़ा कर देख रहा था।

थोडी देर तक कोई खास बात न हुई। अचानक उसके चेहरे का भाव बदला और उसने अपनी बन्दूक उठाकर एक मुकाम पर निशाना लगाया। वह अपने मन में कहने लगा—"कुछ समझ मे नही आता। मुझे तो यह कोई सरकारी फौज का आदमी जान पड़ता है।" उसे यह मालूम न था कि उस वक्त वह मकान चारो तरफ से सरकारी फौज से घिरा हुआ था।

थोड़ी देर बाद उसे अच्छी तरह मालूम हो गया कि फौज वाले उस मकान के पास आ पहुँचे हैं। एक हवलदार धीरे-धीरे खिसकता हुआ बँगले के पास आ रहा था। एक बार गलती से उसका सिर जरा ऊँचा हो गया। उसी समय ओहारा ने एक गोली से उसका काम तमाम कर दिया। बदूक की आवाज सुन कर तमाम गोरिल्ला जग पड़े।

ओहारा ने चिल्ला कर कहा—"होशियार हो जाओ। दुश्मन आ पहुँचा है।"

ओहारा के गोली चलाते ही सरकारी फौज भी उस मकान पर मशीनगनो और बंदूको से गोलियो की बौछार करने लगी। आफत को सर पर आया देख कर राष्ट्रीय सेना के वालटियर जहाँ तक हो सका जल्दी बचाव के मुकामो पर खडे हो गये। कुछ लागो ने इधर उधर पडे हुये ईट पत्थरो को लाकर खिड-कियो के सामने रख दिया और उनकी आड में से दुश्मन पर गोलियाँ चलाने लगे। इतने मे केसी ने हुक्म दिया—"तुम लोग ज्यादा गोलियाँ मत चलाओ। हमारे पास सामान थोडा है और न मालूम कब दुश्मन हम पर हमला बोल दे।"

असल में सरकारी फौज वालो का इरादा यह था कि कुछ लोग मकान की बगल मे होकर जाये और खिडकियो मे से भीतर बम फेक कर चले आवे। पर वे ओहारा की निगाह से न बच सके और उनका इरादा रद्दी हो गया।

गोरिल्लाओ को गोली चलाना बद करते देख कर मेजर स्मिथ की हिम्मत बढी। तो भी उसको शक था कि राष्ट्रीय सेना वाले किसी तरह की चालाकी

कर रहे हैं । उसने अपने आदमियों को भी गोली चलाने से रोक दिया और बडे घमण्ड के साथ चिल्ला कर राष्ट्रीय सेना वालों से कहा—"तुम लोग हार मान कर बाहर आ जाओ। हमने तुमको चारों तरफ से घेर लिया है और अब तुम सिवा हार मानने के किसी तरह अपनी जान नहीं बचा सकते ।"

केसी ने भीतर से जवाब दिया—"अच्छा, जरा देर ठहरो। हम लोग आपस मे सलाह कर ले।"

मेजर स्मिथ ने तेजी के साथ कहा—"ठीक है। पर जल्दी करो मै सलाह करने के लिये तुमको दो मिनट का वक्त देता हूँ।"

केसी ने अपने साथियों को एक जगह इकट्ठा करके कहा—"भाइयो, तुम क्या चाहते हो ? हम लोग चारो तरफ से घिरे हुये हैं और बचने का कोई रास्ता नहीं है। तुम में से अगर कोई आदमी हार मान कर दुश्मन की शरण में जाना चाहे तो मैं उसे रोकना नही चाहता। पर मैं तो अपनी जगह से हट नही सकता और अखीर दम तक लड़ कर मरूँगा। जो लोग हार मानना चाहते हों वे हट कर दूसरी तरफ खड़े हो जावे।"

अगर्चे सैकड़ों सरकारी सिपाहियों के मुकाबले में इन बारह गोरिल्लाओ का लड सकना नामुमकिन था और थोडी ही देर मे सब का मारा जाना निश्चित था, तो भी कोई आदमी अपनी जगह से नही हटा; न कोई कुछ बोला। अखीर मे ओहारा ने अपनी बन्दूक मे नया कारतूस भरते हुए कहा—"हार मानने की बात को चूल्हे मे जाने दो। मैं तो सिवा यमराज के और किसी के सामने हार मानना नही जानता। यह सच है कि मुझे भी मरना पडेगा, पर जब तक मेरे अन्दर जरा भी जान बाकी रहेगी तब तक मैं, अगर हथियार न होगा तो खाली हाथो और दाँतों से ही लड़ूँगा।"

केसी ने तमाम लोगों पर फिर एक बार निगाह डाल कर कहा—"अच्छा, सब लोग अपनी अपनी जगह पर खड़े हो जाओ। जब तक जिन्दगी है तब

तक उम्मेद भी है। अपनी गोली-बारूद होशियारी से खर्च करो। भगवान हमारी मदद करेंगे।"

इसी समय मेजर स्मिथ की जोरदार आवाज फिर सुनाई दी—"वक्त खतम हो गया। तुम लोगों ने कुछ फैसला किया ?"

केसी ने कहा—"हाँ, तुम हमला करो। हम तैयार हैं।"

मेजर ने चिल्ला कर कहा—"अच्छा, तुम्हारी मर्जी। पर मै तुमको फिर जताये देता हूँ कि अगर तुम फौरन हार मान कर हथियार नहीं डाल दोगे तो तुम में से एक भी आदमी इस मकान से जिन्दा न निकल सकेगा। हम मशीन-गनों से एकाएक को उड़ा देंगे।"

ओहारा ने ताने के साथ जवाब दिया—"अजी मेजर साहब, जरा आगे तो बढो। हम लोग सरकारी सेना वालो के चाचा हैं। तुम तो हमको उड़ाने की बात कर रहे हो; पर जरा मेरी निगाह से बच कर रहना, वरना तुम खुद ही उड़ जाओगे।'

इस पर फिर गोलियाँ चलने लगी। फौज वालों ने कई बम भी फेंके जो उस मकान की दीवार से टकरा कर बाहर ही फूट गये। सिपाहियों ने सामने के दरवाजे की तरफ दो मशीनगनें लगा दी और कुछ ही मिनटों मे दरवाजा टुकड़े-टुकड़े हो गया। पाँच-छै हिम्मत वाले सिपाही बन्दूकों की आड़ लेकर मकान के पास बम फेंकने को चले, पर या तो वे गोरिल्लाओ की गोलियों से मारे गये या पीछे लौट आये। गुस्से मे आकर मेजर स्मिथ ने तीसरी मशीनगन भी सामने की तरफ मँगा ली और तीनों मशीनगनें टूटे हुये दरवाजे और खिड़कियों की तरफ चलाई जाने लगी।

वालटियरों मे से दो-चार आदमी घायल हुये थे, पर उनके घाव बहुत भारी नही थे। वे लोग किसी तरह वक्त निकाल रहे थे, पर उनको अब तक बचने की कोई सूरत नजर नहीं आती थी। सब लोग मौत का निश्चय कर चुके थे और उसकी राह देख रहे थे। पर इससे उनके दिलो मे बजाय डर के एक

निराले आनन्द का भाव पैदा हो रहा था। वे लोग मौत के खयाल में यहाँ तक चूर थे कि जब सिपाहियो ने मकान के छप्पर मे आग लगा दी और चारो तरफ लपटें फैल गई तब भी किसी ने उसका ज्यादा खयाल न किया।

केसी सोच रहा था कि देखे अत की घडी किस तरह आती है। बाहर से सिपाहियो के चिल्लाने की आवाजे आ रही थी—'अरे कुत्तो, बाहर आ जाओ, नही तो जिन्दा जल मरोगे।" पर इन बातो का किसी पर कुछ असर न पडा।

एकाएक ओहारा ने केसी का हाथ जोर से पकड कर कहा—"देखो, पीछे की तरफ बडा धुआँ फैल रहा है। इसमे होकर हम अच्छी तरह भाग सकते हैं। यह भगवान की ही कृपा है।"

सचमुच उस भीगे हुये छप्पर के जलने से बेहद धुआँ निकल रहा था और हवा के जोर से मकान के पीछे की तरफ जा रहा था। उसके सबब से पचास गज तक ऐसा अँधेरा हो रहा ा कि कोई भी चीज दिखलाई नही पडती थी। यह घटना सब लोगो को एक दैवी आश्चर्य की तरह जान पडी।

केसी ने कहा—"भाइयो, यह हमारे बचने का एकमात्र उपाय है। हमको धुएँ के बीच मे होकर निकल चलना चाहिये और जब तक जान रहे किसी तरह न रुकना चाहिये। हम लोग मेलार्न की पहाड़ी की तरफ चलेगे। दरीवाजा खोलो और मेरे पीछे एक कतार मे चले आओ।"

वे मकान के बाहर निकल कर बाई तरफ को भागे। उधर से दुश्मन के कुछ सिपाही भी धुएँ मे होकर मकान के भीतर बम फेकने को आ रहे थे। अँधेरे के सबब से उनमे से कई आदमी राष्ट्रीय सेना वालो से टकरा गये पर वालटियर लोग पिस्तौल, घूँसे, लात वगैरह हर तरह से उनको मारते हुये आगे बढ़ गये। राष्ट्रीय सेना वालो का असली इरादा समझने मे दुश्मन को कुछ देर लगी और उस हलचल मे वे लोग काफी दूर निकल गये।

पाँच सात मिनट बाद जब असली बात सरकारी सेना वालों की समझ में आई और मेजर स्मिथ को मालूम हुआ कि उसके तमाम शिकार धुएँ मे होकर भाग गये तो वह सन्न रह गया और उसने फौज को उनका पीछा करने का हुक्म दिया। पर अब मौक़ा निकल गया था और सरकारी सिपाही बिना सोचे-समझे इधर-उधर गोलियाँ चलाते हुये दौड़ने लगे। उनको दौड़ते-दौडते सुबह हो गई और तब उन्होने देखा कि वे एक पहाडी में आ फँसे हैं। उस समय राष्ट्रीय सेना के आठ आदमी सकुशल मेलार्न की पहाडी मे अपने पुराने मुकाम पर जा पहुँचे थे। तीन आदमी दूसरे दिन तलाश करने पर जगल म छुपे हुयें मिल गये। वे लोग थकावट और घावो मे से खून निकल जाने के कारण बड़े कमजोर हो गये थे और दूसरे लोगों के साथ न चल सकने के सबब से चुपके से किसी छुपे हुये मुकाम मे पड़ रहे थे। वे लोग अपने साथियो की सेवा शुश्रूषा के फल से थोडे ही अरसे मे बिलकुल चगे हो गये। चौथा आदमी मरा हुआ पाया गया। उसका शरीर गोलियो से चलनी हो गया था। साफ मालूम पडता था कि वह सरकारी फौज वालो के हाथ मे पड़ गया था और सब ने अपना गुस्सा उसी पर निकाला था।

पर दुश्मन का नुकसान राष्ट्रीय सेना वालो की बनिस्बत बहुत ज्यादा हुआ था। उनके सात आदमी मारे गये थे और नौ सख्त घायल हुये थे। मरने वालों मे कप्तान ओकूले भी शामिल था। उसके बारे मे लोग कहते थे कि वह राष्ट्रीय सेना वालो का पीछा करते समय एक सरकारी अफसर की गोली से मारा गया था। मालूम नही कि गोली अचानक लग गई थी या जान बूझ कर मारी गई थी।

इस घटना का जो हाल सरकारी फौजी महकमे की तरफ से अखबारो मे छापने के लिये भेजा गया वह बिलकुल गलत था। पर उस जगह के गॉव वाले आज भी 'डेविल्स बैण्ड' की लड़ाई का जिक्र बड़े ताज्जुब के साथ किया करते हैं।

एक निरपेक्ष डाक्टर

बालून में फ्रांसिस ओग्रीन नाम का एक मशहूर डाक्टर रहता था। उसकी उमर करीब ५५ वर्ष की थी और वह शरीर का बड़ा लम्बा चौडा और हट्टा-कट्टा था। उसका जन्म एक मामूली किसान के घर में हुआ था। पर वह अपनी लियाकत के सबब से तरक्की करते करते इस बड़े ओहदे पर पहुँच गया था। उसका बाप पक्का देशभक्त था और आयरलैण्ड की आजादी उसको प्राणों से प्यारी थी। पर डाक्टर ओग्रीन राजनीति से सदा दूर रहता था। बालून के रहने वाले उसे जिले भर में सब से बडा डाक्टर समझते थे अगर्चे उसकी रोजी उस कस्बे के निवासियों की बदौलत ही चलती थी, पर उनके साथ बड़ी लापरवाही और घमण्ड का बर्ताव करता था। उसका चरि बड़े ऊँचे दर्जे का था, वह सदा खरी बात कहता था और उसकी शकल सू ऐसी रुआबदार थी कि सब लोग उसको बड़ी इज्जत की निगाह से देखते और साथ ही डरते भी थे। उसके दिमाग में कुछ खब्त भी था और कभ कभी वह बहुत गाली गलौज बका करता था। बालून में वह सिर्फ एक आदम को अपनी बराबरी का मानता था। वह था उस कस्बे का एक मात्र वकील उन दोनों की दोस्ती भी बडे अजीब ढङ्ग की थी। गरमी, सरदी, बरसात कुछ भी क्यों न हो, वे हर रोज बालून के बीच बाजार में एक दूसरे से मिलते थे और घंटों बातचीत करते हुये इधर-उधर फिरते रहते थे। उनकी बातचीत ऐसे जोर से होती थी कि हर एक राहगीर दूर से ही उसे सुन सकता था। उनकी सलाम बंदगी का कायदा निराला था। डा० ओग्रीन झपट कर अपने दोस्त की तरफ जाता और चिल्ला कर कहता—"ओ बदमाश, सलाम।"

वकील भी उसी तरह कड़ी आवाज मे कहता—"ओ हत्यारे, सलाम।"

फिर डाक्टर कहता—"अच्छा, झूठे—डाकू।"

वकील फौरन जवाब देता—"अच्छा, कसाई, जहर देने वाले।"

इसके बाद वे दोनो दिल खोल कर हँसते और तब दूसरी बातचीत शुरू होती।

सन् १६१४ में जब जर्मनी की लडाई शुरू हुई तो ज्यादा उमर हो जाने पर भी डा० ओग्रीन सरकारी फौज मे काम करने को चला गया और चार साल तक बालून के निवासियो ने उसकी शकल भी नही देखी। जब वह लौटा तो फिर अपना धधा करने लगा। इन चार सालों में सिवा इसके कि उसकी रीछ की सी काली दाढी कुछ सफेद हो गई थी, उसमे कुछ भी बदलाव न हुआ था। पर अब वह लड़ाई का बड़ा विरोधी बन गया था और जब कभी बातचीत चलती तो कहता था—"अगर मै फिर कभी लड़ाई मे जाऊँ तो ईश्वर उसी दिन मुझे मार डाले। लड़ाई सिर्फ लालच, बेरहमी और खून की प्यास को बुझाने के लिये की जाती है। यह आदमियों का नहीं, जानवरों का काम है।"

अब भी स्थानीय वकील के साथ उसकी दोस्ती थी, पर अब वे पहिले की तरह एक दूसरे को गालियाँ नही देते थे। जब आयरलैण्ड मे सरकार और राष्ट्रीय दल मे लड़ाई होने लगी तो डाक्टर राजनीति से और भी दूर रहने लगा। इसी समय दोस्त वकील को सरकारी अफसरों ने गिरफ्तार कर लिया। अगर्चे डाक्टर को मालूम हो गया कि उसके दोस्त का छुपे तौर पर राष्ट्रीय दल से ताल्लुक था तो भी इस तरह उसकी गिरफ्तारी से उसके दिल को बड़ी चोट लगी। अब वह लोगों की आँखों से और ज्यादा दूर रहने लगा। वैसे भी अब कस्बे की हालत बदल गई थी। जिस वक्त डाक्टर लड़ाई पर गया था उस वक्त कस्बे मे जो लोग मुखिया या बड़े आदमी समझे जाते थे अब उनकी जरा भी पूछ न थी। अब जनता की बागडोर नौजवान लोगों के हाथ में थी और

ये ही उस जगह की म्युनिसपैलिटी के कर्ताधर्ता थे। ये नौजवान बुजुर्ग लोगो की ज्यादा इज्जत नही करते थे।

शुरू मे राष्ट्रीय दल वाले और सरकारी अफसर दोनो समझते थे कि डाक्टर अगर उनका दोस्त नही है तो दुश्मन भी नही है। पर डाक्टर को खरी बात कहने की आदत थी और वह दोनों दलो पर तरह-तरह के ऐब लगाया करता था। इसलिये कुछ समय बाद दोनो तरफ वाले उसे शक की निगाह से देखने लगे। पर डाक्टर को इस बात का कुछ खयाल न था। वह उन लोगो मे से था जो किसी की खुशी या नाराज होने की परवा नहीं करते।

पर जैसे-जैसे दोनो दलो का झगडा जोर पकडता गया डाक्टर की मुशकिल भी बढ़ती गई। एक दिन कुछ गोरिल्ला लाठी और पिस्तौल लेकर उसके घर में हथियारो के लिये घुस गये। डाक्टर ने गुस्से मे आकर उनको मारने के लिये एक कुरसी उठाई और सब को भगा दिया। पिस्तौल वाले वालन्टियर ने डाक्टर को डराने की कोशिश की, पर क्योंकि वह खाली थी इससे उसका कुछ असर न हो सका। जब यह खबर बालून के फौजी अफसर मेजर स्मिथ के पास पहुँची तो उसने कुछ सिपाहियो को डाक्टर के यहाँ से हथियार ले आने को भेजा। मालूम नही कि डाक्टर के यहाँ हथियार थे या नहीं, पर सिपाहियों को कुछ नहीं मिल सका। डाक्टर की रूखी बातो से सिपाही बहुत बिगडे और मुमकिन था कि वे डाक्टर को बेइज्जत करते। पर मेजर स्मिथ ने उनको सख्त हुक्म दे रखा था कि डाक्टर को किसी तरह की तकलीफ न हो।

राष्ट्रीय सेना के अफसर को अपने गोरिल्लाओ के पीटे जाने पर कुछ भी गुस्सा न आया। वरन् ये लोग इस बात पर खूब हँसे और डाक्टर की हिम्मत की तारीफ करने लगे। उनका इरादा था कि एक बार डाक्टर के यहाँ फिर कोशिश की जाय, पर इसके दो ही दिन बाद एक ऐसा मामला हुआ जिससे उनको अपना इरादा छोड देना पडा।

उस दिन बालून में बाजार का दिन था। उसी दिन दोपहर को वहाँ होकर चार-पाँच सरकारी सिपाहियो की लाशो का जलूस निकलने वाला था। ये सिपाही पहाड़ियो मे गोरिल्लाओ के हाथो मारे गये थे और उनकी लाशो को दफन करने के लिये डबलिन भेजा जा रहा था। लाशो के जलूस के साथ सेना का एक बडा दल भी था। जब यह जलूस निकल रहा था तो सिपाही जबर्दस्ती तमाम लोगो की टोपियाँ उतरवाते जाते थे। डाक्टर ओग्रीन उस समय बाजार में होकर कही जा रहा था। भीड के सबब से उसको रास्ते मे ठहर जाना पडा। जब लाशो का जलूस पास आया तो उसने सभ्यता के कायदे के मुताबिक खुद ही अपनी टोपी उतार ली और जब लाशे निकल गई तो फिर टोपी को सर पर रख लिया। बदकिस्मती से ज्योही उसने टोपी सर पर रखी कि एक सिपाही उसके पास आ पहुँचा। यह सिपाही दो दिन पहिले डाक्टर के घर हथियार लेने गया था और शायद उसके रूखे बर्ताव की बात को अब तक न भूल सका था। उसने अपने हाथ से डाक्टर की रेशमी टोपी को उतार कर दूर फेंक दिया। घायल शेर की तरह गरज कर डाक्टर ने उस सिपाही के मुँह पर एक घूँसा मारा जिससे वह सडक पर गिर पड़ा। यह देख कर दूसरे सिपाहियो ने डाक्टर पर हमला किया और उसे सडक पर गिरा कर लातो से मारने लगे। एक अफसर ने जो सब के पीछे चल रहा था इस घटना को देखा और सिपाहियो को मारने से रोक कर डाक्टर को गिरफ़ार कर लेने का हुक्म दिया। इस तरह डाक्र की जान तो बच गई, पर उसके कई दाँत टूट गये, नाक मे चोट लग गई, और चेहरा कई जगह से फट गया।

डाक्टर को ज्यादा देर तक हवालात मे नही रखा गया। मेजर स्मिथ और दूसरे बडे अफसर इस मामले से नाखुश थे और उन्होने जहाँ तक हो सका जल्दी इसे रफा-दफा कर देने की कोशिश की।

डाक्टर एक महीने तक लँगड़ाता रहा। पर उसने अपना काम बन्द नही

किया। वह बालून के रहने वालो, सरकारी सिपाहियो, राष्ट्रीय सेना वालों वगैरह सब का इलाज उसी निरपेक्ष भाव से करता था। उसने अपनी बातचीत या किसी काम से यह हरगिज जाहिर नही होने दिया कि वह दोनों में से किसी दल को अच्छा समझता है। ज्यादातर सरकारी सिपाहियों का खयाल था कि डाक्टर भीतर ही भीतर राष्ट्रीय सेना वालों से मिला है। पर दोनो तरफ के बडे अफसरों को अब पूरी तरह विश्वास हो गया था कि डाक्टर जरूरत से ज्यादा निरपेक्ष है। अगर वह कोई मामूली आदमी होता तो मुमकिन था कि कोई उसकी तरफ खयाल न करता। पर अब उसे तरह-तरह से तग होना पड़ता था। सरकारी फौज के सिपाही उसकी मोटर को अकसर रास्ते में रोक कर उसकी तलाशी लिया करते थे और उससे बार-बार पैटरोल का हिसाब पूछा जाता था।

× × × ×

राष्ट्रीय सेना वालो ने इस घटना के बाद उसको सिर्फ एक बार तग किया। बात यह थी कि बालून के एक जमींदार का लडका वहाँ के जासूसी महकमे का मुखिया था। जब सरकारी सेना ने राष्ट्रीय सेना से हमदर्दी रखने वालों के मकान जलाये, तो राष्ट्रीय गोरिल्लाओ के सेनापति ने निश्चय किया कि इसके बदले मे सरकारी सेना वालो और उनसे सहानुभूति रखने वालों के मकान जलाने चाहिये। जेम्स केसी को बालून मे उस जमींदार के मकान जलाने का हुक्म दिया गया। पर यह काम आसान न था, क्योंकि इस मकान के बिलकुल पास ही सरकारी फौज की एक बडी चौकी थी। इसके सिवा मकान को उडाने के लिये बम और दूसरे मसाले जो हैडक्वार्टर से आने वाले थे वे समय पर नहीं आये। तो भी केसी ने निश्चय किया कि जिस तरह हो सके वह मकान जरूर जलाना चाहिये। इस काम के लिये इधर-उधर से बहुत सा पेटरोल इकट्ठा करके डाक्टर ओग्रीन के बाग मे छुपा दिया गया। यह बाग उस मकान की चारदीवारी से बिलकुल लगा हुआ था। जब रात कुछ

ज्यादा हो गई तो गोरिल्ला चुपके से डाक्टर के मकान मे घुस गये और वहाँ के रहने वाले तमाम आदमियो को बाँध दिया। इसके बाद उन्होंने अपना काम शुरू किया। पहिले बहुत सी बोतलों में पैटरोल भर कर उनमे कपड़े का पलीता लगा दिया गया। फिर धीरे धीरे उन बोतलो और पैटरोल के दूसरे डिब्बों को उस जमीदार के मकान के पास पहुँचाया गया। जब वालन्टियर ये चीजे ले जा रहे थे उस वक्त एक बड़े शिकारी कुत्ते ने उन पर हमला किया। पर एक गोरिल्ला ने उसके सर मे बन्दूक के कुन्दे की ऐसी चोट मारी कि वह उसी जगह ढेर हो गया। जब सब सामान ठीक हो गया तब वे लोग एक खिड़की को तोड़ कर मकान के भीतर घुसे। वालन्टियरों का एक दल कमरों मे पैटरोल छिड़कने लगा और दूसरे दल ने मकान के तमाम लोगों को पिस्तौलों से डरा कर और बाहर ले जाकर अस्तबल मे बद कर दिया। हर एक कमरे मे पैटरोल की दो चार बोतले डाल दी गई और तमाम जल सकने वाली चीजो को पैटरोल से अच्छी तरह भिगो दिया गया। यह तमाम काम खतम करने पर वालन्टियर लोग दो एक कमरों मे जलता हुआ कपड़ा फेक कर जल्दी से बाहर निकल आये और बिना हल्ला-गुल्ला मचाये पहाड़ियो की तरफ चलते बने।

आग कुछ ही लगी थी कि चौकी के सिपाहियो ने उसे देख लिया। वे लोग फौरन मौके पर पहुँचे और उनको पूरा भरोसा था कि हम अभी आग को बुझा देगे। वे एक खिड़की मे होकर भीतर जाने की कोशिश कर रहे थे कि पैटरोल की एक बोतल बड़े जोर से फूटी। फिर एक के बाद दूसरा धड़ाका होने लगा।

सिपाहियो के अफसर ने चिल्ला कर कहा—"पीछे चले आओ, मकान में बम रखे हुये हैं। पर इस हुक्म के पहिले ही सिपाही अपनी जान बचाने के लिये भागने लग गये थे। अब धड़ाके और भी जोर से हो रहे थे और उनके सबब से किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि मकान के पास जाने की

कोशिश करे। उस कस्बे मे आग बुझाने का और कोई उपाय न था। अखीर मे जब सुबह हुई तो तमाम मकान और उसका सामान जल कर कोयलों और राख का ढेर हो चुका था।

सुबह होते ही सरकारी सेना वाले राष्ट्रीय सेना वालो को ढूँढने के लिये आस-पास के मकानो की तलाशी लेने लगे। उनका खयाल था कि शायद अभी वे लोग यही किसी जगह छुपे होगे। उन्ही मे से कुछ सिपाही डाक्टर के यहाँ पहुँचे और उसको अपने नौकरो के साथ बँधा पाया। इस घटना के सबब से डाक्टर के दिल पर बडी चोट लगी। पर दूसरे दिन उसको राष्ट्रीय सेना के सेनापति का खत मिला जिसमे उसे बाँधने के लिये माफी माँगी गई थी। इस खत से डाक्टर का रज बहुत कुछ कम हो गया।

उधर सरकारी सिपाहियो का यह शक कि डाक्टर भीतर ही भीतर बागियो से मिला है, इस मामले से और भी मजबूत हो गया। वे लोग उसको बहुत तग करते। पर मेजर स्मिथ ने उनको ऐसा करने से रोक दिया। इन सब बातो से डाक्टर को बडा गुस्सा आता था और वह कभी एक दल को और कभी दूसरे दल को गालियाँ दिया करता था। उसने इस बात की कसम खा ली थी कि वह किसी दल की तरफदारी नही करेगा।

× × × ×

कुछ दिन बाद फोयले के पास खबर आई कि सरकारी सेना का एक दल सुबह होने से पहिले पुलनमोर से बालून की तरफ जाने वाला है। जब से राष्ट्रीय सेना का जोर बढा था तब से सरकारो फौज वाले अँधेरे मे सफर करने की हिम्मत बहुत कम करते थे। इसलिये फोयले ने इस मौके पर चूकना ठीक न समझा। दिन के वक्त भी पहाडियो के ऊपर से सरकारी फौज पर गोलियाँ चलाई जा सकती थी। पर ऐसा न करने का सबब यह था कि आज कल वालन्टियरो के पास गोली बारूद की कमी थी और उनकी मशीनगन भी किसी दूसरे जिले में मँगनी गई थी। फोयले चाहता था कि गोली बारूद

के लिये सेनापति के पास आर्डर भेजने के पहिले कोई बडा काम कर दिखाना चाहिये। इस लिये उसने सरकारी फौज के इस दल पर हमला करने का निश्चय कर लिया। उसी दिन शाम को सेनापति के यहाँ से उसके पास दो सुरगे आई थीं। उनमे से एक सुरग को आधी रात के वक्त बालून से छै मील के फासले पर सडक के एक मोड पर गाड दिया गया। उस जगह से पचास गज की दूरी पर एक बडे चट्टान के पीछे एक आदमी बैठाया गया जिसके हाथ मे सुरग को चलाने के लिये बिजली की बैटरी और तार था। उससे कुछ दूर पर पहाडी के ऊपर जगह-जगह वालन्टियरो के दल बन्दूके लिये छुपे हुये थे। पर उस रात को सरकारी सिपाहियो का कोई दल उस रास्ते से नही गुजरा। दिन निकल आने पर वे लोग वहाँ से उठ गये और खा पीकर और कुछ आराम करके फिर अपनी जगह आ बैठे। जब उनको यह मालूम हुआ कि उनके पीछे से सिपाहियो का एक छोटा दल उनकी सुरग पर होकर बेखटके चला गया तो उनको बहुत रज हुआ। फिर भी वे धीरज के साथ बैठे हुये किसी दूसरे फौजी दल की राह देखने लगे।

× × × ×

उस दिन शाम को अँधेरा हो जाने पर डाक्टर ओग्रीन एक मरीज को देख कर अपनी मोटर पर बालून को लौट रहा था। सडक के मोड पर जहाँ राष्ट्रीय सेना वालो की सुरग गड़ी हुई थी उसको सरकारी सेना की दस मोटर लारियाँ बालून की तरफ से आती मिली। सिपाहियो ने डाक्टर की मोटर को रोक लिया और उससे तरह-तरह के सवाल करने लगे। अखीर मे सिपाहियो के अफसर ने उसको हुक्म दिया—"अपनी मोटर बीच मे कर लो और हमारे साथ चलो।"

डाक्टर ने धीरे से कहा—'जनाब, मै आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे घर जाने दे। मैं इन झगड़ो से किस तरह का ताल्लुक नही रखता।

मेरा काम लोगों को तकलीफ से छुडाना है। मै मारकाट करने वालो के साथ हरगिज शामिल होना नही चाहता।"

अफसर ने झल्ला कर कहा—"मै तुम्हारी ये बेमतलब की बाते सुनना नही चाहता। तुम अपने को गिरफ्तार समझो, और अगर ज्यादा गड़बड करोगे तो अभी खत्म कर दिये जाओगे। बस, सीधी तरह अपनी मोटर को लारियों के बीच मे करके हमारे साथ चले आओ।"

डाक्टर ने जोर के साथ जवाब दिया—"मै आपका हुक्म नही मान सकता। 'मै एक बिलकुल आजाद आदमी हूँ और मुझे आपके साथ चलना सख्त नापसद है। इसलिये जब तक आप मुझे जबर्दस्ती पकड़ कर न ले जायँ तब तक मै आपके साथ नही जाऊँगा।"

अफसर जरा देर तक उसकी तरफ ताकता रहा और तब बोला—"सार-जट, तुम इस शख्स को अपनी हिरासत में ले लो और इसका कोई उज्र मत सुनो।' फिर उसने एक ड्राइवर को हुक्म दिया—"डाक्टर की खाली मोटर को हॉक ले चलो।"

डाक्टर सड़क पर खड़ा हुआ गुस्से के मारे कॉप रहा था। इसी समय आगे वाली मोटर लारी जरा आगे बढी और ठीक उस जगह जा पहुँची जहॉ पर राष्ट्रीय सेना वालो की सुरग गडी हुई थी। सारजट ने अपना हाथ डाक्टर के कधे पर रखने के लिये बढाया ही था कि एकाएक बज्र के समान शब्द हुआ। आगे वाली मोटर लारी एकदम ऊपर उठ गई और चूर चूर होकर सडक पर गिर गई। डाक्टर और दूसरे सिपाही जो उसके पास खड़े थे उछल कर दूर जा गिरे। मिनट भर के लिये चारो तरफ सन्नाटा छा गया। सब से पहिले डाक्टर को होश आया और वह छुपने के लिये चट्टानो की तरफ भागा।

उसी वक्त पहाडी पर से मोटरों पर गोलियॉ चलने लगी। सिपाहियो ने भी जवाब मे अपनी मशीनगन चलाई। दो घटे तक दोनों दलों मे घमासान

लड़ाई होती रही। इसके बाद बहुत सी सरकारी फौज अपने साथियों की मदद को आ पहुँची और तमाम पहाड़ी सर्चलाइट की रोशनी से जगमगा उठी। यह देख कर राष्ट्रीय सेना वालों ने गोली चलाना बन्द कर दिया और अपने मुकाम की तरफ चल दिये। सरकारी फौज ने कुछ दूर तक पीछा किया, पर उन पहाड़ियों में रात के वक्त उनको पकड सकना नामुमकिन था। कई घंटों के बाद फौज वाले थके और चिढ़े हुए अपनी छावनी को वापस चले गये।

× × ×

जब सवेरा हुआ तो लोगों ने देखा कि डाक्टर का मुर्दा शरीर पहाड़ी के नीचे पड़ा है। न मालूम किस तरफ की गोली से वह मारा गया था। क्योंकि वह भाग कर दोनों दलों के बीच में जा पडा था और दोनो तरफ वाले उसे दुशमन समझ कर मार सकते थे।

मरने के वक्त भी डाक्टर ओग्रीन निरपेक्ष ही बना रहा!

युद्ध के दावपेंच

—:०:—

कप्तान निकलसन बालून की वालंटियर सेना मे नौकर था। जाहिर मे वह बड़ा सीधासादा मालूम पडता था, पर जो लोग उसका पिछला हाल जानते थे उनको मालूम था कि उसके जैसा बदमाश और चालाक आदमी उस तमाम पलटन मे मिलना मुशकिल था। निकलसन, मिडशायर (इंगलैण्ड) के एक बड़े जमीदार का लडका था। उन्नीस साल की उमर मे ही पक्का गुंडा बन गया और उसने एक बुड्ढे मालदार की औरत को फँसा लिया। उसके इस काम की चारो तरफ बुराई होने लगी और मा-बाप ने नफरत के साथ उसको घर से निकाल दिया। जब बुड्ढे शख्स को अपनी औरत के चाल-चलन का पता लगा तो उसने शरम के मारे आत्म-हत्या कर ली। निकलसन कुछ दिन तक उस औरत के साथ रहा और बाद मे मौका पाकर उसका बेशकीमत मोतियों का हार और कुछ दूसरे जेवर लेकर भाग गया। उसके इस बर्ताव से औरत के दिल पर बडी चोट लगी और वह अपने बुड्ढे पति के लिये बडा शोक करने लगी। कुछ सोच-समझ कर उसने इस मामले को यों ही रहने दिया और पुलिस को खबर नही दी।

इसके बाद छै साल तक निकलसन इधर-उधर लोगो को ठग कर अपना काम चलाता रहा। कई बार उसके फँसने का मौका आया, पर वह बार, बार नाम बदल कर बच गया। उसकी अक्ल तेज थी और उसे सभ्य समाज मे मिलने के कायदे खूब आते थे, इसलिये वह बिना कुछ काम किये दूसरे लोगों के भरोसे चैन करता था। वह ताश खेलने मे भी बडा होशियार था और हमेशा जुए मे कुछ न कुछ जीत लेता था। इस तरह रहते-रहते जर्मनी की

लडाई का जमाना आ पहुँचा। जबर्दस्ती भरती के कानून के मुताबिक उसको भी फौज में शामिल होकर लडने को जाना पड़ा। यहाँ भी उसने अपने पुराने ढङ्ग न छोड़े और वह जुआरी अफसरो के साथ ताश खेल कर उनका रुपया अपनी जेब में पहुँचाता रहता था। लडने के वक्त वह सब से पीछे रहता था। पर अपनी चालाकी से बडे अफसरों को हर तरह से खुश रखता था। इसलिये सब से कम खतरा उठाने पर भी उसे दूसरों से ज्यादा बहादुरी के मेडल मिल गये।

जब लडाई खतम हो गई और निकलसन लौट कर इङ्गलैण्ड मे आया तो उसे मालूम हुआ कि अब वहाँ का रङ्ग बदल गया है। बेकारी के सबब से अब और भी बहुत से आदमी 'अक्ल' से गुजारा करने वाले पैदा हो गये थे और उन सब के मुकाबले मे कामयाबी हासिल कर सकना सहज न था। इसलिये बहुत सोच-विचार कर उसने आयरलैण्ड की वालटियर सेना मे नौकरी करना तय किया। इस काम में तनखाह बहुत काफी मिलती थी और इसी लिये उसने यह नौकरी पसन्द की थी। बालून मे आने के बाद वह कोई ऐसा तरीका तलाश करने लगा जिससे तनखाह के सिवा कुछ ऊपरी आमदनी भी हो सके। पर कुछ ही दिनों मे उसे मालूम हो गया कि उसके साथी उससे भी ज्यादा चालाक हैं और वह ताशों के खेल मे या दूसरी किसी तरकीब से उनसे कुछ नही पा सकता।

इसके बाद निकलसन इस बात की कोशिश करने लगा कि राष्ट्रीय सेना वालो के भेदों का पता लगा कर सरकार से कुछ इनाम हासिल किया जाय। पर इस काम मे भी वह नाकामयाब रहा। उसके लिये आयरलैण्ड वालों के तरीके और ढङ्गो को समझ सकना बिलकुल नामुमकिन बात थी। इसलिये उसकी खबरे सदा गलत निकलती थीं और कभी-कभी तो उनके सबब से बड़ा नुक़सान हो जाता था। एक बार उसने एक ऐसे शख्स के खिलाफ शिकायत कीजो पक्का राजभक्त था। इस खबर के आधार पर सिपाहियों ने एक दिन

रात के समय उस शख्स की मोटर को रास्ते मे रोक लिया और पूछताछ करने लगे। इससे उसको इतना गुस्सा आया कि उसने मोटर रोकने वाले सिपाहियों को मार कर भगा दिया। जब इस घटना का पता मेजर स्मिथ को लगा तो उसे बड़ी नम्रता के साथ उस शख्स से माफी माँगनी पड़ी। पर तो भी वह पूरी तरह से राजी नही हो सका।

अखीर में निकलसन ने सोचा कि राष्ट्रीय सेना वालो से मिल कर आमदनी का कोई ढङ्ग निकालना चाहिये। उसे न इङ्गलैण्ड से प्रेम था न आयरलैण्ड से घृणा। उसका उद्देश्य सिर्फ रुपया कमाना और मौज करना था। उसने देखा कि राष्ट्रीय सेना वालों को हथियार और गोली बारूद की बड़ी जरूरत रहती है। इसलिये अगर उनके एजटों से ताल्लुक कर लिया जाय तो काफी आमदनी हो सकती है।

अपने इस इरादे को पूरा करने के लिये उसने एक तरकीब निकाली। एक दिन उसने अपने एक साथी अफसर का पिस्तौल और पचास कारतूस चुराये और उनको ले जा कर एक टूटे-फूटे मकान मे एक बड़े पत्थर के नीचे छुपा दिया। इन चीजो के साथ एक पुरजा भी था जिसमें लिखा था—"इन चीजों को तुम कितनी कीमत की समझते हो? बाद मे और भी चीजे आने वाली हैं।" यह पुरजा उसने हाथ से नही लिखा था, बल्कि एक अखबार में छपे हुये अक्षर काट कर उनको जोड़ कर बनाया था। वह थोड़ी देर तक वहाँ खड़ा रहा। कुछ देर बाद सामने वाले मकान से एक आदमी बाहर निकला। उस मकान वाले पर सरकारी अफसरों को शक था और इसलिये उसे नजरबंद करके रखा गया था। निकलसन ने हाथ से पत्थर की तरफ इशारा किया और चुपचाप चला गया। दूसरे दिन उस जगह जाकर जब उसने पत्थर को हटाया तो उसके नीचे से तीन पौण्ड का एक नोट लिफाफे मे रखा मिला। पन्द्रह दिन के भीतर उसने पिस्तौलों को चुरा चुरा कर बीस पौण्ड पैदा किये। पिस्तौलों की

चोरी से छावनी मे बड़ी हलचल मची, पर निकलसन ने अपने ऊपर किसी को शक नहीं होने दिया।

× × × ×

एक रात को निकलसन बालून के होटल मे बैठा हुआ एक क्रिकेट खेलने वाले नौजवान से बातचीत कर रहा था। बाते होते-होते पता चला कि वह राष्ट्रीय सेना वालों का एजंट है। पर उस दिन कोई मतलब की बात न हो सकी। जब ये लोग दूसरी बार मिले तो कुछ देर तक इधर-उधर की बाते करने के बाद असली मतलब पर आये। वह नौजवान पुलनमोर का रहने वाला था और उसने अपना नाम हडसन बतलाया है तो भी उसको भरोसा था कि उसका काम सच्चा है। दोनों ने आपस मे जरूरी शरते तय कर ली। निकलसन ने इस बात का पूरा खयाल रखा कि वह किसी तरह से धोखे मे न पड़ जाय या उसका भेद सरकारी अफसरो पर न खुल जाय।

अब की बार निकलसन का काम बहुत खतरनाक था। उसको दोनो तरफ जासूसी करनी थी। पर इस काम मे फायदा खूब था और दोनो तरफ से इनाम मिलने की उम्मेद थी। वह यह भी समझता था कि अगर मैंने किसी के साथ दग़ाबाजी की तो फिर जान नही बच सकती। सब बातों पर अच्छी तरह गैार करके अखीर मे उसने इस काम को करने का पक्का इरादा कर लिया। वह एक तरफ की सुनी हुई बातों मे से जितना हिस्सा मुनासिब समझता था दूसरी तरफ वालों को सुना देता था। राष्ट्रीय सेना वाले भी उसकी तरफ से बहुत चौकन्ने रहते थे और एकाएक उसकी बात पर एतबार नहीं करते थे।

उसने पहली बार राष्ट्रीय सेना वालो को जो खबर दी वह बड़े काम की थी। पर उन लोगों ने बिना जॉच किये उस पर अमल करना मुनासिब न समझा। बाद मे पता लगा कि वह खबर दरअसल ठीक थी। इससे उनको निकलसन पर कुछ भरोसा हुआ और उन्होंने तय किया कि अब वह जो खबर

दे उससे फायदा उठाने की कोशिश की जाय। पर बहुत दिनों तक ऐसा कोई मौका हाथ न लगा।

एक दिन शाम के वक्त कप्तान निकलसन पुलनमोर मे हडसन के एक साथी से मिला। उसने बतलाया कि "कल सवेरे सात बजे की गाडी से सरकारी फौज के लिये बहुत सी पिस्तौले और कारतूस आ रहे हैं। वे तीन बक्सों मे भरे हुये हैं और उनके ऊपर 'लोहे का सामान' का लेबिल लगा है। ये बक्स कस्बे के एक मशहूर सौदागर के पते से आने वाले थे। सब से ज्यादा ताज्जुब की बात यह थी कि उन पर पहरे का कोई इन्तजाम न था। पर ज्योंही गाड़ी स्टेशन पर पहुँचेगी पुलनमोर की फौज के सिपाही उनको अपने कब्जे मे ले लेंगे।" हडसन के साथी की उत्सुकता और जाने की जल्दी को देख कर उसने समझ लिया कि कल पुलनमोर के स्टेशन पर ज़रूर ही कोई मज़ेदार मामला होगा।

इस तरह विचार करता हुआ वह अपनी छावनी में पहुँचा। वहाँ उसने जासूसी महकमे के अफसर को खबर दी कि उसे कुछ लोगों की बातचीत से ऐसा मालूम हुआ है कि राष्ट्रीय सेना वाले कल या जल्दी ही कोई 'बड़ा काम' करने वाले हैं। वह 'बड़ा काम' क्या होगा यह उसने उन लोगों की समझ पर छोड़ दिया। इस खबर को पाकर उस रात को छावनी में बड़ी तैयारियाँ होती रही और लोग उत्सुकतापूर्वक दूसरे दिन की राह देखने लगे।

उधर रात के एक बजे राष्ट्रीय सेना का सेनापति, फोयले और दूसरे खास-खास काम करने वाले एक छुपी हुई जगह में बैठे हुये इस बात पर बहस कर रहे थे कि उन हथियारों को कैसे लूटा जावे। उनको पिस्तौलों और कारतूसों की बडी सख्त ज़रूरत थी और उनका पक्का इरादा था कि कैसे भी ख़तरे का सामना क्यों न करना पड़े, इस मौके को हाथ से नहीं जाने देना चाहिये।

पुलनमोर के स्टेशन पर उनको लूट सकना नामुमकिन बात थी। इसलिये सिर्फ एक तरकीब यही थी कि रास्ते में गाड़ी को रोक कर हथियारों को निकाल लिया जाय। पर रेल की पटरी के आसपास हमेशा सिपाही गश्त लगाते रहते थे।

अगर उनमें से कोई भी उनको देख लेता और बन्दूक चला कर अपने साथियो को खबरदार कर देता तो पद्रह मिनट के भीतर तमाम रास्ते रोक दिये जा सकते थे। इसके सिवा और भी कितने ही सवाल थे, जैसे गाड़ी को कहाँ रोका जाय, हथियारों को किस तरह लाया जाय, गाडी को रोकने वाले किस तरह वापस आवे। सब लोगों की राय थी कि बिना मोटर के हथियार नहीं लाये जा सकते और गाड़ी रोकने वालो की हिफाजत का कोई खास इन्त-जाम करना चाहिये।

अखीर मे उन लोगो ने इस काम के करने का एक उपाय निश्चित किया। यह तय हुआ कि फोयले दस पिस्तौल वाले गोरिल्ला लेकर गाड़ी को रोकने और हथियारों को छुपाने का काम करेगा और सेनापति के ऊपर उनकी हिफाजत की जिम्मेदारी रहेगी।

रेलगाड़ी को रोकने के लिये जो मुकाम सोचा गया था वह पुलनमोर से तीन मील दूर था। उससे आधी मील के फासले पर हिन्दुस्तान से लौटे हुये एक पेशनयाफ्ता कर्नल का बंगला था। वह कर्नल पक्का राजभक्त था, अगर्चे फौजी महकमे के बड़े अफ़सरों के साथ उसका बहुत झगड़ा होता रहता था। वह एक बुड्ढा आदमी था और उसका मिजाज चिडचिड़ा था। पर राष्ट्रीय सेना वाले उसे बड़ा अच्छा आदमी समझते थे क्योंकि दो-तीन महीने पहले वे उसके घर में घुस कर बहुत से हथियार उठा ले गये थे।

उस दिन सुबह छै बजे जब कि बुड्ढा कर्नल सो रहा था, कुछ वालंटियर उसके बंगले में घुसे और चुपके से उसकी मोटर को बाहर निकाल लाये। कुछ वालटियर बगले के भीतर पहरा देने लगे कि अगर कोई-नौकर-चाकर

जग जाय तो उसको वही रोक दिया जाय। दो सरकारी सिपाही गश्त लगाते हुये रेल की पटरी के किनारे किनारे जा रहे थे। गोरिल्लाओं ने पीछे से उनको जा पकडा और हथियार छीन कर बाँध दिया। यह सब काम गाड़ी आने के आठ दस मिनट पहिले हो गया। अब फोयले और उसके दस साथी एक छुपी हुई जगह मे बैठ कर गाड़ी की राह देखने लगे। जब गाड़ी आती दिखलाई दी तो एक आदमी पटरी के बीच मे खड़ा होकर लाल झंडी हिलाने लगा। गाडी बड़ी खडखडाहट के साथ झंडी दिखलाने वाले के ठीक सामने आकर रुक गई। फौरन एक गोरिल्ला पिस्तौल लेकर इजन के ऊपर चढ़ गया और बाकी लोग पीछे के डिब्बों में हथियारो के संदूक तलाश करने लगे। सब मुसाफिरों को कह दिया गया कि वे चुपचाप बैठे रहे, किसी से कुछ नही कहा जायगा। पाँच मिनट के भीतर उन लोगो ने दूसरे सामान के नीचे से तीन बकस खींच कर निकाल लिये जो देखने मे कप्तान निकलसन के बताये मालूम पडते थे। बकस बहुत भारी थे और कुछ मुसाफिरो की मदद से उनको उठा कर मोटर मे रखा गया। उसी वक्त फोयले को बंदूक की एक आवाज सुनाई दी जो कि उसे होशियार करने के लिये उसके साथियो ने चलाई थी। वह समझ गया कि अब देर करना खतरनाक है। इधर रेलगाड़ी फिर से स्टेशन की तरफ़ चली और उधर मोटर बड़े जोर से कर्नल के बँगले की तरफ दौड़ी। बँगले के अहाते के पास पहुँच कर उन्होंने ऊपर से ही उन बकसो को भीतर की तरफ डाल दिया। मोटर उसी तेजी से चलने लगी और कुछ ही मिनटों मे पहाड़ी के नीचे पहुँच गई। उसे वही छोड़ दिया गया और वालटियर पैदल पहाड़ी के भीतर घुस गये।

कर्नल के मकान मे जो वालटियर मौजूद थे उन्होने हथियारो के बकसो को अस्तबल मे सैकड़ो मन घास के ढेर के नीचे छुपा दिया। दो दिन तक वे बकस वही रखे रहे और तब थोड़ा थोड़ा करके उनमे रखे हथियारों को राष्ट्रीय सेना के भडार मे पहुँचा दिया गया।

सेनापति ने फोयले और उसके साथ वाले गोरिल्लाओं के लौटने का बडा अच्छा इन्तजाम किया था, जिससे वे लोग बिना किसी मुशकिल के साफ बच कर निकल गये। सड़कों के चौराहों और दूसरे खास मुकामों पर कटे हुये पेड और बिना पहियों की गाडियाँ डाल कर सरकारी सेना का रास्ता रोक दिया गया था। कई मुकामो पर राष्ट्रीय सेना के गोरिल्ला भी छुपे हुये थे जिन्होंने गोलियाँ चला कर सरकारी फौज वालों को बहुत देर तक अटका रखा।

× × × ×

उसी दिन कप्तान निकलसन किसी काम से बाहर जा रहा था। वह एक ऊँची मोटर लारी पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था कि अचानक उसकी पिस्तौल परतल्ले से निकल कर मोटर मे गिर गई। उसी समय फैर होने की आवाज आई और पिस्तौल की गोली जमीन पर खडे हुये निकलसन की छाती मे बाईं तरफ लगी। लोग उसे उठा कर छावनी के अस्पताल मे ले गये, पर उसके प्राण रास्ते मे ही निकल गये।

देशभक्ति का प्रमाण

——:o:——

बहुत से लोग इस घटना पर एतबार नही करेगे क्योकि यह किसी अखबार या सरकारी गजट मे प्रकाशित नहीं हुई। खैर, वे लोग इसे एक किस्से की तरह ही पढ ले।

× × × ×

सन् १६२१ के अप्रैल महीने मे राष्ट्रीय सेना का स्थानीय सेनापति पुलनमोर मे अचानक पकड लिया गया। वह कस्बे के एक होटल मे बैठा हुआ था कि सरकारी सेना ने उस मकान को चारो तरफ से घेर लिया। करीब दस-बारह नौजवान पकडे गये जिनमे सेनापति भी शामिल था। जब इन सब को सरकारी छावनी मे लाये तो कुछ लोगो ने सेनापति को पहचान लिया। इस बात से सरकारी अफसरो की खुशी का ठिकाना न रहा, तो भी उन्होंने इस बात को बिलकुल छुपा कर रखा। यह खबर डबलिन मे रहने वाले बडे सेनापति के पास भेजी गई और पूछा गया कि राष्ट्रीय सेना के सेनापति का क्या किया जाय? लोगो का अन्दाजा था कि सेनापति को डबलिन भेजा जायगा, जहाँ पर उसे फाँसी दी जायगी या गोली से उडा दिया जायगा।

ये सब बाते राष्ट्रीय सेना वालों को अपने एक दोस्त से, जो सरकारी फौज वालो मे मिला हुआ था, मालूम हुई। इस खबर से उनको बडा धक्का लगा, क्योकि सेनापति बडा होशियार आदमी था और सब लोग दिल से उसे प्यार करते थे। नायब सेनापति भी बहुत लायक आदमी था। पर वह ज्यादा पढा लिखा और विचारक शख्स था। वीरता मे वह किसी से कम न था और

उसमें हर एक बात को समझने की अनोखी ताकत थी। सेनापति तमाम बातों का निश्चय उसकी सलाह से ही करता था।

बडे सेनापति के पकड़े जाने से सब से ज्यादा मुशकिल नायब सेनापति के ही सामने पेश आई। अब उसकी जिम्मेदारी बहुत बढ गई। उसके लिये सब से कठिन काम उन नौजवानो को कब्जे मे रखना था जो सेनापति के पकडे जाने से अधीर हो गये थे और चाहते थे कि उसको छुड़ाने के लिये फौरन कोई भयकर साहसपूर्ण काम करना चाहिये। उस रात को जब राष्ट्रीय सेना वालों की कमेटी हुई तो सिवा नायब सेनापति के हर शख्स बिना देर लगाये कुछ न कुछ करने के पक्ष मे था। लोगो के इस जोश के सबब से नायब सेनापति को आगे का प्रोग्राम (कार्यक्रम) तय करने मे बडी मुशकिल जान पडी। उसने कहा—"हम लोग अब बड़े सेनापति के लिये कुछ नही कर सकते। जब हम लडाई कर रहे हैं तो इस तरह की घटनाओ का होना लाजिमी बात है। अगर हम जल्दी में कोई उलटा-सीधा काम कर बैठेंगे तो उससे हमारी हालत और भी खराब हो जायगी।"

वह पद्रह मिनट तक इस तरह लोगो को समझाता रहा। पर जब मामला बढने लगा और दूसरे आदमी किसी तरह चुप रहने को राजी न हुये तो कप्तान फोयले बोला—"मै समझता हूँ कि सब लोग बिना देर लगाये कोई न कोई जोरदार उपाय करना चाहते हैं। इसलिये मेरी राय मे सब को इस बारे में अपना-अपना ख्याल जाहिर करना चाहिये कि यह काम किस तरह किया जाय जिससे कामयाबी हो सके।"

नायब सेनापति ने कहा—"यह ठीक है। सब लोग अपना प्रस्ताव अलग-अलग पेश करो। सब से पहिले फोयले, तुम अपनी राय जाहिर करो।"

अब वादविवाद कुछ शान्ति के साथ होने लगा। करीब घन्टे भर तक सब अपनी-अपनी राय बतलाते रहे। इसी वक्त सरकारी छावनी से फिर उनके दोस्त ने खबर भेजी कि डबलिन से हुकम आ गया है और कल सवेरे सेनापति

को बड़े कड़े पहरे में यहाँ से भेज दिया जायगा। अब लोगों का जोश और भी बढ़ गया और सब ने पक्का इरादा कर लिया कि चाहे फायदा हो या नुकसान, पर एक बार सेनापति को छुड़ाने की कोशिश जरूर की जाय। नायब सेनापति भी लोगों के जोश के साथ बह गया।

× × ×

अब इन लोगो को तो यही पर बहस करने और हमला करने का ढग सोचने के लिये छोड़ दीजिये और पुलनमोर से बारह मील पर बसे हुये मोयवीन नामक गाँव के हवाई जहाजों के अड्डे में चल कर टामी मैमफेट से मुलाकात कीजिये। उस वक्त वह अपने दोस्तों की मण्डली मे बैठा हुआ आनन्द कर रहा था। उस दिन वहाँ महायुद्ध की किसी खास घटना की यादगार में एक जलसा किया गया था और सब लोग खा-पीकर खूब मस्त हो रहे थे।

टामी मैकफेट हवाई जहाजों का काम करने वाला कारीगर था। वह महायुद्ध में जर्मनी वालो से लडा था, और एक बार बहुत घायल हुआ था। इससे वह लड़ने के नाकाबिल हो गया और उसे हवाई जहाजो की मरम्मत का काम दिया गया। वह इस काम मे बहुत होशियार था, पर उस तोप के गोले की आवाज ने, जिससे वह घायल हुआ था, उसके दिमाग़ मे कुछ खराबी पैदा कर दी थी जिससे कभी-कभी वह सनक जाया करता था। अपने दिमाग की इस कमजोरी को दूर करने के लिये वह शराब पीने लगा और होते-होते उसकी आदत यहाँ तक बढ गई कि दिन-रात मे एक घंटा भी बिना शराब के उसका काम नहीं चल सकता।

टामो मैकफेट आयरलैण्ड का रहने वाला था और उसको आयरिश राज्यक्राति से बड़ा प्रेम था। उसने कई बार आयरिश राष्ट्रीय सेना मे भरती होने की कोशिश की। पर राष्ट्रीय सेना वालों ने कभी उसकी बातो का खयाल न किया। क्योकि वे समझते थे कि इस बातूनी और शराबी को अपने दल में

शामिल करने से क्या फायदा ? टामी मैकफेट इस बात से बड़ा नाराज होता और कहता था—"मै भी आयरलैण्ड का वैसा ही सच्चा पुत्र हूँ जैसे कि तुम लोग। मै दिल से पक्का बागी हूँ और अगर कभी मेरा दिमाग ठिकाने आ गया तो मै सरकार के ऊपर एक ऐसी जोरदार चोट जमाऊँगा कि तुम सब देखते ही रह जाओगे।"

पर उसकी इन 'बहादुरी' की बातों पर सिवा उसके शराबी दोस्तों के और कोई ध्यान नही देता था। राष्ट्रीय सेना वाले उसे एक सीधासादा पागल समझते थे और दया की निगाह से देखते थे।

टामी मैकफेट ने आज के जलसे का निमत्रण बडी ख़ुशी के साथ मंजूर किया था, क्योंकि वहाँ पर मनमानी शराब मिलने का मौका था। पर एक बड़े ताज्जुब की बात यह थी कि उस दिन वह एक समझदार आदमी की तरह बातचीत कर रहा था। उसकी आँखो मे एक खास तरह की चमक मालूम देती थी और वह अपने दाँतों 'को बार-बार इस तरह पीस रहा था जिससे मालूम होता था कि उसने किसी काम के करने का पक्का इरादा कर लिया है। आज टामी हर एक बात का जवाब ऐसी सावधानी और शाति से दे रहा था जैसा कि उसने बरसों से नही किया था। पर उसके इस बदलाव की तरफ किसी ने ज्यादा ध्यान नही दिया, क्योंकि सब लोग खुशी मनाने, शराब पीने या सोने मे लगे हुये थे।

टामी किसी बात का इन्तजार करता मालूम होता था। अब सुबह के छः बजने वाले थे। सोने वाले जग रहे थे और रात भर जलसे मे जागने वाले सोने की तैयारी कर रहे थे। इतने मे उस जहाजी अड्डे के दो बड़े अफसर चार्ल्स मैडफाक्स और जान समिट बाहर आये। दोनों अफसर खुश दिखलाई देते थे और उनके चेहरे से साफ मालूम पड़ता था कि उन्होंने रात को खूब शराब उड़ाई है। अफसरों ने टामी और दूसरे तीन-चार आदमियों को अपने पास आने का इशारा किया। चार्ल्स ने टामी से कहा—"तुम लोग जल्दी से